शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
कलरव
4
निःशुल्क वितरण हेतु
2018-2019

कलरव कक्षा - 4

E-BOOKS DEVELOPED BY

1. Dr.Sanjay Sinha Director SCERT,U.P,Lucknow
2. Ajay Kumar Singh J.D.SSA,SCERT,Lucknow
3. Alpa Nigam (H.T) Primary Model School, Tilauli Sardarnagar,Gorakhpur
4. Amit Sharma (A.T) U.P.S, Mahatwani ,Nawabganj, Unnao
5. Anita Vishwakarma (A.T) Primary School ,Saidpur,Pilibhit
6. Anubhav Yadav (A.T) P.S.Gulariya,Hilauli,Unnao
7. Anupam Choudhary (A.T) P.S,Naurangabad,Sahaswan,Budaun
8. Ashutosh Anand Awasthi (A.T) U.P.S,Miyanganj,Barabanki
9. Deepak Kushwaha (A.T) U.P.S,Gazaffarnagar,Hasanganz,unnao
10. Firoz Khan (A.T) P.S,Chidawak,Gulaothi,Bulandshahr
11. Gaurav Singh (A.T) U.P.S,Fatehpur Mathia,Haswa,Fatehpur
12. Hritik Verma (A.T) P.S.Sangramkheda,Hilauli,Unnao
13. Maneesh Pratap Singh (A.T) P.S.Premnagar,Fatehpur
14. Nitin Kumar Pandey (A.T) P.S, Madhyanagar, Gilaula , Shravasti
15. Pranesh Bhushan Mishra (A.T) U.P.S,Patha,Mahroni Lalitpur
16. Prashant Chaudhary (A.T) P.S.Rawana,Jalilpur,Bijnor
17. Rajeev Kumar Sahu (A.T) U.P.S.Saraigokul, Dhanpatganz ,Sultanpur
18. Shashi Kumar (A.T) P.S.Lachchhikheda,Akohari, Hilauli,Unnao
19. Shivali Gupta (A.T) U.P.S,Dhaulri,Jani,Meerut
20. Varunesh Mishra (A.T) P.S.Gulalpur Pratappur Kamaicha Sultanpur

1- हे जग के स्वामी !

चमक रहा है तेज तुम्हारा,

बन कर लाल सूर्य-मंडल,

फैल रही है कीर्ति तुम्हारी,

बन करके चाँदनी धवल।

चमक रहे हैं लाखों तारे,

बन तेरा शृंगार अमल,

चमक रही है किरण तुम्हारी,

चमक रहे हैं सब जल-थल।

हे जग के प्रकाश के स्वामी!

जब सब जग दमका देना,

मेरे भी जीवन के पथ पर,

कुछ किरणें चमका देना।

- सोहन लाल द्विवेदी

उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले के बिंदकी नामक कस्बे में जन्मे कवि सोहन लाल द्विवेदी (*सन्* 1906 - *सन्* 1988 *ई.*) *की कविताओं में राष्ट्र-प्रेम तथा राष्ट्रीय जागरण का स्वर मुखर है। 'दूधबतासा' तथा 'शिशु-भारती' इनके प्रसिद्ध बालगीतो के संग्रह हैं।*

अभ्यास

शब्दार्थ-

तेज = *प्रकाश सूर्य-मंडल* = *सूर्य के चारों ओर का*

धवल = *श्वेत*, *सफेद लाल घेरा*

कीर्ति = *यश अमल* = *निर्मल*, *स्वच्छ*

थल = *स्थल*, *भूमि का भाग दमका देना* = *प्रकाशित कर देना*

1. *बोध प्रश्न*: *उत्तर लिखिए* -

(*क*) *कविता में प्रकाश के स्वामी से क्या प्रार्थना की गई है* ?

(*ख*) *ईश्वर को जग के प्रकाश का स्वामी क्यों कहा गया है* ?

(*ग*) *कविता के आधार पर ईश्वर की महिमा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।*

2. *कविता की पंक्तियों को सही क्रम में लिखिए* -

बन तेरा शृंगार अमल, ...

चमक रहे हैं सब जल-थल। ....

चमक रही है किरण तुम्हारी, ...

चमक रहे हैं लाखों तारे, ...

बन करके चाँदनी धवल। ....

फैल रही है कीर्ति तुम्हारी ....

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

हे जग के प्रकाश के स्वामी! ......

जब सब जग दमका देना, ...

मेरे भी जीवन के पथ पर, ...

कुछ किरणें चमका देना। ....

4. सोच-विचार: बताइए -

(क) हमें प्रकाश किन-किन चीजों से मिलता है ?

(ख) प्रकृति के किन-किन रूपों को देखकर ईश्वर की याद आती है ?

5. भाषा के रंग -

(क) जिन शब्दों के अर्थ समान होते हैं, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं। नीचे लिखे शब्दों में से 'जल' और 'सूर्य' के पर्यायवाची शब्दों को चुनकर लिखिए-

(रवि, नीर, वारि, भानु, अंबु, भास्कर, पानी, दिनकर)

जल ....

सूर्य ....

(ख) *कविता में 'जल-थल' और 'जब-सब' जैसे समान ध्वनि वाले शब्द आए हैं। इस तरह के शब्दों को तुकांत शब्द कहते हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के तीन-तीन तुकांत शब्द लिखिए -*

लाल ....

तेरा ....

चमक ....

6. *आपकी कलम से -*

प्रातःकाल चुपचाप थोड़ी देर बाग-बगीचे, खेत-खलिहान में खड़े होकर आस-पास के दृश्यों को देखिए, ध्वनियों को सुनिए और अनुभवों को अपनी कॉपी में लिखिए।

7. *अब करने की बारी -*

पुस्तकालय की सहायता से प्रातःकाल वर्णन की सरल कविताओं का संकलन कीजिए तथा इन्हें गाने का अभ्यास करके प्रार्थना स्थल पर समूहगान कीजिए।

8. *मेरे दो प्रश्न: कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए -*

9. *इस कविता से -*

(क) *मैंने सीखा* ....

(ख) *मैं करूँगी/करूँगा* ....

2- प्यासी मैंना

एक थी मैंना । वह नीम के खोखल में रहती थी । नीम का पेड़ बगीचे में था । बगीचे में नल लगा था ।मैंना रोज बगीचे में दाना चुगने और नल के पास पानी पीती थी । एक दिन बड़ी गरमी थी ।मैंना को जोर की प्यास लगी ।मैंना उड़कर नल के पास गयी और चोंच आगे बढ़ाई ,लेकिन नल के पास तो सूखा पड़ा था ।निराश होकर मैंना वहाँ से उड़ी और आम के पेड़ पर जाकर बैठ गई। वहां उसे एक तोता मिला । मैंना ने पूछा - "भाई , मुझे बड़ी जोर की प्यास लगी है ,पानी कहाँ मिलेगा ?"

तोता बोला -"पास की जामुन के पेड़ के नीचे घडा रखा है । चलो , वहीं चलकर पानी पीते हैं । मैंना और तोता उड़कर जामुन के पेड़ के नीचे घड़ा तो था लेकिन वह भी खाली था ।

मैंना और तोते ने जामुन के पेड़ पर एक कबूतर देखा। मैंना ने कबूतर से पूछा-"भाई, पीने के लिए पानी कहाँ मिलेगा?" कबूतर ने कहा - "वह लाल ईंटों वाला मकान है न, उसके आँगन में रोज एक आदमी कपड़े धोता है। फर्श की दरारों में पानी जमा हो जाता है। चलो वहाँ चलकर पानी पीते हैं।"

मैंना, तोता और कबूतर तीनों साथ-साथ उड़ते हुए लाल ईंटों वाले मकान के आँगन में जा पहुँचे लेकिन कपड़े धोने वाला जा चुका था। फर्श की दरारों में जमा पानी भी सूख गया था।

तोता परेशान होकर बोला - "अब क्या करें?" मैना बोली - "मुझे तो जोर की प्यास लगी है।" कबूतर बोला - "चलो कहीं पानी ढूँढ़ते हैं।" मैना, तोता और कबूतर तीनों साथ-साथ उड़ चले। कुछ देर बाद वे एक पीपल के पेड़ पर उतरे। वहाँ बहुत सारी गौरैया बैठी थीं। वह सब खूब मजे से चहक रही थीं-चिरर चरर चिर्र र्र र्र। कबूतर गौरैया के पास जाकर बोला - "गुटर गूँ, गुटर गूँ, अरे गौरैया! क्या बात है तुम लोग बहुत खुश हो?" गौरैया ने बताया - "हम सब अभी-अभी नहा कर आए हैं।" मैना अचरज से बोली "नहाकर! तुम्हें नहाने के लिए पानी कहाँ से मिला? हमको तो पीने तक को नहीं मिल रहा।"

गौरैया ने कहा - "आओ मेरे साथ।" सभी उड़ते हुए एक मकान के आँगन में पहुँचे। आँगन में बहुत से गमलों में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। आस-पास बहुत से हरे-भरे पौधे भी उगे हुए थे। पौधों की छाया में एक बड़ा-सा मिट्टी का कुंडा पानी से भरा हुआ रखा था।

तोता उत्साह में बोला - "अरे देखो! उस कुंडे में पानी है। वहाँ हुदहुद पानी पी रहा है।" कबूतर ने कहा - "अरे वाह! वहाँ तो एक गिलहरी भी है।"

मैना ने पूछा - "यह कुंडा यहाँ किसने रखा है?" गौरैया ने बताया - "कुंडे को एक छोटी सी लड़की ने रखा है। वही इसमें रोज पानी भर देती है।"

मैना, तोता, कबूतर तीनों उड़कर कुंडे के किनारे जा बैठे और जी भर कर पानी पिया।

अभ्यास

शब्दार्थ-

खोखल = पेड़ के तने का खोखला भाग

अचरज = आश्चर्य

फर्श = जमीन

भूमि कुंडा = नाद या मटका

दरार = चटकी हुई जगह

जोश = उत्साह

बगीचा = छोटा बाग, बाग़ीचा

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) मैना क्यों परेशान थी ?

(ख) पानी के लिए तोता मैना को लेकर कहाँ गया और क्या हुआ ?

(ग) कबूतर ने गुटर गूँ, गुटर गूँ करके गौरैया से क्या पूछा ?

(घ) मैना को गौरैया की किस बात पर आश्चर्य हुआ ?

(ङ) कुंडे के पास पहुँचकर गौरैया ने मैना को क्या बताया ?

2. कहानी के आधार पर तेजी से बोलिए और खाली जगह में लिखिए -

प्यासी पक्षी थी ....।रहती थी नीम के .... में। नीम था ....में। रोज पानी पीती थी .... से। नल लगा था .... में। लेकिन नल .... था। मैना पहुँची .... के पास। तोता ले गया .... के पेड़ पर। वहाँ का गड्ढा भी .... था। मैना और तोता गए .... के

पास।

3. सोच-विचार: बताइए -

(क) लड़की रोज कुंडे में पानी क्यों भरती थी ?

(ख) जीवन के लिए पानी क्यों जरूरी है ?

(ग) हमें पानी कहाँ-कहाँ से मिलता है ?

(घ) हम किन-किन तरीकों से पानी की बरबादी को कम कर सकते हैं ?

4. अनुमान और कल्पना: बताइए -

(क) क्या होता यदि पक्षियों को गौरैया के बताए कुंड में भी पानी नहीं मिलता ?

(ख) छोटी-सी लड़की कुंडे में रोज पानी रखती थी। जिसमें पक्षी आ-आकर अपनी प्यास बुझाते थे। तुम पशु-पक्षियों के लिए क्या-क्या कर सकते हो ?

5. भाषा के रंग -

(क) तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए -

aपानी - ....

पक्षी - ....

फूल - ....

(ख) नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों को उपयुक्त विशेषण शब्दों के साथ लिखिए।

जैसे-सूखा नल, सूखी लकड़ी, सूखे पेड़ -

नल, तालाब, नदी, कपड़े, खेत, पेड़, रोटी, लकड़ी, कुँआ, घड़ा, नहर, फसलें, तिनके,

पत्ते, डाल

(ग) ऐसे वाक्य की रचना कीजिए -

(क) जिसमें योजक चिह्न (-) का प्रयोग हुआ हो।

(ख) जिसमें प्रश्नवाचक चिह्न (?) का प्रयोग हुआ हो।

(ग) जिसमें अल्प विराम चिह्न (,) का प्रयोग हुआ हो।

(ङ) जिसमें विस्मयादि बोधक चिह्न (!) का प्रयोग हुआ हो।

यह भी जानिए -

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहते हैं।

जैसे: पेड़ - वृक्ष, तरु, पादप

यह भी जानिए -

सुंदर फूल / सुंदर मकान / सुंदर बालक इन तीनों उदाहरणों में सुंदर शब्द क्रमशः फूल, मकान, और बालक की विशेषता (सुंदरता) बता रहा है। अतः सुंदर शब्द विशेषण शब्द है। संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' शब्द कहते हैं।

यह भी जानिए -

विराम-चिह्न: विराम का अर्थ होता है - रुकना, विश्राम लेना। बातचीत के दौरान अभिप्राय को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में रुकना पड़ता है। लिखते समय इन विरामों को दिखाने के लिए हम कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं। ये ही विराम-चिह्न कहलाते हैं। कुछ विराम-चिह्न इस प्रकार हैं -

विराम–चिह्न	प्रयोग कहाँ	उदाहरण
अल्प विराम (,)	वाक्य में सबसे कम रुकने के लिए तथा दो से अधिक समान पदों, पदबंधों, वाक्यों को अलग करने के लिए	राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न दरबार में पधारे। केला, सेब, अनार, अमरूद, बेर फल हैं।
पूर्ण विराम (।)	वाक्य पूरा होने पर अंत में	मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ।
प्रश्नवाचक (?)	वाक्य के अंत में जिनमें प्रश्न सूचित हो	तुम्हारा कमरा कहाँ है ?
विस्मयबोधक (!)	वाक्य के अंत में खुशी, घृणा, दुःख या हैरानी प्रकट करने के लिए	अरे ! वह आगरा नहीं गया।
योजक चिह्न (–)	दो शब्दों के बीच उन्हें जोड़ने के लिए	आज–कल वह घर नहीं आता।
इकहरा अवतरण चिह्न (' ')	किसी विशेष शब्द या पद को उद्धृत करने के लिए उनके ऊपर	महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की।
दोहरा अवतरण चिह्न (" ")	किसी के कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत करने के लिए शुरू और अंत में	स्वामीनाथ बोला – "दादी, मुझे आपसे एक बात कहनी है।"
निर्देश चिह्न (—)	संवाद में नाम के बाद	कृष्ण – "माँ, मैं गाय चराने जाऊँगा।"

6. ***आपकी कलम से*** -

पाठ में आए चित्र-2 ***को देखिए और लिखिए*** -

(***क***) ***चित्र में कौन क्या-क्या कर रहा है*** ?

(***ख***) ***क्या-क्या बातें हो रही होंगी - गिलहरी और हुदहुद में***, ***तोते और मैना में***।

(***ग***) ***चित्र के आधार पर अपने साथियों से पूछने के लिए कुछ सवाल बनाइए***।

7. ***अब करने की बारी*** -

(***क***) ***पोस्टर बनाइए*** - ***जल ही जीवन है***।

(***ख***) ***छत पर***, ***दरवाजे पर अथवा आँगन में किसी बरतन में रोज दाना-पानी रखें***।

(***ग***) ***घोंसले बनाकर आँगन में या किसी पेड़ पर टाँग दें***।

8. ***मेरे दो प्रश्न***: ***पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए*** -

9. ***इस कहानी से*** -

(***क***) ***मैंने सीखा*** ....

(***ख***) ***मैं करूँगी***/***करूँगा*** ....

यह भी जानिए -

भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम - भारतीय वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम, 1972 भारत सरकार ने सन् 1972 ई. में पारित किया है। यह अधिनियम जंगली जानवरों, पक्षियों और पौधों को संरक्षण प्रदान करता है।

भारत के बर्डमैन-पद्मविभूषण सलीम मुईनुद्दीन अब्दुल अली (12 नवंबर, 1896-27 जुलाई, 1987) देश के पहले ऐसे पक्षी विज्ञानी थे, जिन्होंने पक्षियों का सर्वेक्षण करके लेख व किताबें लिखीं।

3-जब मैं पढ़ता था

मेरे पिता करमचंद गांधी राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे सदा न्याय करते थे।

मेरी माता जी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा-पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थीं।

2 अक्टूबर सन् 1869 को पोरबंदर में मेरा जन्म हुआ। पोरबंदर से पिता जी जब राजकोट गए तब मेरी उम्र सात वर्ष की रही होगी। पाठशाला से फिर ऊपर स्कूल मे और वहाँ से हाईस्कूल में गया। मुझे यह याद नहीं है कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो। मैं बहुत संकोची था। एक बार पिता जी 'श्रवण-पितृभक्ति' नामक पुस्तक खरीद कर लाए। मैंने उसे बहुत शौक से पढ़ा। उन दिनो बाइस्कोप में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अंधे माता-पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैंने मन ही मन तय किया कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।

मैंने 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक भी देखा था। बार-बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चंद्र के सपने आते। बार-बार मेरे मन में यह बात उठती थी कि सभी हरिश्चंद्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें? यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चंद्र की भाँति कष्ट उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं,

यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैंड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया परंतु पके घड़े पर कही मिट्टी चढ़ सकती है?

सुलेख शिक्षा का एक जरूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

अपने आचरण की तरफ मैं बहुत ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो, जिसके लिए शिक्षक मुझे दंड दे, तो यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुःख न था, पर मैं दंड का पात्र समझा गया, इस बात का बहुत दुःख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। उस समय हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे, फिर भी वे विद्यार्थियों के लिए प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम लेते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिए थे। मेरा मन इन चीजों में न लगता था। अनिवार्य होने से पहले मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फुटबाल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में मेरा संकोची स्वभाव भी कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति अरुचि मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में गलत विचार घर किए हुए था कि व्यायाम का शिक्षण के साथ कोई संबंध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ-साथ व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है।

व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था- पिता जी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बंद होते ही घर जाकर उनकी सेवा में लग जाता। व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न पड़ने लगा। मैंने पिता जी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थना पत्र दिया पर हेडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे।

एक शनिवार को स्कूल सबेरे का था। शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे, इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी, बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना और मुझे एक या दो आना, ठीक याद नहीं कितना दंड देना पड़ा।

'बापू' और 'राष्ट्रपिता' के नाम से पुकारे जाने वाले महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ। इनकी दृष्टि में सभी मनुष्य एक परमात्मा की सन्तान हैं और बराबर हैं। बापू ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच या धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को व्यर्थ बताया।

मैं झूठा बना। मुझे भारी दुःख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ यह कैसे सिद्ध करूँ। कोई उपाय नहीं था। मैं मन मारकर रह गया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।

-

मोहनदास करमचंद गांधी

'बापू' और 'राष्ट्रपिता' के नाम से पुकारे जाने वाले महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र स्वतंत्र हुआ ।इनकी दृष्टी में सभी मनुष्य एक परमात्मा की संतान हैं और बराबर हैं ।बापू ने जाति-पाति,ऊँच-नीच या धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को व्यर्थ बताया ।

अभ्यास

शब्दार्थ-

अप्रसन्न = नाराज

असह्य = जो सहन करने योग्य न हो

सत्यवादी = सत्य बोलने वाला

गर्व = अभिमान

अनिवार्य = जो टाला न जा सके

अरुचि = रुचि न होना

बहँगी = काँवर

बाइस्कोप = तस्वीर दिखाने का एक यंत्र

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) गांधी जी ने 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक देखकर क्या निश्चय किया ?

(ख) सैर करने की आदत से गांधी जी को क्या लाभ हुआ?

(ग) गांधी जी के सुंदर लिखावट के बारे में क्या विचार थे ?

(घ) इस पाठ से गांधी जी के व्यक्तित्व के किन-किन गुणों का पता चलता है?

2. सोच-विचार: बताइए -

इन बातों के संबंध में आपके क्या विचार हैं -

(क) सुंदर लिखावट (ख) प्रातःकाल भ्रमण

(ग) खेलना और व्यायाम (घ) सत्य बोलना

3. भाषा के रंग -

(क) 'धर्म' शब्द में 'इक' लगाने पर 'धार्मिक' बनता है। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में 'इक' लगाकर नए शब्द बनाइए -

मास ....

पक्ष ....

वर्ष ....

सप्ताह ....

(ख) शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -

सावधान ....

पूर्ण ....

रुचि ....

न्याय ....

प्रसन्न ....

सभ्य ....

(ग) निम्नलिखित वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए -

वाक्यांश एक शब्द

(क) जो पिता का भक्त हो - पितृभक्त

(ख) जो सत्य बोलता हो - ....

(ग) जिसे सत्य प्यारा हो - ....

(घ) सत्य के लिए आग्रह - ....

(घ) नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए -

अनुसाशन ....

हरीशचंद्र ....

धार्मीक ....

शुलेख ....

शाहसी ....

लभकारी ....

शब्दों के बाद जो अक्षर या अक्षर समूह लगाया जाता है उसे 'प्रत्यय' कहते हैं। 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द का पहला स्वर दीर्घ हो जाता है

किसी शब्द के पूर्व में जुड़ने वाले शब्दांश को 'उपसर्ग' कहते हैं। जो विशेष अर्थ प्रकट करते हैं। जैसे -

अप+मान = अपमान

अ+सफल = असफल

कुछ शब्दों के पहले 'अ' उपसर्ग जोड़ देने पर बनने वाला शब्द उसका विलोम शब्द

बन जाता है।

इसे कहते हैं - वाक्यांश के लिए एक शब्द।

(ङ) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली

(च) प्रातःकाल व्यायाम करना चाहिए।

इस वाक्य में प्रातःकाल और व्यायाम शब्दों का एक साथ प्रयोग हुआ है। ऐसे दो वाक्य और बनाइए जिनमें इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग हो।

4. आपकी कलम से -

- अपनी पसंद के व्यक्ति के बारे में कुछ बातें लिखिए कि तुम्हें वह क्यों पसंद हैं?
- तुम बड़े होकर किसके जैसा बनना चाहोगे और क्यों?

5. अब करने की बारी -

(क) गांधी जी के जीवन से संबंधित तस्वीरें इकट्ठा करके एलबम बनाइए।

(ख) गांधी जी की प्रिय रामधुन 'रघुपति राघव राजाराम' याद करके विद्यालय की बाल सभा/गांधी जयंती पर सुनाइए।

(ग) पत्र-पत्रिकाओं से गांधी जी के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग चुनकर संग्रह कीजिए।

6. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

7. इस पाठ से -

(क) ***मैंने सीखा*** ....

(ख) ***मैं करूँगी/करूँगा*** ....

4-बोलने वाली गुफा

सुंदरवन में एक खूँखार शेर रहता था। वह वन के सभी जीवों के लिए मुसीबत था। जंगल के जानवर उससे इतना डरते थे कि उसकी दहाड़ सुनते ही अपने-अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर छिप जाते थे। कभी-कभी तो उस शेर को इसी कारण से भूखा भी रहना पड़ता था।

एक बार शेर को कई दिनों तक कोई शिकार हाथ न लगा। वह शिकार की खोज में इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा। बहुत परिश्रम के बाद भी उसे शिकार के लिए कोई जानवर न दिखाई दिया। उसे ऐसा लगने लगा कि वह भूख से मर जाएगा। शेर शिकार की खोज में अपनी गुफा से बहुत दूर निकल आया, अचानक उसने देखा कि सामने एक बड़ी-सी गुफा है जिसका द्वार खुला हुआ है। गुफा देखकर शेर के मन में विचार आया कि जरूर इस गुफा में कोई न कोई जानवर रहता होगा। इसके भीतर चल कर देखना चाहिए, हो सकता है कि कोई शिकार अंदर बैठा हो। यह सोचकर शेर गुफा के अंदर चला गया लेकिन इस समय गुफा में कोई न था। शेर ने सोचा, ''मुझे इसके भीतर चुपचाप लेटे रहना चाहिए। अँधेरा होने पर गुफा में रहने वाला जानवर अवश्य ही आएगा, तब मैं उसका शिकार करके अपनी भूख मिटा लूँगा।''

कुछ समय बाद अँधेरा होने लगा। रात में सारा जंगल चाँदनी में नहाया हुआ था।

चंद्रमा के प्रकाश में सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे रहा था।

जिस गुफा में शेर घुसा था, वह एक लोमड़ी की थी। लोमड़ी अन्य जानवरों की अपेक्षा तीव्र बुद्धि की मानी जाती है। रात होने पर लोमड़ी अपनी गुफा की ओर लौट रही थी। वह शीतल चाँदनी का आनंद लेते हुए धीरे-धीरे चल रही थी। अचानक उसकी दृष्टि धरती पर बने हुए कुछ पद-चिह्नों पर पड़ी। ध्यानपूर्वक देखकर उसने जान लिया कि यह पद-चिह्न किसी शेर के हैं।

शेर के पद-चिह्नों को देखते हुए लोमड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ी। ऐसा करने में उसे समय अवश्य लगा लेकिन उसने यह देख लिया कि शेर के पैरों के निशान उसकी गुफा के भीतर गए हैं। उसे आभास हो गया कि उसकी गुफा में शेर बैठा है क्योंकि गुफा में शेर के पंजों के जाने के निशान तो थे लेकिन बाहर निकलने के निशान कही भी नहीं उभरे थे।

लोमड़ी ने ठंडे दिमाग से सोचा और शेर के पंजों के निशानों की पुनः बारीकी से छान-बीन की लेकिन शेर के गुफा से बाहर आने के निशान उसे न मिल सके। उसे विश्वास हो गया कि शेर अभी तक गुफा के अंदर ही है जो कि अंदर जाते ही उस पर हमला कर देगा।

शेर अंदर है या नहीं, इसको पक्के तौर पर जानने के लिए लोमड़ी ने एक योजना बनाई। वह गुफा की तरफ मुँह करके ऊँची आवाज में बोली - "कहिए गुफा जी! सब ठीक-ठाक तो है न ? क्या मैं रात बिताने के लिए आपके भीतर आ सकती हूँ ?"

शेर गुफा के अंदर ही था लेकिन वह चुप रहा। वह लोमड़ी के भीतर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। लोमड़ी ने एक बार पुनः प्रश्न को दोहराया - "गुफा ओ मेरी प्यारी गुफा! आज आप चुप क्यों हो? मुझे बताती क्यों नहीं कि मैं भीतर आऊँ या कि न आऊँ ? पहले तो कभी भी आप इस तरह शांत न रहती थीं। एक बार के पूछने में ही आप

उत्तर दे देती थीं। आज आपको क्या हो गया है? जब तक आप मुझे अंदर आने के लिए न कहोगी तब तक मैं भीतर नहीं आऊँगी।"

लोमड़ी की बातों को सुन कर शेर असमंजस में पड़ गया। वह यह नहीं सोच पा रहा था कि अब क्या करे? वह चुपचाप अंदर ही बैठा रहा। लोमड़ी ने दोबारा गुफा से दूसरे तरीके से बात करने की सोची। इस बार उसने कहा-

"मेरी प्यारी गुफा! आपके चुप रहने का रहस्य मैं जान रही हूँ। आज भीतर अवश्य ही कोई खूँखार जानवर बैठा है, जिसके कारण आप मुझसे बात नहीं कर रही हो। अच्छा तो मैं चलती हूँ।"

शेर को लगा कि शिकार हाथ से निकल रहा है। उसने सोचा कि जरूर यह गुफा लोमड़ी से बात करती होगी। मेरे डर के मारे गुफा आज लोमड़ी से बात नहीं कर रही है। चलो गुफा की तरफ से मैं ही बोलता हूँ। यह सोचकर शेर आवाज बदलकर बोला - "अरे, जरा रुको प्यारी लोमड़ी! मैं गहरी नींद में सो रही थी, इसलिए आपसे बात न कर सकी। अंदर सब ठीक है। आप बिना भय और संदेह के अंदर चली आओ।"

लोमड़ी की चाल सफल हुई। वह पहचान गई कि गुफा के अंदर से आने वाली आवाज शेर की ही है। उसे पूरा विश्वास हो गया कि शेर अभी तक गुफा के भीतर ही बैठा है।

"जैसे एक शेर कभी घास नहीं खाता, उसी तरह गुफा कभी बोल नहीं सकती हुजूर! आप आराम से रात भर मेरी गुफा में रहें। शुभ रात्रि।" यह कहकर लोमड़ी अपने प्राण बचाने के लिए सिर पर पाँव रखकर वहाँ से भाग निकली।

अभ्यास

शब्दार्थ-

असमंजस = दुविधा

खूँखार = *हिंसक*

अंदाज = *हाव-भाव/ढंग*

तीव्र = *तेज*

1. *बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए* -

(*क*) *जंगल के सभी जानवर शेर से क्यों डरते थे* ?

(*ख*) *गुफा को देखकर शेर के मन में क्या विचार आया* ?

(*ग*) *लोमड़ी को कैसे पता चला कि गुफा के अंदर कोई है* ?

(*घ*) *लोमड़ी ने गुफा से क्या पूछा और क्यों पूछा* ?

(*ङ*) *गुफा के भीतर से क्या आवाज आई* ?

2. *सही मिलान कीजिए* -

(*क*) *गुफा, ओ मेरी प्यारी गुफा! आज आप चुप क्यों हैं* ? .... *शेर*

(*ख*) *अंदर सब ठीक है। आप बिना भय और संदेह के अंदर चली आओ* .... *लोमड़ी*

(*ग*) *कहिए गुफा जी! सब ठीक ठाक तो है न* ? .... *शेर*

(*घ*) *मैं गहरी नींद में सो रही थी इसलिए आपसे बात न कर सकी।* .... *लोमड़ी*

3. *वाक्यों को कहानी के क्रम में लिखिए* -

(*क*) *उसे पूरा विश्वास हो गया कि शेर अभी तक गुफा के भीतर ही है।*

(*ख*) *लोमड़ी ने गुफा से पूछा* - "*ओ मेरी प्यारी गुफा! आज आप चुप क्यों हो* ? *मुझे बताती क्यों नहीं कि मैं भीतर आऊँ या न आऊँ।*"

(ग) लौटने पर लोमड़ी की दृष्टि गुफा के बाहर बने कुछ पद-चिह्नों पर पड़ी। उसे लगा कि गुफा में कोई है।

(घ) सुंदरवन में एक खूँखार शेर रहता था।

(ङ) शेर शिकार की खोज में अपनी गुफा से बाहर निकला।

(च) बहुत दूर निकल आने पर शेर को एक खाली गुफा दिखी और वह उस गुफा के अंदर चला गया।

(छ) गुफा के अंदर से आवाज आयी-"अंदर सब ठीक है, चली आओ।"

(ज) आप आराम से रात भर मेरी गुफा में रहें।

4. सोच-विचार: बताइए -

(क) यदि लोमड़ी को शेर के पद-चिह्न न दिखते तो क्या होता ?

(ख) यदि लोमड़ी के स्थान पर आप होते तो कैसे पता लगाते कि गुफा में शेर है ?

(ग) यदि शेर गुफा की ओर से लोमड़ी की बात का जवाब नहीं देता तो लोमड़ी शेर के बारे में पता करने के लिए और क्या-क्या करती ?

5. भाषा के रंग -

(क) समानार्थी शब्द लिखिए -

मुँह - ....

चंद्रमा - ....

वन - ....

अंदर - ....

धरती - ....

तलाश - ....

(*ख*) *पाठ में आए हुए अनुस्वार* (ं) *और अनुनासिक* (ँ) *शब्दों को छाँटकर लिखिए-*

अनुस्वार शब्द - जंगल, ..., ..., ...,

अनुनासिक शब्द - मुँह, ..., ..., ...,

(*ग*) *विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए -*

एक वन में खूँखार शेर रहता था। उससे डर कर जंगली जानवर छिप जाते थे। शिकार की तलाश में उसे एक खूबसूरत गुफा दिखी और वह उसमें जा बैठा। चालाक लोमड़ी ने शेर के पद-चिह्न देख लिए।

6. *अनुमान और कल्पना: बताइए -*

लोमड़ी ने इस घटना के बारे में अपने साथियों को क्या-क्या बताया होगा ?

'पर्यायवाची' शब्द को 'समानार्थी' शब्द भी कहते हैं।

7. *अब करने की बारी -*

(*क*) *लोमड़ी गुफा से वापस लौट रही थी तो उसे रास्ते में उसका दोस्त खरगोश मिला। उन दोनों के बीच क्या बातचीत हुई होगी? लिखकर बताइए -*

खरगोश - ....

लोमड़ी - ....

खरगोश - ....

लोमड़ी - ....

खरगोश - ....

लोमड़ी - ....

(*ख*) *इस कहानी का शीर्षक है - बोलने वाली गुफा। आपके अनुसार इस कहानी के और क्या-क्या शीर्षक हो सकते हैं? कम से कम तीन शीर्षक लिखिए।*

8. *मेरे दो प्रश्न: कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -*

1. ....

2. ....

9. *इस कहानी से -*

(*क*) *मैंने सीखा* ....

(*ख*) *मैं करूँगी/करूँगा* ....

यह भी जानिए -

हमारे देश में पंचतंत्र, हितोपदेश तथा जातक कथाएं प्रचलित हैं। इसी प्रकार कुछ देशों में अन्य कथाएँ जैसे- ईसप की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। इन कथाओं में मनुष्य व पशु-पक्षियों के आचरण को आधार बनाकर अनेक प्रकार की शिक्षाएं दी गई हैं।

5- कहाँ रहेगी चिड़िया ?

आँधी आई जोर-षोर से,

डालें टूटी हैं झकोर से।

उड़ा घोंसला, अंडे फूटे,

किससे दुःख की बात कहेगी!

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी ?

हमने खोला आलमारी को,

बुला रहे हैं बेचारी को।

पर वो चीं-चीं कर्राती है,

घर में तो वो नहीं रहेगी!

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी ?

घर में पेड़ कहाँ से लाएँ,

कैसे यह घोंसला बनाएँ।

कैसे फूटे अंडे जोड़ें,

किससे यह सब बात कहेगी!

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी ?

- महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। इनका जन्म सन् 1907 *ई. को फर्रुखाबाद, उ0प्र0 में हुआ था। इन्होंने साहित्य की विविध विधाओं पर लेखनी चलाते हुए हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'पथ के साथी', 'शंृखला की कड़ियाँ' इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इनका निधन सन्* 1987 *ई. में हुआ।*

अभ्यास

शब्दार्थ-

(*क*) *इस कविता में जिन शब्दों का अर्थ आपको नहीं पता, उन्हें छाँटकर लिखिए।*

(*ख*) *इनका अर्थ अपने शिक्षक से पूछकर/शब्दकोश से खोजकर लिखिए।*

1. *बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए* -

(*क*) *जोर-शोर से आँधी आने पर क्या-क्या हुआ* ?

(*ख*) *चिड़िया बुलाने पर आलमारी में रहने के लिए क्यों नहीं आ रही* ?

(*ग*) *चिड़िया के लिए दुःख की बात क्या है* ?

2. *कविता के अंशों को वाक्यों के रूप में लिखिए* -

कविता के अंश वाक्य

(क) आई आँधी जोर शोर से - जोर शोर से आँधी आई।

(ख) डालें टूटी हैं झकोर से - ....

(ग) हमने खोला अलमारी को - ....

(घ) बुला रहे हैं बेचारी को - ....

3. महादेवी वर्मा की ही एक और कविता नीचे दी गई है -

मेह बरसने वाला है,

मेरी खिड़की में आ जा तितली।

बाहर जब पर होंगे गीले,

धुल जाएंगे रंग सजीले।

झड़ जाएगा फूल, न तुझको,

बचा सकेगा छोटी तितली।

खिड़की में तू आ जा तितली।

(क) इस कविता पर दो सवाल बनाइए ।

(ख) इस कविता को संवादों की तरह लिखिए।

(ग) इस कविता पर चित्र बनाइए।

4. सोच-विचार: बताइए -

(क) आप किसी पेड़ के नीचे हों और जोर की आँधी आ जाए तो क्या करेंगे ?

(ख) *जिसका घोंसला उड़ गया हो, आप उस चिड़िया की मदद के लिए क्या-क्या करेंगे* ?

(ग) *आँधी आने पर चिड़िया के अलावा और कौन-कौन से जीव-जंतु दुःखी हुए होंगे*?

(घ) *घोंसला उड़ जाने पर चिड़िया के सामने क्या-क्या समस्याएं आई होंगी* ?

(ङ) *तुम्हारे आस-पास जोर की आँधी आने पर क्या-क्या होता है* ?

(च) *चिड़िया अपना घोंसला उड़ने और अंडे फूटने से दुःखी है। उसका दुःख यह भी है कि अपना दुःख किससे कहे* ? *क्या आपको कोई ऐसी घटना याद है जब आप दुःखी हुए* -

- *उस घटना के बारे में बताइए।*
- *आपने अपने दुःख की बात किससे कही थी* ?

5. *भाषा के रंग* -

दिए गए निर्देश के अनुसार चिड़िया शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाएँ -

(क) *ऐसा वाक्य जिसमें पाँच शब्द ही आएँ।*

(ख) *ऐसा वाक्य जिसमें चिड़िया के रंग का भी उल्लेख हो।*

(ग) *ऐसा वाक्य जिसमें चिड़िया शब्द के साथ 'अगर' भी आए।*

6. *आपकी कलम से* -

(क) *इस कविता की रचना सुश्री महादेवी वर्मा ने की है। महादेवी वर्मा को पशु-पक्षियों से बहुत प्रेम था। उन्होंने अपने घर में गाय, हिरण, गिलहरी, कुत्ता, नेवला जैसे तमाम पशु-पक्षी पाल रखे थे, जिनके नाम गौरी, सोना, रोजी, निक्की आदि रखे थे।*

- आपके घर में कौन-कौन से जानवर पाले गए हैं?
- उनको किस-किस नाम से बुलाते हैं?
- उनकी दो-दो खास बातें लिखिए।

(ख) क्या-क्या कठिनाई होगी -

- अपना घर न होने पर हम लोगों को स पेड़ न होने पर चिड़ियों को

(ग) कविता में आया है 'कैसे फूटे अंडे जोड़े'। फूटा अंडा जोड़ा नहीं जा सकता पर हमारे आस-पास बहुत सी ऐसी टूटी-फूटी चीजें होती हैं, जिन्हें जोड़ा जा सकता है। सोचकर लिखिए - आपके घर में ऐसी कौन-कौन सी चीजें हैं जिन्हें टूटने-फूटने के बाद भी मरम्मत द्वारा जोड़ा जा सकता है?

(घ)दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए। प्रत्येक चित्र के आधार पर एक-एक अनुच्छेद इस क्रम में लिखिए कि एक कहानी का रूप बनता जाए।

7. मेरे दो प्रश्न: कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए -

8. इस कविता से -

(क) मैंने सीखा - ....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

कितना सीखा-1

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए -

(क) जग के प्रकाश का स्वामी किसको और क्यों कहा गया है ?

(ख) पानी को बचाने के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं ?

(ग) शेर गुफा के अंदर है या नहीं, इसको पक्के तौर पर जानने के लिए लोमड़ी ने क्या किया ?

(घ) गांधी जी किस भूल के लिए जीवन भर पछताते रहे और उसके लिए उन्होंने क्या सुझाव दिए ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) चमक रहा है तेज तुम्हारा,

बन कर लाल सूर्य- मंडल,

फैल रही है कीर्ति तुम्हारी,

बन करके चाँदनी धवल।

(ख) आँधी आई जोर-शोर से,

डालें टूटी हैं झकोर से।

उड़ा घोंसला, अंडे फूटे,

किससे दुःख की बात कहेगी!

अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी ?

3. *नीचे दिए गए शब्दों में 'सु' तथा 'कु' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनके अर्थ भी लिखिए* -

पात्र, *मार्ग*, *योग*, *मति*, *बुद्धि*, *रुचि*

4. *वर्तनी शुद्ध कीजिए* -

खुसबू, *कलिया*, *निसान*, *पशन*, *मेना*, *गोरैया*, *सवास्थय*, *घोशला*

5. *नीचे दिए गए शब्दों में से संज्ञा*, *सर्वनाम*, *विशेषण और क्रिया शब्दों को अलग-अलग*

छाँटकर लिखिए -

सुनाया, *युवक*, *मीठा*, *जुम्मन*, *धार्मिक*, *देखा*, *वह*, *भलाई*, *उसने*, *भला*

6. '*बोलने वाली गुफा' कहानी को अपने शब्दों में सुनाइए*।

अपने आप-1

डेजी की डायरी

मंगलवार, 21 अगस्त

आज सुबह सोकर उठी तो तेज बारिश हो रही थी। बाहर आकर देखा तो सड़क पर पानी ही पानी था। कुछ लोग छाता लगाए, कुछ बरसाती ओढ़े तो कुछ यूँ ही भीगते हुए सड़क पर आ जा रहे थे। अरे! आज मैं स्कूल कैसे जाऊँगी - मैंने सोचा। वहाँ भी तो पानी ही पानी भरा होगा। तब तक माँ आ गई। उन्होंने बताया स्कूल में आज छुट्टी हो गई है। टीचर दीदी का फोन आया था। तब क्या किया जाए? मैंने सोचा। बारिश में बाहर भी तो नहीं निकल सकते। मैंने भैया को बुलाया और बनाया एक प्लान। भैया ने बनाई कागज की नाव तो मैंने बनाया बारिश का चित्र। भैया ने आँगन में जाकर तैराई नाव। मैंने कमरे में लगा दिया बारिश का चित्र। तुम्हारे चित्र में मेरी नाव तो है ही नहीं - भैया बोला। चित्र में नाव थी लेकिन अब वह तैरकर आगे चली गई है - मैंने कहा।

शुक्रवार, 24 अगस्त

आज मेरी सबसे प्यारी दोस्त गुलनाज़ का जन्मदिन है। उसने मुझे फोन पर मैसेज भेजा है। जरूर आने को कहा है। मैं बहुत खुश हूँ। मैंने उसके लिए एक बहुत प्यारा ग्रीटिंग कार्ड बनाया है। वह देखेगी तो बहुत खुश होगी।

रविवार, 26 अगस्त

आज रविवार है। छुट्टी का दिन। पर मुझे बहुत सारे काम हैं। सबसे पहले आज मुझे गुरवचन चाचा से मिलना है। वे पत्रकार हैं। गुरवचन चाचा मुझे बताएंगे कि समाचार कैसे लिखे जाते हैं और साक्षात्कार कैसे लिया जाता है।

शिक्षक निर्देश: बच्चों को इसी प्रकार डायरी लिखने के लिए प्रेरित करें

6-हाँ में हाँ

(बुंदेलखंड की एक लोककथा)

एक राजा थे। राज-काज से थक गए थे। एक दिन दरबार में मंत्री से बोले- "मंत्री जी, सोचता हूँ, हम लोग गंगा-स्नान कर आएँ।" राजा की बात सुनते ही मंत्री जी चट से बोले- "बहुत शुभ विचार है महाराज! आपके पूर्वजों ने तो कई बार गंगा जी की यात्रा की है। अवश्य चला जाए।"

राजा ने पूछा- "तो मंत्री जी, फिर चलने का कोई शुभ मुहूर्त निकलवाएँ।"

मंत्री बोले- "मुहूर्त की क्या बात महाराज ! सबसे बड़ा मुहूर्त इच्छा ही है। जिस दिन महाराज चलने का विचार करें वही शुभ मुहूर्त है।"

राजा बोले- "सवारी का प्रबंध भी तो होना चाहिए।"

मंत्री जी ने कहा- "हाँ महाराज, सवारी तो होनी ही चाहिए। गंगा जी बहुत दूर हैं, परंतु सवारी की आपके यहाँ क्या कमी है ? एक-से-एक बढ़कर सवारियाँ हैं।"

राजा ने पूछा- "कौन-सी सवारी ठीक रहेगी ?"

मंत्री जी बोले- "सवारी वही ठीक रहेगी जिसमें श्रीमान जी को सुविधा हो।"

राजा बोले- "मंत्री जी हाथी कैसा रहेगा ?"

मंत्री जी बोले- "उत्तम महाराज! हाथी जैसी सवारी ? वाह, क्या कहना ! आनंद से चले जा रहे हैं। जहाँ ठहरना चाहें, ठहर सकते हैं। जब चलना है, चलें। राजाओं की सवारी तो हाथी ही है। ठाट से हौदा कसा हो- महाराज की सवारी चली जा रही हो। आगे-पीछे नौकर-चाकर साज-सामान लिए चल रहे हों। दूर से देखने वाले देखें- कोई बड़ा रईस चला आ रहा है।"

राजा बोले - "गंगा जी तो बहुत दूर हैं। हाथी से तो महीनों में पहुँच पाएँगे। चींटी की चाल चलता है।"

मंत्री ने उत्तर दिया - "सो तो है ही महाराज। हाथी से ज्यादा सुस्त जानवर दूसरा नहीं।"

राजा ने कहा- "तो फिर ऊँट ?"

मंत्री जी बोले- "ऊँट ठीक है महाराज ! उत्तम सवारी है। कोसों की मंजिल एक दिन में पूरी करने के लिए ऊँट से बढ़कर कोई सवारी नहीं।"

राजा बोले- "परंतु कई दिनों का खटराग है। ऊँट पर बैठे-बैठे कूबड़ निकल आएगा। कमर तो टूट ही जाएगी। ऊँट बलबलाता भी बहुत है।"

मंत्री जी बोले- "छोड़िए भी ऊँट को। कमर दुःखने की बात तो है ही। आपका पेट भी हिल जाएगा। ऊँट भी कोई सवारी है ? ऊँट और गधे में अधिक अंतर नहीं।"

राजा ने कहा- "मेरी समझ में घोड़ा ठीक रहेगा।"

मंत्री जी ने कहा- "हाँ महाराज ! घोड़ा बिल्कुल ठीक है। मैदान हो, चाहे पहाड़ हो, घोड़ा सब जगह चला जाएगा। वीरों की सवारी है, और सब में शानदार। जी चाहे जहाँ रुकिए, जब चलिए। घोड़े की दुलकी चाल का क्या कहना ?"

राजा बोले- "पर एक बात है, घोड़े पर घंटों बैठना तो कठिन है। कायदे से बैठना पड़ता है।"

मंत्री जी बोले- "सो तो है ही महाराज! काठी और काठ को एक समान समझिए। धूप अलग लगे, पानी से भी बचाव नहीं। मनमौजी जानवर है। जाने कब किस खाई-खंदक में पटक दे।"

राजा ने पूछा- "मंत्री जी, पालकी कैसी रहेगी?"

मंत्री जी बोले- "पालकी का क्या कहना महाराज! यही तो राजा की सवारी है।"

राजा बोले- "परंतु पालकी में बैठकर गंगा जी में स्नान के लिए जाने की बात कुछ जँचती नहीं। लोग हँसेंगे तो नहीं?"

मंत्री जी ने कहा- "हँसने की बात तो है ही महाराज! पालकी पर लदकर चलना तो जीते जी ही मुर्दों की तरह जाने के बराबर है।"

राजा ने कहा- "तब तो कोई सवारी ठीक ही नहीं बैठती। तो फिर मंत्री जी, गंगा स्नान के लिए जाने की बात रहने ही दें।"

मंत्री जी बोले- "उत्तम विचार है महाराज! घर में ही सब आनंद है। कहा भी गया है-

मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

राजा ने कहा- "हाँ, तो फिर यही तय है। कौन इस यात्रा के पचड़े में पड़े।" और फिर राजा ने गंगा यात्रा का विचार त्याग दिया।

इसे ही कहते हैं "झूठ-मूठ हाँ में हाँ मिलाना। बच्चो! तुम इस आदत से बचना।"

अभ्यास

शब्दार्थ-

मुहूर्त = कार्य प्रारंभ करने का समय

पचड़ा = झमेला, झंझट

काठी = घोड़े की पीठ पर कसने वाली जीन, जिसके नीचे काठ लगा

बलबलाना = ऊँट का बोलना

मनमौजी = अपनी इच्छानुसार काम करने वाला

1. **बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -**

(क) लोक-कथा में किस तरह के लोगों पर व्यंग्य किया गया है ?

(ख) इस लोक-कथा में यातायात के किन-किन साधनों का नाम आया है ?

(ग) 'हाँ में हाँ' लोक-कथा से क्या सीख मिलती है ?

2. **सोच-विचार: बताइए -**

यदि मंत्री की जगह तुम होते तो सवारी के विषय में क्या सलाह देते और क्यों?

3. **भाषा के रंग -**

इस वर्ग पहेली में कुछ नदियों के नाम हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखिए -

ब्र	य	मु	ना	ह	का	वे	री
ह्	रा	च	ज	गो	दा	व	री
म	वी	प	गं	गा	झे	ल	म
पु	न	र्म	दा	क	गो	म	ती
त्र	थे	ना	य	स	त	लु	ज

4. **आपकी कलम से -**

इन बिंदुओं के आधार पर किसी स्थान की यात्रा की योजना बनाकर लिखिए -

कहाँ जाएँगे ?, किन-किन साधनों से जाएंगे ?, कौन-कौन साथ होंगे ?, वहाँ क्या-क्या करेंगे, खर्च का भी अनुमान करके लिखिए।

कलरव-4

5. अब करने की बारी -

(क) इस कहानी पर अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए।

(ख) इसी प्रकार की अन्य लोक-कथाओं, हास्य कविताओं, चुटकुलों का संग्रह कीजिए।

(ग) पाठ में आए मुहावरे ढूँढ़िए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(घ) पता कीजिए और लिखिए -

- आपके घर से गंगा जी कितनी दूर हैं ?
- वहाँ किन-किन साधनों से जा सकते हैं ?
- आपके मत में वहाँ जाने के लिए सबसे अच्छा साधन कौन-सा होगा और क्यो ?

(ङ) हमारे आसपास बहुत-सी नदियाँ होती हैं जो हमारे बहुत काम आती हैं। वर्ष मे कई पर्व-त्योहार आते हैं जब हम नदियों में स्नान करते हैं। बताइए -

- आपके आस-पास कौन-कौन सी नदियाँ हैं ?
- आपका परिवार इनमें कब-कब स्नान के लिए जाता है ?
- नदियों में स्नान करते समय हमें क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

(च) नीचे लिखे अनुच्छेद को पढ़िए और समझिए -

दो चूहे कहीं घूमने निकले। रास्ते में उन्हें हाथी मिला। एक चूहे ने मूँछें फड़काते हुए उससे लड़ने को कहा। हाथी ने लड़ने से मना कर दिया। दूसरे चूहे ने कहा कि वह हम दो से घबरा गया है, लड़ेगा नहीं।

इस अनुच्छेद को संवाद शैली में बदल सकते हैं। परिवर्तन इस प्रकार से होगा -

एक चूहा - अरे ओ हाथी! बोल क्या हमसे लड़ेगा ?

दूसरा चूहा - रहने दे, वह घबरा गया है। हम दो हैं न। वह हमसे नहीं लड़ेगा।

स अब आप भी नीचे दिए गए अनुच्छेद को संवाद शैली में बदलिए -

फरजाना को स्कूल से घर आने में देर हो गई। मम्मी ने देर से आने का कारण पूछा। फरजाना ने बताया कि साइकिल की चैन टूट गई थी। उसे ठीक कराने में देर हो गई।

(छ) कविता को पढ़कर सवालों के उत्तर दीजिए -

हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं,

रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं।

बेला, गुलाब, जूही, चंपा चमेली,

प्यारे-प्यारे फूल गूँथे माला में एक हैं।

गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी,

जाके मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।

कोयल की कूक प्यारी, पपीहे की टेर न्यारी,

गा रही तराना बुलबुल राग मगर एक है।

- *कविता में -*
- *किन-किन फूलों के नाम हैं -* ....
- *किन-किन नदियों के नाम हैं -* ....
- *किन-किन पक्षियों के नाम हैं -* ....
- *लिखिए, जो कविता में नहीं है -*
- *पाँच फूलों के नाम -* ....
- *तीन नदियों के नाम -* ....
- *पाँच पशु-पक्षियों के नाम -* ....
- *कविता में किस बात को उभारा गया है -* ....
- *कविता को कोई प्यारा-सा शीर्षक दीजिए -* ....

6. *मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए*

7. *इस कहानी से -*

(*क*) *मैंने सीखा -* ....

(*ख*) *मैं करूँगी/करूँगा -* ....

7-मलेथा की गूल

मध्य गढ़वाल की घाटियों में एक गाँव है - मलेथा। गाँव के दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ की एक शृंखला अलकनंदा नदी तक चली गई है। दूसरी ओर एक पहाड़ी नदी चंद्रभागा तीव्र वेग से बहती हुई अलकनंदा में मिल जाती है।

विचित्र बात यह थी कि दोनों ओर नदियाँ रहने पर भी मलेथा गाँव में सिंचाई का कोई साधन न था क्योंकि इन नदियों और गाँव के बीच पहाड़ खड़े थे। पानी के अभाव में सारे खेत बंजर पड़े रहते थे।

मलेथा गाँव में एक युवक था माधो सिंह। उसके मन में सदैव एक सपना उभरता रहता था कि यदि नदी का पानी किसी प्रकार हमारे खेतों तक आ जाता तो हमारे खेत भी हरी-भरी फसलों से लहलहा उठते।

एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा, "यदि हम जी-जान से कोशिश करें तो हमारे गाँव में पानी आ सकता है।"

पत्नी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा, "कैसे ?" माधो सिंह ने कहा, "नदी के किनारे जो पहाड़ हैं, वही इस ओर पानी आने में बाधक है। पहाड़ की तलहटी में भीतर ही भीतर यदि एक सुरंग बना ली जाए तो उस ओर से नदी का पानी इस ओर आ सकता है।"

पत्नी बोल उठी, "इतना विशाल पहाड़ काटकर सुरंग बनाना क्या संभव है ?"

माधो सिंह ने कहा, "कार्य कठिन तो है लेकिन असंभव नहीं। सोचो, ऐसा होने पर हमारे गाँव का कितना भला होगा ?"

पत्नी ने कहा, "मैं इस महान कार्य में आपके साथ हूँ।"

माधो सिंह ने प्रतिज्ञा की - 'जब तक मेरे शरीर में रक्त की एक भी बूँद रहेगी, मैं अपने गाँव मलेथा तक गूल निकालकर पानी लाने का प्रयास करूँगा। मैं तब तक चैन की नींद नहीं सोऊँगा, जब तक मलेथा के एक-एक खेत तक पानी नहीं आ जाता।'

अपने स्वप्न को साकार करने के लिए माधो सिंह गैंती-फावड़ा लेकर इस भगीरथ प्रयास में जुट गया। कार्य अत्यंत दुष्कर था, लेकिन उसको विश्वास था कि उसका सपना अवश्य पूरा होगा।

माधो सिंह चट्टान पर गैंती जमाता और उस पर हथौड़े की चोट से चट्टान के टुकड़े जमीन पर आ गिरते। हफ्ते-डेढ़ हफ्ते में ही उसने काफी गहरी सुरंग खोद दी। इससे उसका उत्साह और भी बढ़ गया। माधो सिंह के साहस और धैर्य को देखकर गाँव के अन्य व्यक्ति भी इस कार्य में आ जुटे। उसने दिन-रात एक करके कठोर पहाड़ को छेदकर गूल का निर्माण पूरा कर दिखाया। मलेथा की प्यासी धरती पर पानी बहने लगा।

आज भी मलेथा के शाक-सब्ज़ियों से

भरे खेत माधो सिंह के असीम धैर्य और कठोर श्रम की गवाही दे रहे हैं।

यह भी जानिए -

अभ्यास

शब्दार्थ-

श्रृंखला = *कतार*

प्रयास = *कोशिश*

तीव्र = *तेज*

दुष्कर = *बहुत कठिन*

साकार = *पूर्ण होना*

गूल = *पानी की नाली*

1. *बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -*

(*क*) *मलेथा के खेत बंजर क्यों पड़े रहते थे* ?

(*ख*) *पानी लाने के लिए माधो सिंह ने अपने पत्नी को क्या उपाय बताया* ?

(*ग*) *माधो सिंह के मन में क्या सपना उभरता था* ?

(घ) *सपना पूरा करने के लिए माधो सिंह ने क्या प्रतिज्ञा ली* ?

(ङ) *माधो सिंह ने अपनी प्रतिज्ञा कैसे पूरी की* ?

(च) *माधो सिंह की दृढ़ प्रतिज्ञा और कठोर श्रम का क्या परिणाम निकला* ?

2. *सोच-विचार: बताइए* -

(*क*) *आप मलेथा गाँव के बच्चे होते तो पहाड़ में सुरंग बनाने में क्या सहयोग करते*?

(*ख*) *आपके आस-पास कहाँ-कहाँ जल बरबाद हो रहा है* ? *सोचिए और जल की बरबादी रोकने के उपाय भी बताइए*।

3. *भाषा के रंग* -

(*क*) *पाठ में एक वाक्य आया है*, '*मैं तब तक चैन की नींद नहीं सोऊँगा जब तक मलेथा के एक-एक खेत तक पानी नहीं आ जाता*।' *ऐसे तीन वाक्यों की रचना करें जिनमें* '*तब तक*' *और* '*जब तक*' *शब्दों का प्रयोग हुआ हो*।

(*ख*) *नीचे लिखे शब्दों को उदाहरण के अनुसार लिखिए* -

- *उत्साह* - *उत्साही स पराक्रम* -
- *साहस* - *स परिश्रम* -
- *बलिदान* - *स उद्यम* -

(*ग*) *नीचे लिखे शब्दों में से संज्ञा शब्द छाँटिए* -

तीव्र, *फावड़ा*, *माधो सिंह*, *खेत*, *गढ़वाल*, *गैंती*, *सुंदर*, *सिंचाई*, *पहाड़*, *हम*

(घ) *नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए* -

पवन, *जल*, *पृथ्वी*, *कमल*, *घर*

(ङ) *अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -*

पहाड़, विचलित, तीव्र, बंजर, उत्साह, निश्चय, पानी

(च) *उचित स्थान पर विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए-*

माधव प्रातःकाल उठकर सैर करने जाता है जलपान के बाद विद्यालय जाता है वहाँ खूब मेहनत से पढ़ता है सभी उसकी प्रशंसा करते हैं

4. *आपकी कलम से -*

(क) *आपके पास-पड़ोस में भी ऐसी घटनाएँ घटी होंगी, जब किसी ने कठिन समझे जाने वाले कार्य को कर दिखाया होगा। वह घटना कैसे घटी, अपने शब्दों में लिखिए।*

(ख) '*मलेथा की गूल*' *कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।*

5. *अब करने की बारी -*

यहाँ एक सूचना है जो नवीन के गाँव में एक दिन सूचना-पट्ट पर लगाई गई -

आप भी ऐसी सूचना बना सकते हैं। अपने विद्यालय के किसी कार्यक्रम के विषय में एक सूचना बनाइए और उसे सूचना- पट्ट पर लगाइए।

7. *मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -*

8. *इस कहानी से -*

(क) *मैंने सीखा -* ....

(ख) *मैं करूँगी/करूँगा -* ....

सूचना-

सभी ग्रामवासी कृपया ध्यान दें। आगामी रविवार दिनांक 20.7.2018 को प्राथमिक विद्यालय, रूपपुर टंडोला में प्रातः 9 बजे से वृक्षारोपण कार्यक्रम होगा।

आप सभी से अनुरोध है कि विद्यालय में एक-एक पौधा लेकर उपस्थित हों तथा वृक्षारोपण कर कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

- ग्राम प्रधान, रूपपुर टंडोला

8-"टोकरी में क्या है ?"

गरमी की छुट्टियों का अंतिम दिन है। अदिति नानी के पास से अपने गाँव लौट रही है। उसके पिता जी लेने आए हैं। वह अपने घर जाने के लिए तैयार हो रही है।

नानी - अदिति ! मैंने इस टोकरी में कुछ बाँधकर रखा है। इसे भी अपने साथ ले जाना।

अदिति - अरे वाह! टोकरी में क्या है, नानी जी ?

नानी - तुम स्वयं अनुमान लगाकर बताओ, कि क्या हो सकता है?

अदिति - अच्छा, तो मुझे सोचने दो नानी जी! या तो इसमें मिठाई है, या फल!

नानी - फल है।

अदिति - अहा! तब तो इसमें अवश्य ही सेब होंगे नानी जी!

नानी - नहीं, सेब नहीं हैं, फिर से सोचो।

अदिति - ठीक है नानी, सोचती हूँ। अच्छा यह तो बताओ कि यह फल छोटे पौधे पर लगता है या पेड़ पर?

नानी - पेड़ पर।

अदिति - तब तो यह नारंगी है।

नानी - नहीं बिटिया, नारंगी भी नहीं है।

अदिति - अच्छा, यह पीला है या लाल ?

नानी - पीला है।

अदिति - तब यह आम होगा।

नानी - ना, ना, आम भी नहीं है।

अदिति - अच्छा, मुझे फिर से सोचने दो। इसकी आकृति कैसी है ?

नानी - गोल है।

अदिति - तब अमरूद होगा।

नानी - नहीं। अमरूद नहीं है।

अदिति - अच्छा यह स्वाद में कैसा है, मीठा, खट्टा या कसैला ?

नानी - इसका स्वाद खट्टा है।

अदिति - तब तो यह जरूर माल्टा होगा।

नानी - नहीं, बिटिया। तुम करीब-करीब तो पहुँच गई हो, फिर भी थोड़ा प्रयास करो।

अदिति - ठीक है, नानी, अच्छा बताओ। यह फल किस काम मंे आता है ?

नानी - यह अचार और शरबत बनाने के काम आता है।

अदिति - नानी ! अब मैं जान गई कि यह .... है।

नानी - हाँ, बिटिया! ठीक बताया। शाबाश!

अभ्यास

1. *बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -*

(*क*) *अदिति अपने घर क्यों लौट रही है ?*

(*ख*) *अदिति ने टोकरी में किन-किन फलों का अनुमान लगाया ?*

(*ग*) *वास्तव में वह फल कौन-सा था ?*

2. *नीचे लिखी पहेली को बूझिए और पूरा कीजिए - पहेली का उत्तर "मूली" है। अब प्रश्नों का उत्तर देने में अमन की सहायता कीजिए -*

अमन - मैंने बाजार से कुछ खरीदा। यह मेरे थैले में है।

अंकिता - यह फल होगा या सब्ज़ी ?

अमन - ....

अंकिता - यह जमीन के ऊपर उगता है या अंदर ?

अमन - ....

अंकिता - यह सफेद है या रंगीन ?

अमन - ....

अंकिता - तब यह मूली है।

एक पहेली और

- *यहाँ आपको प्रश्न बनाने हैं। उनके उत्तर दिए गए हैं। कोष्ठक में दिए गए संकेतों का उपयोग कर सुमन को प्रश्न बनाने में मदद कीजिए -*

विमल - मेरे पास एक जानवर की तस्वीर है। क्या आप बता सकती हो कि यह तस्वीर किसकी है ?

सुमन - क्या यह जंगल में रहता है ?

विमल - नहीं, यह घर में रहता है।

सुमन - .... (*माँस*)

विमल - नहीं, यह घास खाता है।

सुमन - .... (*सींग*)

विमल - नहीं, इसके सींग नहीं होते हैं।

सुमन - .... (*तेज दौड़ता*)

विमल - हाँ, यह तेज रफ्तार से दौड़ता है।

सुमन - .... (*ताँगा खींचता*)

विमल - हाँ, यह ताँगा खींचता है।

सुमन - तब यह एक घोड़े की तस्वीर है।

इस प्रकार की पहेलियाँ आप भी बनाकर अपने मित्रों से पूछिए।

3. *अब करने की बारी -*

(क) *इसके ऊपर ताल बनाओ, इसके ऊपर नहरें,*

इसके ऊपर नदियाँ बहतीं, जिनमें उठतीं लहरें।

कोई इसमें बाग लगाता कोई करता खेती,

यह सबको देती है सब कुछ, पर किससे क्या लेती ?

बताओ कौन ?

(ख) *बादल लेकर उड़ती हूँ*

नहीं किसी को दिखती हूँ

(ग) *अब एक पहेली आप भी लिखिए।*

(घ) *टोकरी में जो फल है वह कुछ बातों में दूसरे फलों से मिलता* (*समानता*) *है। जैसे* -

- *वह पेड़ पर लगता है*
- *वह पीला है*
- *वह गोल है*
- *वह खट्टा है*

लेकिन कई बातों में अलग (*अंतर*) *है।*

आपके आस-पास की तमाम चीजों में कुछ बातें समान होती हैं जबकि कई बातों में अंतर होता है। नीचे की सूची में दी गई चीजों में क्या बातें समान हैं, क्या अलग (*अंतर*) *है लिखिए* -

नाम समानता अंतर

- *कुत्ता* - *भैंस*

- *पेन* - *पेंसिल*
- *तितली* - *चिड़िया*
- *कॉपी* - *किताब*
- *मूली* - *गाजर*

4. *मेरे दो प्रश्न*: *पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

5. *इस पाठ से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(*ख*) *मैं करूँगी*/*करूँगा* - ....

9-ग्राम श्री

फैली खेतों में दूर तलक

मखमल-सी कोमल हरियाली,

लिपटीं जिससे रवि की किरणें

चाँदी की सी उजली जाली।

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से

लद गईं आम्र तरु की डाली।

झर रहे ढाक, पीपल के दल,

हो उठी कोकिला मतवाली।

महके कटहल, मुकुलित जामुन,

जंगल में झरबेरी झूली।

फूले आड़ू, नींबू, दाड़िम

आलू, गोभी, बैंगन, मूली।

पीले मीठे अमरूदों में

अब लाल-लाल चित्तियाँ पड़ीं,

पक गए सुनहले मद्दुर बेर

अँवली से तरु की डाल जड़ीं।

लहलह पालक, महमह द्दनिया

लौकी औं सेम फलीं, फैलीं,

मखमली टमाटर हुए लाल,

मिरचों की बड़ी हरी थैली।

-सुमित्रानंदन पंत

उत्तराखंड राज्य के कौसानी (अल्मोड़ा) में जन्मे सुमित्रानंदन पंत को 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। इनकी रचनाओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों का मनोरम वर्णन हुआ है। 'लोकायतन', 'ग्राम्या', 'चिदंबरा', 'ग्रंथि', 'पल्लव' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ-

दूर तलक = दूर तक आम्र

तरु = आम के वृक्ष

रवि = सूर्य

मुकुलित = अधखिली

अँवली = छोटा आँवला

दाड़िम = अनार

रजत स्वर्ण मंजरियों से = रुपहले और सुनहले आम के बौरों से

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) खेतों में कैसी हरियाली फैली है?

(ख) हरियाली से लिपटी सूर्य की किरणें कैसी लगती हैं?

(ग) आम में बौर कब आते हैं?

(घ) कोयल किस ऋतु में मतवाली होकर कुहुकती है?

(ङ) वसंत ऋतु में प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होने लगते हैं?

2. नीचे बाईं ओर कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। दाईं ओर उनसे संबंधित भाव व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ गलत क्रम में लिखी गई हैं। उन्हें सही क्रम में मिलाइए -

चाँदी की सी उजली जाली - मखमल के समान कोमल हरियाली

लद गई आम्र तरु की डाली - चाँदी के रंग जैसी सफेद जाली

हो उठी कोकिला मतवाली - छोटे आँवले से वृक्ष की डालियाँ लद गईं

अँवली से तरु की डाल जड़ी - आम के वृक्ष की डालें बौर से लद गईं

मखमल सी कोमल हरियाली - कोयल आनंद में मतवाली हो उठी

अब रजत स्वर्ण मंजरियों से - अधखिली जामुन

मुकुलित जामुन - चाँदी और सोने के रंग जैसे आम के बौर से।

3. भाषा के रंग -

जाली-डाली: इसी प्रकार के अन्य तुकांत शब्दों को कविता में से ढँूढ़कर लिखिए।

4. आपकी कलम से -

(क) किस ऋतु में क्या मिलता है ?

ग्रीष्म ऋतु वर्षा ऋतु शीत ऋतु

फल ....

सब्ज़ी ....

(ख) इनमें से जो भी फल और सब्ज़ी आपको अच्छी लगती है, उस पर छोटी-सी कविता लिखिए। यह भी लिखिए कि यह फल और सब्ज़ी आपको क्यों अच्छी लगती है ?

5. अब करने की बारी

जब हम बहुत-सी चीजों को याद रखना चाहते हैं तो उनकी एक सूची बनाते हैं। नीचे दी गई सूचियों को पढ़िए -

होली की सूची ,नए शब्द जो इस सप्ताह मैंने सीखे

रंग, गुलाल, पिचकारी, उपकार, प्रकार, दिशा-निर्देश

रंग-बिरंगी टोपी, *गुब्बारे*, *नए कपड़े*, *अविरल*, *प्रवाह*, *सुगति*

गुझिया, *हलवा*, *मिठाइयाँ*, *मुखौटे*

अब आप भी अपनी सूची बनाइए -

जो चीजें आपको बाजार से खरीदनी हैं- अगले रविवार को जो काम आपको करने हैं-

आप इस तरह की और भी सूचियाँ बना सकते हैं।

6. *मेरे दो प्रश्न*: *इस कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

7. *इस कविता से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(*ख*) *मैं करूँगी*/*करूँगा* - ....

10-नन्हीं राजकुमारी और चंद्रमा

बहुत पुरानी बात है, समुद्र किनारे एक नन्हीं-सी राजकुमारी रहती थी। एक दिन उसने इतनी चटनी खा ली कि बीमार हो गई। डॉक्टर ने भी उसे देखा तो चिंता मे पड़ गया। राजा ने राजकुमारी से पूछा - "बताओ, तुम्हें क्या चाहिए ?" राजकुमारी बोली - "अगर मुझको चंद्रमा मिल जाए तो मैं अच्छी हो जाऊँगी।"

राजा के पास एक से बढ़कर एक जानकार विद्वानों की भीड़ लगी रहती थी। वह उनसे जो माँगता वे हाजिर कर देते थे। इसलिए राजा ने कह दिया, "ठीक है, तुमको चंद्रमा मिल जाएगा।" राजा ने दरबार में पहुँचकर मंत्री को बुलाया। मंत्री तुरंत हाजिर हो गया। राजा ने कहा - "मंत्री जी राजकुमारी को चंद्रमा चाहिए, तभी उसकी तबीयत ठीक होगी। आज रात या ज्यादा से ज्यादा कल तक हर हाल में चंद्रमा चाहिए।" यह सुनकर मंत्री पसीना-पसीना हो गया और बोला - "महाराज चंद्रमा लाना तो असंभव है। चंद्रमा पैंतीस हजार मील दूर है। वह पिघले ताँबे का बना है और राजकुमारी के कमरे से बड़ा है।" मंत्री की बातें सुनकर राजा गुस्सा हो गया। उसने मंत्री को तुरंत जादूगर को हाजिर करने का हुक्म दिया। जादूगर ने नीले रंग का लबादा पहन रखा था। कलगीदार टोपी में चाँदी के सितारे चमक रहे थे और लबादे पर सोने के उल्लू बने थे। मगर जब राजा ने राजकुमारी की इच्छा बताई तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। जादूगर बोला - "राजा साहब, चंद्रमा तो कोई नहीं ला सकता। चंद्रमा तो एक लाख पचास हजार मील दूर है, हरे पनीर का बना है और महल से दो गुना बड़ा है।" राजा आग बबूला हो गया। उसने कहा - "मुझे तुम्हारी बकवास नही सुननी। अगर चंद्रमा नहीं ला सकते तो फौरन यहाँ से रफा-दफा हो जाओ।" तब राजा ने अपने राज्य के सबसे बड़े गणितज्ञ को बुलाया। वह गंजा था और उसके दोनों कानों में पेंसिल लगी थी। उसके काले चोंगे पर सफेद अंक चमक रहे थे।

गणितज्ञ के आते ही राजा ने कहा - "देखो, मुझे अपनी बेटी के लिए चंद्रमा चाहिए और तुम्हें इसका जुगाड़ करना है।" गणितज्ञ बोला - " महाराज! चंद्रमा तो तीन लाख मील दूर है। वह सिक्के की तरह गोल और चपटा है और आसमान में चिपका है, चंद्रमा को कोई भी पृथ्वी पर नहीं ला सकता।" राजा गुस्से से लाल-पीला हो गया। अब उसने सबसे ऊबकर विदूषक को बुलाने के लिए घंटी बजाई। रंग-बिरंगी कतरनों से बने कपड़े और टोपी लगाए, छलाँग मारते वह राजा के पास आ गया और बोला - "महाराज मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।" राजा बोला - "राजकुमारी को चंद्रमा चाहिए और जब तक राजकुमारी को चंद्रमा नहीं मिल जाता वह ठीक नहीं हो सकती।" विदूषक ने पूछा - " विद्वानों के मुताबिक चाँद कैसा है, कितना बड़ा है और कितनी दूर है ?" राजा बोला - "मंत्री कहता है, चंद्रमा पैंतीस हजार मील दूर है, राजकुमारी के कमरे से बड़ा है। जादूगर कहता है, चंद्रमा एक लाख पचास हजार मील दूर है, महल से दो गुना बड़ा है और गणितज्ञ सोचता है कि चंद्रमा तीन लाख मील दूर है और मेरे राज्य का आधा है। विदूषक बोला - "जब विद्वान ऐसा कह रहे हैं तो सच ही होगा। अब करना यह है कि राजकुमारी से भी पूछें, चंद्रमा कितना बड़ा है और कितनी दूर है।" यह कहकर विदूषक उछलता-कूदता राजकुमारी के कमरे में जा पहुँचा।

विदूषक को देखकर राजकुमारी मुस्करा दी और बोली - "क्या तुम मेरे लिए चंद्रमा लाए हो ?" विदूषक बोला - "अभी तो नहीं पर हाँ जल्दी ही ले आऊँगा। अच्छा बताओ चंद्रमा कितना बड़ा है ? राजकुमारी बोली - " अरे! तुमको नहीं पता? चंद्रमा मेरे नाखून से जरा-सा छोटा होगा, क्योंकि जब मैं अँगूठा चंद्रमा के सामने करती हूँ तो वह ढक जाता है" विदूषक बोला - "और चंद्रमा कितनी दूर होगा ?" राजकुमारी बोली - "मेरी खिड़की के बाहर जो पेड़ है उससे तो ऊँचा नहीं होगा क्योंकि वह कभी-कभी पेड़ की टहनियों में उलझ जाता है।" "वह किस धातु का बना होगा ?"- विदूषक ने पूछा। "अरे! यह भी कोई पूछने की बात है ? चंद्रमा तो सोने का बना होता है" - राजकुमारी बोली। विदूषक बोला - "अच्छी बात है। आज रात जब चंद्रमा टहनियों मे उलझेगा तो मैं उसको उतार लाऊँगा।" राजकुमारी बोली - "जरूर, मुझ जल्द से जल्द सोने जैसा चंद्रमा ला दो।" विदूषक महल से सीधा सोनार के पास गया और राजकुमारी के नाखून से जरा छोटा सोने का चंद्रमा बनवा लिया। उसे सोने के तार

में पिरोकर राजकुमारी के पास ले आया। राजकुमारी खुश हो गई और सुबह बाग में चहकते हुए खेलने लगी। वह स्वस्थ हो गई थी।

राजा अब भी चिंतित था। उसे पता था रात को जब चंद्रमा निकलेगा तो बिटिया फिर बीमार होगी। उसने मंत्री को बुलाया और कहा - " कुछ ऐसा उपाय करो कि राजकुमारी आज की रात चंद्रमा न देख पाए।" बहुत सोच विचार कर मंत्री बोला - "राजकुमारी को काला चश्मा पहना देना चाहिए तो चंद्रमा दिखेगा ही नहीं।" राजा चिड़चिड़ा गया और बोला - "अगर राजकुमारी काला चश्मा पहनेगी तो चीजों से टकराएगी। इससे उसे नई बीमारी हो सकती है।"

अब जादूगर को बुलाया गया। उसने सुझाया कि महल के चारों ओर काले मखमल के ऊँचे-ऊँचे परदे तान दें तो चंद्रमा हर हाल में छिप जाएगा। राजा को सुनते ही गुस्सा आया, "अरे! इससे तो बेटी का दम घुट जाएगा।" तब गणितज्ञ बुलाया गया उसने भी जोड़ घटाकर बताया कि बगीचे में जमकर रंग-बिरंगी आतिशबाजी की जाए तो इस चकाचैंध में चंद्रमा दिखाई ही नहीं देगा। राजा को इस बात पर इतना गुस्सा आया कि वह चीखने लगा, "आतिशबाजी होगी तो बिटिया सो नहीं पाएगी और सोएगी नहीं तो बीमार हो जाएगी। चले जाओ यहाँ से।"

इन सबके जाने के बाद विदूषक आया। राजा ने कहा - "वह देखो राजकुमारी की खिड़की पर चंद्रमा चमक रहा है। अब वह देखेगी कि उसके गले में पड़ा चंद्रमा आसमान में चमक रहा है तो उस पर क्या बीतेगी।"

विदूषक चुपके से संगमरमर की सीढ़ियाँ चढ़कर राजकुमारी के कमरे में पहुँच गया। राजकुमारी बिस्तर पर लेटी चंद्रमा को देख रही थी। उसके हाथ में चंद्रमा का लॉकेट था। विदूषक बोला - "कितनी अजीब बात है चंद्रमा आसमान में चमक रहा है जबकि

वह तो सोने की जंजीर के सहारे तुम्हारे गले में लटक रहा है।" राजकुमारी खिलखिलाकर हँस पड़ी, "अरे

तुम तो एकदम बुद्धू हो! इसमें अजीब बात क्या है। जब मेरा कोई दाँत टूट जाता है तो उसी जगह दूसरा नहीं उग आता ?" विदूषक बोला - " अरे हाँ! जानवर की सींग झड़ जाती हैं तो वह भी फिर से आ जाती है। इतनी सी बात मेरी अक्ल में क्यों नहीं आई।" राजकुमारी बोली- "ऐसा दिन, रात, रोशनी, चंद्रमा सबके साथ होता है।" विदूषक ने देखा कि धीमे-धीमे बुदबुदाते हुए राजकुमारी खुशी-खुशी सो गई है।

विदूषक मुस्कुराता हुआ कमरे से बाहर आ गया।

यह भी जानिए -

चंद्रमा पृथ्वी का इकलौता प्राकृतिक उपग्रह है। यह पृथ्वी से लगभग 3,84,400 किमी. (तीन लाख चैरासी हजार चार सौ किमी.) दूर है और यह बहुत छोटा दिखाई देता है।

चंद्रमा की परिस्थितियाँ जीवन के लिए अनुकूल नहीं है। यहाँ न पानी है और न वायु। इसकी सतह पर पर्वत, मैदान एवं गड्ढे हैं जो चंद्रमा की सतह पर छाया बनाते हैं। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पर इनकी छाया को देखा जा सकता है।

प्रख्यात अमेरिकन लेखक 'जेम्स थर्बर' की कहानी 'मैनी मून्स" का हिंदी रूपांतर।

अभ्यास

शब्दार्थ -

विदूषक - अपने हाव-भाव द्वारा किसी की नकल करके हँसाने वाला व्यक्ति

लबादा - भारी और लंबा पहनावा

1.*बोध प्रश्न*: *उत्तर लिखिए* -

(*क*) *राजकुमारी किस कारण से बीमार हो गई* ?

(*ख*) *मंत्री ने पहली बार बुलाने पर राजा से क्या कहा* ?

(*ग*) *विदूषक क्या पहने था* ?

(*घ*) *राजकुमारी की बीमारी कैसे ठीक हुई* ?

(*ङ*) *राजकुमारी के ठीक होने के बाद राजा क्यों चिंतित था* ?

(*च*) *राजकुमारी ने विदूषक से क्या कहा जिससे राजा की चिंता दूर हो गई* ?

2.*सोच-विचार*: *बताइए* -

(*क*) *चित्र को देखकर सवालों के उत्तर दीजिए* -

- *यह किस बीमारी की दवा है* ?
- *यह कौन-कौन सी चीजें मिलाकर बनाई गई है* ?
- *इस दवा के बनने की तारीख और वर्ष क्या है* ?
- *कितने समय बाद यह दवा उपयोग करने लायक नहीं रहेगी* ?
- *इसका मूल्य कितना है* ?
- *इसके रख-रखाव हेतु क्या सावधानी लिखी है* ?

(*ख*) *हर बीमारी के कुछ शुरुआती लक्षण होते हैं, जैसे - खाँसी होने पर गले में दर्द होने लगता है, बार-बार खाँसी आने लगती है। सोचो और बताओ - इन बीमारियो*

को तुम किन लक्षणों से पहचानोगे -

- *बुखार*
- *जुकाम*
- *पीलिया*

3. *भाषा के रंग -*

(*क*) *चित्र को देखकर मुहावरे बनाएँ -*

(*ख*) *नीचे दिए मुहावरों का अर्थ बताते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -*

1. *पसीना-पसीना होना* 2. *चेहरा पीला पड़ जाना*

3. *आग बबूला होना* 4. *दफा हो जाना*

4. *आपकी कलम से -*

(*क*) *आप अथवा आपके घर में कभी न कभी कोई बीमार पड़े होंगे* ? *बताइए -*

- *कौन बीमार पड़ा*?
- *कब बीमार पड़े*?
- *क्या बीमारी थी*?
- *कैसे ठीक हुए*?

(*ख*) *किसी के बीमार हो जाने पर बहुत सारे लोग जो कि डॉक्टर नहीं होते हैं फिर भी तमाम तरह के इलाज बताने लगते हैं। सोचिए और लिखिए -*

- *बीमार होने पर हमें क्या-क्या करना चाहिए* ?

- *क्या नहीं करना चाहिए* ?

(*ग*) *जब हम बीमार पड़ जाते हैं तो स्कूल से छुट्टी लेनी होती है। वह चिट्ठी कैसे लिखी जाती है, लिखिए।*

जैसे-मुँह में पानी आना

5. *अब करने की बारी* -

(*क*) *रेडियो/टीवी से* -

भारतीय सिनेमा में 'चंद्रमा' पर बहुत से गाने बने हैं। कुछ गानों के बारे में पता करके उनके मुखड़े (*स्थायी*) *लिखिए।*

(*ख*) *इस कहानी का कक्षा में मंचन कीजिए।*

6. *मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

7. *इस कहानी से* -

(*क*) *मैंने सीखा* -

(*ख*) *मैं करूँगी/करूँगा* -

यह भी जानिए -

यह भी जानिए –

<table>
<tr><th>बीमारी</th><th>लक्षण</th><th>कारण</th><th>सावधानियाँ</th></tr>
<tr><td>मलेरिया</td><td>सर्दी लगना,
कँपकँपी आना,
बेचैनी होना</td><td>गंदे पानी में पनपने वाले मच्छर के काटने से</td><td rowspan="3">● अपने आस–पास पानी जमा न होने दें।
● कूलर की नियमित सफाई करें।
● ज्यादा से ज्यादा तरल पदार्थों का सेवन करें। खून की जाँच कराएँ।
● लक्षण होने पर तुरंत डॉक्टर से मिलें।
● डॉक्टर द्वारा बताए समय तक दवा लें।</td></tr>
<tr><td>डेंगू</td><td>सिर दर्द, माँसपेशियों व जोड़ों में दर्द, बुखार आना, बुखार के दौरान प्लेटलेट्स कम होना।</td><td>एडीज मच्छर के काटने से</td></tr>
<tr><td>चिकनगुनिया</td><td>तेज बुखार, जोड़ों में दर्द, शरीर पर चकत्ते पड़ना, उल्टी</td><td>वायरस जनित संक्रामक बीमारी एडीज मच्छर के काटने से</td></tr>
</table>

11-बाल गंगाधर तिलक

एक बार अध्यापक ने कक्षा में छात्रों को गणित के कुछ प्रश्न हल करने के लिए दिए। कक्षा के सभी छात्र तल्लीन होकर अपना कार्य कर रहे थे। एक छात्र चुपचाप बैठा था। शिक्षक ने उससे पूछा, "तुम गणित के प्रश्न क्यों हल नहीं कर रहे हो?" छात्र ने कहा, "मैंने प्रश्नों को हल कर लिया है।" आश्चर्यचकित शिक्षक ने पूछा, "कहाँ?" छात्र- 'मस्तिष्क में।' शिक्षक - 'अच्छा तो उत्तर बताओ।' बालक ने खड़े होकर शिक्षक द्वारा दिए गए सारे प्रश्नों को मौखिक रूप से ही हल कर दिया। अद्भुत प्रतिभा का धनी यह बालक गंगाधर तिलक था।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 *जुलाई सन्* 1856 *ई. को महाराष्ट्र राज्य में कोंकण जिले के रत्नागिरि नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर राव और माता का नाम पार्वती बाई था। इनका बचपन का नाम 'केशव' था। छोटा होने के कारण घर में लोग इन्हें 'बाल' कहकर पुकारते थे। बाद में यही नाम प्रचलित हो गया। इनके पिता की शिक्षा में गहरी रुचि थी। उन्होंने अपने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा पर पूरा ध्यान दिया।तिलक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। विद्यालय जाने से पूर्व ही इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रंथ याद कर लिए थे। इनकी प्रतिभा से शिक्षक बहुत प्रभावित थे। गणित, इतिहास और संस्कृत इनके प्रिय विषय थे। गणित के कठिन से कठिन प्रश्न वे*

मौखिक रूप से हल कर लेते थे।

किशोरावस्था के पूर्व ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया। इनका विवाह सत्यभामा बाई से हुआ। विवाह में इन्होंने दहेज में कुछ नहीं लिया। सन् 1877 *ई*0 *मे बी*0*ए*0 *परीक्षा उत्तीर्ण कर इन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त कर ली। इसके बाद वकालत करने लगे।*

तिलक शिक्षा को स्वतंत्रता का आधार मानते थे। इन्होंने यह भी अनुभव किया कि देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग भी आवश्यक है। अतः इन्होंने 'केसरी' तथा 'मराठा' नाम के समाचार पत्र भी निकाले। इन समाचार पत्रों के माध्यम से ये ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करने का संदेश देते थे। पत्रों के माध्यम से इन्होंने स्वतंत्रता के प्रति लोगों में नयी चेतना जगाई। इनके लेख सबका ध्यान आकर्षित करते थे। इनके कार्यों और विचारों के कारण सब लोग इनका आदर करने लगे और इनके नाम के साथ 'लोकमान्य' शब्द प्रचलित हो गया।

तिलक ने विधवा-विवाह एवं महिला-शिक्षा पर विशेष जोर दिया। बाल-विवाह जैसी कुरीति का विरोध किया तथा मजदूरों की दशा सुधारने के लिए आंदोलन चलाया। इन्होंने स्वदेशी की भावना का भी प्रचार किया।

तिलक के स्वतंत्र एवं उग्र विचारों से रुष्ट होकर अंग्रेज सरकार इन्हें बार-बार जेल में डालती रही। सन् 1907 *के सूरत कांग्रेस अधिवेशन में इन्होंने सिंह गर्जना की- 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे।' ब्रिटिश सरकार ने इन पर सन्* 1908 *में राजद्रोह का मुकदमा चलाया और छह वर्ष की सजा देकर मांडले (म्याँमार) जेल में डाल दिया। यह समाचार पूरे भारत में आग की तरह फैल गया। इसके विरोध में मुंबई के बाजार तथा मिलें बंद हो गईं।*

जेल में इन्होंने तीन पुस्तकों की रचना की। पहली पुस्तक थी 'गीता रहस्य' जो बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक से इनकी विद्वता और अध्ययनशीलता का परिचय मिलता है। अन्य दो पुस्तकें थीं - 'ओरियन' और 'आर्कटिक होम इन वेदाज'। छह वर्ष की

सजा पूरी कर वे 1914 *में मांडले जेल से बाहर आए। बाहर आकर वे फिर स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य में जी जान से जुट गए। अपनी लगन तथा निष्ठा के बल पर इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सुदृढ़ आधारशिला रखी।*

स्वतंत्रता-संग्राम का यह चमकता नक्षत्र 1 *अगस्त* 1920 *को सदा के लिए अस्त हो गया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचार, देशभक्ति और स्वातंत्र्य-प्रेम हमारे लिए सदा ही प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।*

अभ्यास

शब्दार्थ-

तल्लीन = *पूरी तरह लगा हुआ*

निष्ठा = *विश्वास, श्रद्धा*

प्रतिभा = *योग्यता*

कुशाग्र बुद्धि = *तीक्ष्ण बुद्धिवाला*

रुष्ट = *नाराज*

जन्मसिद्ध = *जन्म से प्राप्त*

कुरीति = *बुरी प्रथा*

विद्वता = *ज्ञान, अध्ययनशीलता*

1. *बोध प्रश्नः उत्तर लिखिए* -

(*क*) *बालक गंगाधर ने शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों को कैसे हल किया* ?

(ख) तिलक के नाम के साथ 'लोकमान्य' शब्द कैसे जुड़ा ?

(ग) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने क्या नारा दिया ?

(घ) पाठ में लोकमान्य तिलक की किन-किन विशेषताओं का वर्णन किया गया है ?

2. भाषा के रंग -

(क) स पाठ में आपको जिन-जिन शब्दों के मतलब (अर्थ) नहीं पता हैं, उन्हें छाँटकर अपनी कॉपी पर लिखिए।

- शब्दकोश या शिक्षक की मदद से इनके अर्थ पता कीजिए।
- अब इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(ख) प्रत्येक वाक्य की खाली जगह में उसके दाईं ओर लिखे शब्द का सही रूप लिखिए- उदाहरण के लिए पहला वाक्य देखिए -

- तिलक नियमित रूप से व्यायाम करते थे। (नियम)
- तिलक शिक्षा को .... का आधार मानते थे। (स्वतंत्र)
- उनके लेख सबका ध्यान .... करते थे। (आकर्षण)

(ग) शब्दों को उदाहरण के अनुसार स्त्रीलिंग में बदलिए - जैसे: लेखक - लेखिका शिक्षक -

बालक - नायक -

(घ) शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़िए -

आश्चर्य, कुशाग्र, राष्ट्रीय, संघर्ष, संदेश, आकर्षित, स्रोत, रुष्ट, विद्वता।

(ङ) समान अर्थ वाले शब्द बताइए -

रुष्ट - सम्मान -

कठिन - निर्धन -

(*च*) *'स्वतंत्र' शब्द में 'ता' लगाने पर 'स्वतंत्रता' बनता है। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में 'ता' जोड़कर नए शब्द बनाइए -*

निर्धन - सज्जन - कठोर -

मानव - उदार - कोमल -

(*छ*) *नीचे दिए गए सर्वनाम शब्दों के बहुवचन रूप पढ़िए, समझिए और पूरा कीजिए -*

सर्वनाम शब्द	बहुवचन रूप	सर्वनाम शब्द	बहुवचन रूप
वह	वे	मैं	
यह	ये	मुझे	
उसने	उन्होंने	मुझसे	
उसका	उनका	मेरे लिए	
उसके	उनके	मेरा	
इसने	इन्होंने	मुझमें	
इसका	इनका	किसका	
		किस पर	

3. *आपकी कलम से -*

(*क*) *नीचे लिखे प्रत्येक शीर्षक पर दो-तीन वाक्य लिखिए -*

- *तिलक का बचपन*
- *तिलक की शिक्षा*
- *स्वतंत्रता के लिए तिलक का योगदान*

(*ख*) *पाठ में आए इन वाक्यों में कुछ सवालों के जवाब छिपे हैं। उदाहरण के अनुसार इन वाक्यों पर प्रश्न बनाइए -*

जवाब सवाल-

- ***बाल गंगाधर तिलक का जन्म बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी नामक स्थान में हुआ था। कहाँ हुआ था?***

में हुआ था।

- ***तिलक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे।*** .....
- ***तिलक शिक्षा को स्वतंत्रता का आधार*.......*मानते थे।***
- ***तिलक ने जेल में तीन पुस्तकों की*** ......***रचना की।***

4. ***अब करने की बारी*** -

लोकमान्य तिलक के जीवन से जुड़े रोचक प्रसंगों का संकलन कीजिए।

5. ***मेरे दो प्रश्न***: ***पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए*** -

6. ***इस पाठ से -***

(*क*) ***मैंने सीखा*** - ....

(***ख***) ***मैं करूँगी/करूँगा*** - ....

कितना सीखा-2

1. उत्तर दीजिए -

(क) 'हाँ में हाँ' लोककथा से क्या संदेश मिलता है ?

(ख) युवक माधो सिंह के मन में क्या सपना उभरता था ?

(ग) नानी ने अदिति को टोकरी में बाँधकर कौन सा फल दिया था ?

(घ) 'ग्राम श्री' कविता में किस ऋतु की झलक मिलती है ? उस ऋतु की पाँच विशेषताएं बताइए।

(ङ) राजकुमारी ने विदूषक से चंद्रमा के विषय में क्या बताया ?

(च) लोकमान्य तिलक की विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए ?

2. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं, उन्हें किसने कहा है ? लिखिए -

(क) चंद्रमा पैंतीस हजार मील दूर है। ....

(ख) चंद्रमा एक लाख पचास हजार ......

मील दूर है।

(ग) मैंने प्रश्नों को हल कर लिया है। ....

(घ) इसका स्वाद खट्टा है। ....

(ङ) मैं इस महान कार्य में आपके साथ हूँ। ....

3. अधूरी पंक्तियाँ पूरी कीजिए -

झर रहे ढाक, पीपल के दल,

....

लहलह पालक, महमह

....

4. *नीचे दी गई पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -*

(*क*) *मलेथा की प्यासी धरती पर पानी बहने लगा।*

(*ख*) *पालकी पर लदकर चलना तो जीते जी ही मुर्दों की तरह जाने के बराबर है।*

5. *नीचे दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -*

मेजबान, पर्यावरण, प्रतीक्षा, मंजिल, शानदार, सावधानियाँ

6. *कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम शब्दों में से उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए-*

(*वह, उसका, तुम, तुम्हारे*)

(*क*) .... *घर मेरे घर के पास है।*

(*ख*) .... *प्रतिदिन व्यायाम करता है।*

(*ग*) .... *पिता जी का क्या नाम है* ?

(*घ*) *मुझे विश्वास है कि* .... *जरूर आओगे।*

7. *नीचे दिए गए शब्दों का विशेषण/क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग करते हुए*

एक-एक वाक्य बनाइए -

वीर, *धीरे-धीरे*, *सुंदर*, *फूट-फूटकर*

8. ***ऐसे एक-एक वाक्यों की रचना कीजिए जिनमें- अल्प विराम***, ***पूर्ण विराम तथा प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग हुआ हो।***

9. ***अपने क्षेत्र में प्रचलित कोई लोककथा सुनाइए।***

10. ***नीचे दिए गए शब्दों में लगे उपसर्ग और प्रत्यय को उनके सामने लिखिए -***

शब्द उपसर्ग, शब्द प्रत्यय

प्रहार प्र धनवान वान

विहार ....***शक्तिमान*** ....

आहार .... ***बलवान*** ....

अनुपस्थित ...... ***मूल्यवान*** ....

निरुत्साहित .... ***श्रीमान*** ......

अपने आप-2

श्रवण कुमार

श्रवण कुमार अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। उनके वृद्ध माता-पिता देख नही सकते थे। श्रवण उनकी भली प्रकार देख-भाल और सेवा करते थे।एक बार माता-पिता ने कहा, "बेटा, हम तीर्थ यात्रा करना चाहते हैं, परंतु क्या करें, देख नहीं सकते, अतः स्वयं यात्रा करने में समर्थ नहीं हैं।" श्रवण बोले "आप चिंता न करें। मैं आपको यात्रा पर ले चलूँगा।" श्रवण ने दो टोकरियों से काँवर तैयार की। उसमें एक ओर माता को और दूसरी ओर पिता को बिठाया। काँवर उठाकर वह यात्रा पर चल दिए।

श्रवण ने उन्हें अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण कराया। एक बार वे एक वन से होकर जा रहे थे। मार्ग में वृद्ध माता-पिता को प्यास लगी। श्रवण ने माता-पिता को छाँव में बिठाया और घड़ा लेकर पास ही बहती नदी से पानी लाने चले गए।

उसी समय अयोध्या के राजा दशरथ वन में आखेट कर रहे थे। घड़े में पानी भरने की आवाज सुनकर उन्हें लगा कि कोई जंगली जानवर नदी में पानी पी रहा है। राजा ने तुरंत शब्द-भेदी बाण चला दिया।

बाण लगते ही श्रवण चीत्कार कर भूमि पर गिर पड़े। राजा दौड़ कर वहाँ पहुँचे तो अपनी भूल पर उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ, परंतु अब क्या हो सकता था?

श्रवण ने कहा, "मेरे वृद्ध माता-पिता मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कृपा कर उन्हें पानी पिला दें।" यह कहकर श्रवण ने प्राण त्याग दिए। राजा बहुत दुःखी मन से उनके वृद्ध माता-पिता के पास गए। उन्हें अपना अपराध बताकर क्षमा माँगी, किंतु माता-पिता

के दुःख की सीमा न रही। वृद्ध पिता ने कहा, "जिस प्रकार पुत्र वियोग में हम प्राण त्याग रहे हैं उसी प्रकार तुम्हें भी अपने पुत्र वियोग का दुःख भोगना होगा।" श्रवण कुमार का नाम उनकी मातृ-पितृ भक्ति के लिए अमर है।

श्रवण कुमार की कथा पर प्रश्न बनाकर अपने मित्रों से पूछिए।

12-भक्ति-नीति-माधुरी

कबीर

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।

वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।

परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर।

जहाँ ज्ञान तहँ धर्म है, जहाँ झूठ तहँ पाप।

जहाँ लोभ तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप।

कबीर जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धार्मिक-भेदभाव आदि का जोरदार खंडन करने वाले सन्त कवि थे। इनका दृष्टिकोण मानवतावादी था। इनकी रचनाएँ तीन रूपों - 'साखी' 'सबद' और 'रमैनी' में मिलती हैं।

रहीम

|
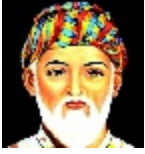
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।

रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहिं, लिपटे रहत भुजंग।

बड़े बड़ाई न करैं, बड़े न बोलैं बोल।

रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल।

रहीम सम्राट अकबर के 'नवरत्नों' में से एक थे। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। इनके नीतिपरक दोहे जन-जन में प्रसिद्ध हैं। 'रहीम दोहावली', 'रहीम सतसई' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

सूरदास

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी ?

किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लाँबी-मोटी।

काढ़त-गुहत न्हवावत जैहैं, नागिनि सी भुइँ लोटी।

काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।

सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

सूरदास आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क के किनारे 'रुनकता' नामक गाँव में पैदा हुए थे। इन्होंने कृष्ण की लीलाओं का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। ये कृष्ण भक्त कवियो में सर्वोपरि हैं। सूरसागर इनका प्रसिद्ध महाकाव्य है।

अभ्यास

शब्दार्थ

हिरदै = हृदय भखै = खाता है

संचै = एकत्र करना चिरजीवौ = दीर्घायु

कुसंग = बुरी संगत जोटी = जोड़ी

बल की बेनी = बलदाऊ की चोटी काढ़त = बाल झाड़ना

गुहत = गूहना या चोटी करना भूइँ = जमीन

काचौ = कच्चा पचि-पचि = बार-बार

भुजंग = सर्प विष = जहर

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) ईश्वर किस तरह के लोगों के हृदय में निवास करता है ?

(ख) सज्जन व्यक्तियों की तुलना वृक्षों और नदियों से क्यों की गई है ?

(ग) बुरी संगत का प्रभाव किस प्रकार के लोगों पर नहीं पड़ता है ?

(घ) सज्जन व्यक्तियों की तुलना हीरे से क्यों की गई है ?

(ङ) कृष्ण अपनी माँ यशोदा से क्या शिकायत करते हैं ?

2. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) 'परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर'।

(ख) 'साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप'।

(ग) 'रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय'।

(घ) 'रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल'।

(ङ) 'काचै दूध पियावत पचि-पचि, देत न माखन रोटी'।

3. अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए -

(क) जहाँ ज्ञान तहँ धर्म है ....

(ख) बिगरी बात बने नहीं ....

(ग) बड़े बड़ाई न करैं ....

(घ) रहिमन हीरा कब कहे ....

4. तद्भव शब्दों का मिलान तत्सम शब्दों से कीजिए:-

'क' 'ख'

तद्भव शब्द तत्सम शब्द

बिसाल परमार्थ

परमारथ विशाल

छिमा मूर्ति

संचै वृक्ष

वृच्छ संचय

मूरति क्षमा

समय के साथ संसार की सभी भाषाओं के रूप बदलते हैं। संस्कृत के अनेक शब्द पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिंदी में आए हैं, इनमें से कुछ शब्द तो ज्यो का त्यों अपने मूल रूप में हैं और कुछ शब्द देश-काल के प्रभाव के कारण बदल गए हैं।

ऐसे शब्द जो संस्कृत से बदले रूप में हिंदी में आए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे - कालम 'क' के शब्द।

संस्कृत भाषा से मूल रूप में हिंदी में आए शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे - कालम 'ख' के शब्द।

5. *आपकी कलम से -*

कबीर और रहीम के दोहों में कई सीख छिपी हैं। उन्हें पता करके अपनी कॉपी में लिखिए।

6. *अब करने की बारी -*

(*क*) *इस पाठ के दोहे एवं पदों को प्रतिदिन पढ़कर दोहराइए। आप देखेंगे कि ये दोहे*

एवं पद आपको स्वतः याद हो जाएँगे। इन्हें याद करके कक्षा में सुनाइए।

(ख) कबीर और रहीम के अन्य दो-दो दोहों को ढूँढकर लिखिए।

(ग) रहीम, कबीर, सूरदास जैसे बहुत से कवियों की रचनाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अपने शिक्षक से अनुरोध करके कंप्यूटर अथवा मोबाइल फोन पर इन्हें सुनिए तथा वैसे ही सुनाने का अभ्यास कीजिए।

(घ) सूर्यकांत अपने पिता जी के साथ दशहरे का मेला देखने शहर गया। वहाँ जगह-जगह इस प्रकार के पोस्टर लगे थे -

बताइए -

- इस पोस्टर में किस बारे में बताया गया है ?
- यह आयोजन किसके द्वारा किया जा रहा है ?
- यह सम्मेलन किस अवसर पर किया जा रहा है ?
- कार्यक्रम की तिथि और समय क्या है ?
- कवि सम्मेलन कहाँ होगा ?
- सूर्यकांत को इसमें जाना चाहिए या नहीं, क्यों ?

दशहरा के पावन अवसर पर उत्तर प्रदेश सद्भावना समिति, ललितपुर की प्रस्तुति

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

दिनांक: 19/10/2018 समय: सायं 6 बजे से

स्थान: दशहरा ग्राउण्ड, ललितपुर

कृपया अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कवियों की रचनाओं का आनंद लें।

13 - हौंसला

जुलाई का दूसरा सप्ताह। पंद्रह जुलाई सन् उन्नीस सौ उन्यासी। अपनी माँ के साथ हमारी कक्षा में एक बच्चा आया। उसका उसी दिन खिला हुआ था। नाम- माइकल। स्वस्थ, गोल-मटोल। छोटी-छोटी आँखें, घुँघराले बाल, हँसता हुआ-सा चेहरा। कुछ ही दिनों में अपने व्यवहार और प्रतिभा के बल पर वह कक्षा में सबकी आँखों का तारा हो गया।

माइकल कब मेरा सबसे खास दोस्त हो गया, मुझे भी पता न चला।

साथ-साथ रहना, खेलना, पढ़ना, खाना-पीना। मित्र के साथ-साथ वह मेरा प्रतिद्वंद्वी भी था। कक्षा में सबसे अधिक अंक पाने के लिए हम दोनों में होड़ लगी रहती। वह संगीत में प्रथम रहता तो मैं खेल में। माइकल चित्रकला में पुरस्कार पाता, मैं भाषण में। उसे गणित में ज्यादा अंक मिलते तो मुझे हिंदी में।

एक दिन सुबह स्कूल खुलते ही प्रधानाचार्य जी ने हमें अपने कक्ष में बुलवा लिया। बोले, "बेटा, तुम दोनों ने हमारे विद्यालय का सदैव गौरव बढ़ाया है। चेन्नई में बच्चो की राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता होने वाली है। मैंने वहाँ के लिए तुम दोनों का नाम भेज दिया है। मैं चाहता हूँ, कि तुम देश भर में अपने विद्यालय का नाम रोशन करो। तुम्हारी शिक्षिका मंजीत साथ रहेंगी। अगले सप्ताह ही जाना होगा, इसलिए मंजीत जी से मिलकर तैयारियाँ कर लो।" हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। मंजीत मैडम से मिलकर बात की और जी-जान से प्रतियोगिता की तैयारियों में जुट गए।

पूरे एक सप्ताह तक हम चेन्नई में रहे। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। माइकल ने संगीत में स्वर्ण पदक जीता, मैंने भाषण में। हमें और भी कई पुरस्कार मिले। वहाँ कई प्रदेशों के बच्चे हमारे दोस्त बन गए। अब हम जल्द से जल्द घर पहुँचकर इस खुशी को सबसे साझा करना चाहते थे। बस पकड़ने की जल्दी में माइकल ने चौराहे पर जली लाल बत्ती नहीं देखी और दूसरी ओर से आ रहे वाहन की चपेट में आ गया। होश आने पर वह अस्पताल में था और दोनों पैर गँवा चुका था। रंग में भंग पड़ गया। सबकी आँखों में सिर्फ आँसू थे।

सुना था कि विपत्ति कभी बताकर नहीं आती। कई बार हमारी जरा-सी असावधानी जीवन भर का दुख बन जाती है। वापसी में ऐसा ही हुआ। इस बीच माइकल के पिता जी का तबादला चंडीगढ़ हो गया। अपनी माँ, पिता जी और बहन के साथ माइकल शहर छोड़ रहा था तो लग रहा था जैसे मेरे शरीर से कोई प्राण ले जा रहा है। माइकल चंडीगढ़ जा चुका था। कुछ दिनांे तक दीदी की चिट्ठियाँ आती रहीं, जो धीरे-धीरे कम होती गईं। वर्षों के अंतराल ने हमें एक दूसरे से लगभग दूर कर दिया था।

शिक्षा पूरी करने के बाद मैं अध्यापक बन गया। कक्षा के बच्चों में अभी भी मेरी निगाहें माइकल को ढूँढ़ती, पर माइकल का कहीं कोई अता-पता न था। कहते हैं, इतिहास खुद को दोहराता है। लगभग ऐसा ही हुआ। अपने विद्यालय के बच्चों की टीम लेकर मुझे मुम्बई जाना पड़ा। इस बार मैं बहुत सावधान था। "सभी बच्चे यातायात के नियमों का पालन करेंगे" मैंने चेतावनीपूर्वक कहा।

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन प्रारम्भ हुआ। उद्घोषक ने बताया कि उद्घाटन एक महान संगीतज्ञ के द्वारा किया जाना है। परदे के पीछे से वाद्य-यंत्र बजना प्रारंभ हुए। मंच पर धीरे-धीरे अंधकार से प्रकाश फैलने लगा। व्हील चेयर (पहिया कुर्सी) पर माइक हाथ में थामे मुख्य अतिथि मंच पर आए। सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका

स्वागत किया। अरे ! यह तो मेरे बचपन का मित्र माइकल है - मैं चौंक उठा। मेरी आँखें खुशी से भर आईं। माइकल ने बेहद मधुर गीत सुनाया। गाते-गाते उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी। मैंने हाथ हिलाकर अभिवादन किया। कार्यक्रम समाप्त होते ही मैं दौड़कर मंच पर गया। माइकल ने मुझे गले लगा लिया। "हम दोनों बचपन के मित्र हैं"- माइकल ने मेरे विद्यार्थियों को बताया। इसके बाद माइकल हम सबको वहाँ ले गया, जहाँ वह रुका हुआ था।

उसने बताया - ''तुम्हें याद है न अवनीश वह दुर्घटना। टाँगें गँवा देने पर मैं जीवन से निराश हो गया था। अपने आप को अक्षम समझने लगा था। उस समय रोज़ी दीदी ने मुझे हताशा से उबारा। दीदी मुझे संभालतीं, किताबें लातीं, कैसेट लातीं। उन्होंने मुझे गिटार भी लाकर दिया। 'तुम एक दिन जरूर प्रसिद्ध संगीतकार बनोगे' दीदी कहतीं। धीरे-धीरे मैंने संगीत का अभ्यास प्रारंभ किया और अपने सपने को साकार किया। मैं अपना एक संगीत का स्कूल भी चलाता हूँ, जहाँ तमाम बच्चे मुफ्त में संगीत सीख रहे हैं।''

बच्चे उत्सुकता से माइकल की बातें सुन रहे थे। वह कह रहा था, "प्यारे बच्चो! बड़ी से बड़ी विपत्ति भी सब कुछ समाप्त नहीं करती। विपत्ति के समय हौंसला बनाए रखना जरूरी होता है। अगर आपमें हिम्मत है, हौंसला है तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त होकर रहेगा।"

अभ्यास

शब्दार्थ-

बुलंदी = ऊँचाई,

उत्कर्ष प्रतिद्वंद्वी = मुकाबला करने वाला

दाखिला = प्रवेश

प्रतियोगिता = होड़

प्रतिभा = असाधारण बुद्धिमत्ता या गुण

हौंसला = उत्साह

लक्ष्य = उद्देश्य

हताशा = निराशा

अंतराल = कालों के मध्य का अवकाश

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) माइकल किस गुण के कारण सबकी आँखों का तारा हो गया था ?

(ख) माइकल के साथ दुर्घटना क्यों हुई ?

(ग) दुर्घटना से माइकल पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(घ) रोज़ी ने माइकल को हताशा से कैसे उबारा ?

(ङ) माइकल अपना सपना कैसे पूरा कर पाया ?

2. किसने किससे कहा ?

(क) "बेटा! तुम दोनों ने हमारे विघालय का सदैव गौरव बढ़ाया है।"

(ख) "तुम एक दिन जरूर प्रसिद्ध संगीतकार बनोगे।"

(ग) "सभी बच्चे यातायात के नियमों का पालन करेंगे।"

(घ) "हम दोनों बचपन के मित्र हैं।"

(ङ) "*अगर आपमें हिम्मत है, हौसला है तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त होकर रहेगा।*"

3. *सोच-विचार: बताइए -*

(*क*) *पाठ का शीर्षक 'हौसला' है। इस पाठ को तुम क्या शीर्षक देना चाहोगे* ?

(*ख*) *पाठ के प्रारंभ में लेखक ने अपने मित्र माइकल के बारे में कुछ बातें बताईं हैं।*

जैसे - स्वस्थ, गोल-मटोल, छोटी-छोटी आँखें, घुँघराले बाल, हँसता हुआ सा चेहरा।

इन बातों से माइकल का हुलिया (*शक्ल-सूरत का विवरण*) *पता चलता है। आप भी अपने किसी दोस्त के बारे में बताइए कि उसका हुलिया कैसा है* ?

जैसे - आँख का तारा होना

(*ख*) *नीचे दिए मुहावरों का अर्थ लिखिए, वाक्यों में प्रयोग कीजिए -*

जी-जान से जुटना, रंग में भंग पड़ना, आँखों का तारा होना

(*ग*) *शब्दों का शुद्ध उच्चारण और सुलेख कीजिए -*

व्यवहार, प्रतिद्वंद्वी, प्रेरणा, विभिन्न, असंतुलित, सर्वाधिक, दृष्टि

(*घ*) *रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों के विलोम शब्दों से कीजिए -*

(*अंधकार, आशा, रोता हुआ, असावधान, शत्रु*)

- *बालक की छोटी-छोटी आँखें, घुँघराले बाल और .... चेहरा था।*
- *स टीम लेकर मुम्बई जाते समय मैं बहुत .... था।*
- *मंच पर धीरे-धीरे .... फैलने लगा।*
- *माइकल ने छात्रों को बताया कि हम दोनों बचपन के .... हैं।*
- *रोज़ी दीदी ने मुझे .... से उबारा।*
- (ङ) *इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए -*

भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्य काल-

माइकल ने गाना गाया। माइकल गाना गा रहा है। माइकल गाना गाएगा।

रोज़ी पुस्तक लाई। रोज़ी पुस्तक ला रही है। रोज़ी पुस्तक लाएगी।

अब, नीचे दिए गए वाक्यों के सामने उनके काल लिखिए -

वाक्य काल

- *पिता जी ने बहुत सी बातें बताईं।* ......
- *कल विद्यालय की छुट्टी रहेगी।* ....
- *रजिया खाना खा रही है।* ....
- *अगले माह दीपावली है।* ....
- *राघव और श्रेया व्यायाम कर चुके हैं।* ....

5. *आपकी कलम से -*

(*क*) *बस पकड़ने की जल्दी में माइकल ने चौराहे पर जली लाल बत्ती नहीं देखी और दूसरी ओर से आ रहे वाहन की चपेट में आकर अपने दोनों पैर गँवा दिए। आपने भी कोई ऐसी घटना देखी सुनी होगी जो जरा-सी असावधानी के कारण घटी हो, उसको अपने शब्दों में लिखिए।*

(*ख*) *नीचे दिए गए यातायात से संबंधित संकेतों का क्या आशय है? लिखिए -*

हॉर्न न बजाएं ....

(*ग*) *हमें सड़क पर चलते समय क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए* ? *लिखिए।*

6. *अब करने की बारी -*

यातायात सुरक्षा से संबंधित पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाइए।

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

8. इस कहानी से -

(क) *मैंने सीखा* - ....

(ख) *मैं करूँगी/करूँगा* - ....

यह भी जानिए -

- *हमेशा पैदल पार पथ* (*जेब्रा क्रासिंग*) *का प्रयोग करना चाहिए।*
- *दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनना अनिवार्य है।*
- *चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट पहनना अनिवार्य है।*
- *वाहन को निर्धारित गति सीमा से अधिक तेज न चलाएँ।*
- *वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें।*
- *दिव्यांगों को विकास की मुख्य धारा में शामिल करने के उद्देश्य से* 16 *दिसंबर*, 2016 *को* '*दिव्यांगजन अधिकार विधेयक*, 2016' *पारित किया गया है।*

14 - ओणम

भारत को 'त्योहारों का देश' कहा जाता है। यहाँ वर्ष भर त्योहारों की धूम रहती है। ये त्योहार जन-जीवन में चेतना, उत्साह और एकता का संचार करते हैं।

दक्षिण भारत में केरल राज्य का एक विशेष त्योहार है - ओणम। लगातार तीन माह की भारी वर्षा के बाद आकाश स्वच्छ और चमकीला नीला हो जाता है। तालाबों, झीलों, नदियों और झरनों में जल की बहुतायत हो जाती है। कमल और लिली पूरे सौंदर्य के साथ खिलकर महक उठते हैं। फसलें पककर झूमने लगती हैं। यही समय होता है फसलों के घर आने का, झूमने और खुशियों का त्योहार ओणम मनाने का। यह श्रावण मास में मनाया जाता है। मलयालम में इस माह को 'चिंगमासम' कहते हैं।

'ओणम' के साथ राजा महाबलि की पौराणिक कथा जुड़ी है। प्राचीन काल में महाबलि नाम के राजा केरल में राज्य करते थे। उनके राज्य में चारों ओर सुख और समृद्धि फैली थी। महाबलि अत्यंत पराक्रमी थे। उन्होंने अपने पराक्रम से पृथ्वी और पाताल लोक का स्वामी बनने के बाद आकाश की ओर अधिकार बढ़ाना प्रारंभ किया। देवराज इंद्र की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वामनरूप धारण कर महाबलि से दान में संपूर्ण पृथ्वी और आकाश माँग लिया तथा महाबलि को पाताल लोक भेज दिया।

राजा महाबलि की प्रार्थना पर प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें वर्ष में एक बार पृथ्वी पर अपने राज्य में आने का आशीर्वाद दिया। केरलवासियों का दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक वर्ष महाबलि 'तिरुओणम' के दिन केरल राज्य में आते हैं। इस दिन महिलाएँ उनके स्वागत के लिए अपने घरों के प्रवेशद्वार विभिन्न प्रकार से सजाती है और रात्रि में दीप जलाती हैं।

ओणम आनंद और उल्लास का पर्व है। यह पाँच दिन तक मनाया जाता है। पहले दिन घर की लिपाई-पुताई और पास-पड़ोस को स्वच्छ किया जाता है। सब घरों के आँगन रंग-बिरंगे फूलों की गोलाकार आकृतियों (फूलचक्रों) से सजाए जाते हैं, जिसे 'पूक्कलम' कहते हैं। पूक्कलम की सजावट में परिवार के स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी उत्साहपूर्वक योगदान देते हैं। विष्णु और महाबलि की मूर्तियों को चावल के आटे और नन्हे-नन्हे सफेद द्रोण पुष्पों से सजाया जाता है। पूक्कलम के निकट दीप रखकर इन मूर्तियों का पूजन किया जाता है।

ओणम का दूसरा दिन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इसे 'तिरुओणम' कहते हैं। 'तिरुओणम' पारिवारिक जनों के मिलन, पारस्परिक प्रेम और सहयोग का पर्व है। इस दिन बाहर गए हुए लोग परिवार में लौट आते हैं और उल्लासपूर्वक मिलजुलकर त्योहार मनाते हैं। सभी लोग नए और स्वच्छ वस्त्र धारण करते हैं। मध्याह्न काल में सब एक साथ बैठकर केले के पत्ते पर भोजन करते हैं। यहाँ केले के पत्ते पर भोजन करना अत्यंत पवित्र माना जाता है।

ओणम के दिनों में भोजन में विविध प्रकार के व्यंजन और पकवान सम्मिलित रहते हैं। इनमें चावल, दाल, पापड़, सांभर, खिचड़ी, उप्पेरी (पकौड़ी), पायसम् (खीर) आदि मुख्य हैं। धान, नारियल और केला केरल की मुख्य उपजें हैं। विविध पकवान और व्यंजन इन्हीं से बनाए जाते हैं।

ओणम के अवसर पर खेल और मनोरंजन के अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बालिकाएँ और स्त्रियाँ ताली बजाते हुए समूह में मनमोहक नृत्य करती हैं, जिसे 'कैकोट्टिकली' नृत्य कहा जाता है। नाचते समय वे गाती हैं -

हमने घर को खूब सजाया

आओ महाबलि, आओ।

फैले सुख और शांति सभी में

सबको वर दे जाओ' .....

गाँव और नगरों में खेलकूद की अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। इनमें नदियों और निकटवर्ती समुद्र में आयोजित नौका-दौड़ सर्वाधिक आकर्षित करती है। दूर-दूर

के गाँवों से सर्पाकार नौकाएं पंबा नदी के तट पर लाई जाती हैं और उनकी पूजा की जाती है। गाँव के सभी वर्गों के व्यक्ति विशालकाय नौकाओं में बैठते हैं। परंपरागत पोशाकें पहने नौकागीत गाते हुए सब लोग अपने चप्पू एक निश्चित ताल में एक साथ चलाते हैं। दौड़ में विजेता रही नौकाओं को पुरस्कृत किया जाता है। नौका-दौड़ को देखने के लिए देश-विदेश से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

माना जाता है कि 'तिरुओणम' के तीसरे दिन महाबलि अपने लोक को लौट जाते हैं। इसलिए तिरुओणम के दिन आँगन में बनाई गई कलाकृतियाँ तीसरे दिन हटा ली जाती हैं लेकिन अगले दो दिन तक ओणम चलता रहता है। केरलवासी बीते हुए ओणम की मधुर यादों और अगले ओणम की प्रतीक्षा में पुनः खुशी से अपने कार्यों में लग जाते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ-

श्रावण मास = सावन का महीना

उल्लास = खुशी

मध्याह्न काल = दोपहर का समय

चेतना = प्राण

पौराणिक कथा = पुराणों से ली गयी कथा

संचार = फैलना

पराक्रमी = वीर, प्रतापी

पर्यटक = सैलानी

1. बोध प्रश्न: उत्तर दीजिए -

(क) भारत को त्योहारों का देश क्यों कहा जाता है?

(ख) 'ओणम' कब मनाया जाता है?

(ग) 'ओणम' के साथ कौन-सी पौराणिक घटना जुड़ी है?

(घ) 'पूक्कलम' किसे कहते हैं और इसे कौन तैयार करते हैं?

(ङ) नौका-दौड़ प्रतियोगिता कैसे होती है?

(च) 'तिरुओणम' क्यों महत्त्वपूर्ण है ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) दक्षिण भारत में ओणम ...... का प्रमुख त्योहार है।

(ख) यह .... मास में मनाया जाता है।

(ग) ओणम ...... और .... का पर्व है।

(घ) तिरुओणम के ... दिन ... अपने लोक लौट जाते हैं।

3. सोच-विचार: बताइए -

'ओणम' का त्योहार फसलों के घर आने के समय मनाया जाता है। बताइए कि हमारे यहाँ कौन-कौन से त्योहार फसल चक्र से जुड़े हुए हैं ?

4. भाषा के रंग -

उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे अव्यय शब्दों को एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए -

यदि, तो - यदि वर्षा नहीं होती तो मैं समय से घर पहुँच जाता।

- जैसे ही, वैसे ही
- जहाँ तक, वहाँ तक
- इसलिए - क्योंकि

5. आपकी कलम से -

आपके गाँव/पड़ोस में भी कई त्योहार मनाए जाते होंगे। किसी त्योहार के बारे में अपने शब्दों में लिखिए -

- त्योहार का नाम

- मनाने का समय
- मनाने का कारण
- मनाने के तरीके
- मनाते समय सावधानियाँ

6. *अब करने की बारी* -

(*क*) *अपने किसी मित्र को अपने यहाँ मनाए जाने वाले त्योहार के बारे में पत्र लिखिए।*

(*ख*) *दूसरे राज्यों में मनाए जाने वाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए।*

अव्यय शब्द-

जब, तब, यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, किंतु, परंतु, लेकिन, इसलिए, अतः, और, तथा, नीचे, ऊपर, भीतर, बाहर, कब, क्यों .... ये शब्द हर स्थिति में अपने मूलरूप में बने रहते हैं। इनमें लिंग, वचन, पुरुष अथवा कारक के कारण कोई परिवर्तन नही होता है। ये अव्यय शब्द कहलाते हैं।

(*ग*) *बड़ो की मदद से जानिए* -

- केरल की राजधानी स केरल का प्रसिद्ध नृत्य
- केरल की भाषा स केरल का कोई और त्योहार
- केरल का खान-पान स केरल का प्रसिद्ध उद्योग-धंधा

(*घ*) *अपने यहाँ किसी त्योहार में गाया जाने वाला कोई गीत लिखिए।*

7. *मेरे दो प्रश्न*: *पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

8. *इस निबंध से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(ख) *मैं करूँगी/करूँगा* - ......

यह भी जानिए -

कलारीपयट्टू: 'कलारी' अथवा कलारीपयट्टू एक बहुत प्राचीन आत्मरक्षा कला है। यह एक असाधारण मार्शल आर्ट है जो अगस्त्य मुनि की देन है। मौलिक रूप से यह कला दक्षिण भारत में विकसित हुई। इस कला में आत्मरक्षा के साथ-साथ शरीर का हर प्रकार से व्यायाम करना शामिल है ताकि पूर्ण शरीर चुस्त-दुरुस्त व ऊर्जावान रहे।

15-वीर अभिमन्यु

महाभारत का युद्ध चल रहा था। महाराज युधिश्ठिर के लिए यह दुविधा से भरा समय था, जिसमें वह कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे। कौरवों के सेनापति गुरु द्रोणाचार्य ने अपने युद्ध कौषल से चक्रव्यूह की रचना की थी, जिसे तोड़ने की सामथ्र्य केवल अर्जुन में ही थी।

ऐसे समय में अभिमन्यु महाराज युधिश्ठिर के सामने पहुँचे और चरण स्पर्श कर पूछा-“आप इस तरह सोच में क्यों डूबे हैं तातश्री! युद्ध के क्या समाचार हैं ?“ “समाचार अच्छे नहीं हैं, पुत्र! लेकिन तुम क्यों चिंता करते हो ? हम लोग तो हैं ही,“ युधिश्ठिर ने कहा। “मुझे भी बताइए न!“ अभिमन्यु ने आग्रह किया। युधिश्ठिर बोले-“अभी तक हम कौरव सेना पर लगातार विजय प्राप्त कर रहे थे। यह तो तुम जानते ही हो कि तुम्हारे पिताश्री अर्जुन कौरव वीर संसप्तक से युद्ध करते-करते बहुत दूर निकल गए हैं। ऐसे समय में हमें पराजित करने के लिए दुर्योधन ने गुरु द्रोणाचार्य से चक्रव्यूह की रचना कराई है, जिसे भेदना केवल अर्जुन को ही ज्ञात है।“

“तो इसमें चिंता की क्या बात है ?“ अभिमन्यु ने पूछा।

युधिश्ठिर ने चिंतित होते हुए कहा-“तुम नहीं जानते पुत्र कि चक्रव्यूह तोड़ना कितना कठिन है? व्यूह में सात द्वार होते हैं और हर द्वार को तोड़ने की एक विषेश विधि होती है। हममें से तुम्हारे पिताश्री के अलावा और कोई भी चक्रव्यूह को भेदना नहीं जानता है। यदि हम कल चक्रव्यूह को भेदने में असफल रहे तो हमारी हार हो जाएगी।“

''आप क्यों चिंता करते हैं? तातश्री! मुझे युद्ध में जाने की आज्ञा दें, मैं चक्रव्यूह तोड़ दूँगा,'' अभिमन्यु ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया। युधिश्ठिर के लिए यह उत्तर अप्रत्याषित था। उन्होंने आष्चर्य से पूछा-

''तुमने चक्रव्यूह भेदने की विद्या कब सीखी ?''

''तातश्री! एक बार पिता जी ने माँ से चक्रव्यूह तोड़ने का वर्णन किया था। उस समय मैं माँ के गर्भ में था और यह वर्णन सुनकर मैंने यह विद्या सीख ली लेकिन जब अंतिम द्वार तोड़ने का वर्णन आया, तभी माँ को नींद आ गई और पिता जी ने वर्णन सुनाना बंद कर दिया जिससे मैं चक्रव्यूह का अंतिम द्वार भेदने की विधि नहीं सीख सका,'' अभिमन्यु ने उत्तर दिया।

''चक्रव्यूह के अंतिम द्वार को तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगा,'' भीम ने गदा घुमाते हुए गरजकर कहा। अब युधिश्ठिर के सामने धर्म-संकट था। बालक अभिमन्यु को वह युद्ध में कैसे जाने दें! अभिमन्यु ने उन्हें असमंजस में देखकर आष्वस्त किया-

''तातश्री! जब षत्रु ललकार रहा हो तो हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना कायरता है। मैं वीर पुत्र हूँ और मेरा कर्तव्य यही कहता है कि षत्रु की चुनौती का मुकाबला डटकर किया जाए।'' अभिमन्यु का आत्मविष्वास देखकर युधिश्ठिर ने अभिमन्यु को युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी।

युद्ध का उद्घोश हो गया था। प्रत्येक द्वार की रक्षा में एक महारथी था। चक्रव्यूह के प्रथम द्वार पर गुरु द्रोणाचार्य खड़े थे। अभिमन्यु ने उनके चरणों में बाण छोड़कर प्रणाम किया। द्रोणाचार्य अभिमन्यु को देखकर समझ गए कि पांडवों को हराना आज आसान नहीं होगा। सामने कौरव सेना का रचा चक्रव्यूह था। इधर अभिमन्यु थे। उनके पीछे भीम और दूसरे पांडव वीर थे। अभिमन्यु ने बाणों की बौछार करते हुए चक्रव्यूह का पहला द्वार तोड़ दिया। कौरव सेना के लिए यह चैंकाने वाला हमला था। भीम ने द्रोणाचार्य के रथ को उठाकर घोड़ों समेत आकाष में फेंक दिया।

चक्रव्यूह के अगले द्वार पर जयद्रथ था। जयद्रथ को लगा कि एक बालक उसके

सामने युद्ध में कितनी देर टिक पाएगा लेकिन थोड़ी ही देर में जयद्रथ को लगने लगा कि इस वीर बालक को रोकना उतना आसान भी नहीं है, जितना वह समझ रहा है।

जयद्रथ को आखिरकार मुँह की खानी पड़ी। अभिमन्यु ने दूसरा द्वार भी तोड़ दिया और अगले द्वार की ओर बढ़ गए लेकिन जयद्रथ ने भीम और अन्य पांडव वीरों को आगे बढ़ने से रोक दिया। अभिमन्यु अब अकेले पड़ गए लेकिन उन्होंने हिम्मत नही हारी। कौरव सेना के हाथी, घोड़े, पैदल सैनिक अभिमन्यु के बाणों के आगे गिरने लगे। अभिमन्यु के पराक्रम ने कौरव सेना के पैर उखाड़ दिए थे। कौरवों को विष्वास ही नहीं हो रहा था कि एक बालक उनकी इतनी विषाल सेना पर भारी पड़ जाएगा।

कौरव सेना में हाहाकार मच गया। दुर्योधन ने देखा कि चक्रव्यूह का अंतिम द्वार भी टूटने ही वाला है। पराजय को निकट देखकर दुर्योधन ने अनीति का सहारा लिया। दुर्योधन के कहने पर कौरव सेना के सातों महारथियों ने अभिमन्यु को चारों ओर से घेर लिया। वीर अभिमन्यु इस मुष्किल समय में भी हौसला नहीं हारे। उनका सारथी कौरव सेना का षिकार हो गया। अभिमन्यु

का धनुश भी काट दिया गया लेकिन अभिमन्यु रथ के पहिए को हथियार बनाकर सबसे मोर्चा लेते रहे। उन्होंने कौरव सेना से जूझते हुए सेनापति द्रोणाचार्य की ओर मुड़कर कहा-''गुरुवर, आपके होते हुए यह कैसी अनीति है! यह युद्ध का नियम नही है, जिसमें निहत्थे पर वार होता है।''

द्रोणाचार्य दुर्योधन के अधीन थे। उनके पास अभिमन्यु के प्रष्न का कोई उत्तर न था। अचानक दुःषासन के पुत्र ने पीछे से अभिमन्यु के सिर पर गदा से वार किया। अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुए लेकिन जीते-जी उन्होंने हार नहीं मानी। उनकी वीरता की कहानी सदैव अमर रहेगी।

अभ्यास

शब्दार्थ-

आकाश = *आसमान*

निहत्था = *जिसके हाथ में कोई*

वीरगति = *युद्ध में वीरतापूर्वक अस्त्र-शस्त्र न हो लड़ते हुए मारा जाना*

सारथी = *रथ हाँकने वाला*

1. *बोध प्रश्न*: *उत्तर लिखिए* -

(*क*) *पांडवों और कौरवों का युद्ध किस नाम से प्रसिद्ध है* ?

(*ख*) *युधिष्ठिर क्यों चिंतित थे* ?

(*ग*) *अभिमन्यु ने गुरु द्रोणाचार्य को कैसे प्रणाम किया* ?

(*घ*) *चक्रव्यूह के भीतर अभिमन्यु के साथ दूसरे पांडव वीर क्यों न जा सके*?

(*ङ*) *अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भेदने की विधि कैसे सीखी* ?

2. *किसने*, *किसने कहा* ?

- "*आप इस तरह सोच में क्यों डूबे हैं तातश्री*! *युद्ध के क्या समाचार हैं* ?"
- "*तुम नहीं जानते पुत्र कि चक्रव्यूह तोड़ना कितना कठिन है* ?"
- "*अंतिम द्वार को तो मैं अपनी गदा से ही तोड़ दूँगा*।"
- "*गुरुवर आपके होते यह कैसी अनीति है*!"

3. *सोच-विचार*: *बताइए* -

- अभिमन्यु के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है ?
- इस युद्ध में आपके विचार से क्या गलत हुआ और क्यों ?

4. भाषा के रंग -

(क) नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

- बाणों की बौछार करना
- खलबली मचाना
- सिर नीचा होना
- खुशी का ठिकाना न रहना

(ख) नीचे लिखे शब्दों के समानार्थक शब्द बताइए -

कठिन, आकाश, युद्ध, शत्रु, अलावा, धरती, आज्ञा, प्रण, बाण, जीव, नींद, कहानी

(ग) नीचे लिखे वाक्यों में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

अभिमन्यु ने कहा तातश्री मैं भी वीर पुत्र हूँ

समाचार अच्छे नहीं हैं पुत्र लेकिन तुम क्यों चिंता करते हो

तातश्री मैं वीरपुत्र हूँ शत्रु ललकारे और मैं बैठा रहूँ यह कैसे हो सकता है

(घ) पढ़िए, समझिए -

समास-विग्रह सामासिक पद , समास-विग्रह सामासिक पद

वीर का पुत्र = वीरपुत्र , राजा और रानी = राजा-रानी

राजा का पुत्र = राजपुत्र , रात और दिन = रात-दिन

वीरों की गति = वीरगति ,राम और लक्ष्मण = राम-लक्ष्मण

देवताओं का लोक = देवलोक , अंदर और बाहर = अंदर-बाहर

आप लिखिए -

समास-विग्रह सामासिक पद ,समास-विग्रह सामासिक पद

गृह का स्वामी = ...

आगे और पीछे = ...

राष्ट्र का ध्वज = ...

ऊपर और नीचे = ...

वन में वास = ...

माता और पिता = ...

पुष्पों की वर्षा = ...

हम और तुम = ...

5. आपकी कलम से -

आपके आस-पास भी किसी बच्चे ने विपत्ति के समय बहादुरी का परिचय दिया होगा। वह घटना कैसे घटी अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी-

(क) कहानी का कक्षा में अभिनय कीजिए।

(ख) इसी प्रकार की वीरता की कहानियाँ पुस्तकालय से पढ़िए।

7. मेरे दो प्रश्न: कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -

8. *इस कहानी से* -

(*क*) ***मैंने सीखा*** - ....

(*ख*) ***मैं करूँगी/करूँगा*** - ......

यह भी जानिए -

युधिष्ठिर ने अभिमन्यु से कहा - ''लेकिन तुम अभी बालक हो, हम तुम्हें युद्ध में कैसे भेज सकते हैं?''

इस वाक्य में युधिष्ठिर एवं अभिमन्यु (नाम) का प्रयोग हुआ है। ''किसी वस्तु, व्यक्ति एवं स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं, जैसे- गीता, रमेश, मोहन, मथुरा, प्रयाग, मेज, कलम'' आदि।

इसी वाक्य में अभिमन्यु (नाम) की जगह पर 'तुम' और 'तुम्हें' का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार युधिष्ठिर की जगह 'हम' सर्वनाम शब्द का प्रयोग हुआ है। किसी नाम या संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं, जैसे - मैं, तुम, हम, आप, मेरा, तुम्हारा, आपका, उसका, उसे आदि।

16-बच्चों का पूछताछ केंद्र

सड़क के नुक्कड़ पर लकड़ी की एक छोटी-सी दुकान थी। उस पर पूछताछ केंद्र लिखा हुआ था। पूछताछ केंद्र में एक महिला बैठती थी। वह लोगों के उन सवालों के जवाब देती थी, जो उससे पूछे जाते थे। महिला प्रतिदिन दुकान पर बैठती थी, लेकिन एक दिन अचानक कहीं चली गयी और वह दुकान खाली हो गई।

कुछ दिन दुकान खाली ही रही। एक दिन एक चंचल लड़की चीची सड़क पर घूम रही थी। उसने खाली दुकान देखते ही पूछताछ केंद्र के ऊपर 'बच्चों का' शब्द लिख दिया और दुकान में जाकर बैठ गई। अब वह प्रतीक्षा करने लगी कि कोई आए और उससे सवाल पूछे।

सबसे पहले दो जुड़वाँ भाइयों ने बच्चों के पूछताछ केंद्र को देखा। वे उधर आए और चीची से पूछा -

"अगर कोई पिता जी की घड़ी से खेल रहा हो और वह गिरकर टूट जाए तो क्या करना चाहिए ?"

"पिता जी से पूछना चाहिए कि जब घड़ी नहीं थी तब लोग समय कैसे मालूम करते थे।"

चीची की बात सुनकर भाइयों ने एक दूसरे की तरफ देखा और वहाँ से चले गए। उसके बाद सुनहरे बालों वाला एक बच्चा वहाँ आया और पूछने लगा -

"खरगोश किस तरह चिल्लाते हैं ?"

चीची ने जवाब दिया - ”खरगोश बिल्कुल नहीं चिल्लाते। वे धीरे-धीरे बातचीत किया करते हैं।“

”क्यों?“ छोटे बच्चे ने आश्चर्य से पूछा।

”क्योंकि उनको चिल्लाना पसंद नहीं“ चीची ने बिल्कुल शांत भाव से उत्तर दिया। कुछ ही देर में बच्चों के पूछताछ केंद्र के सामने बच्चों की लम्बी कतार लग गई।

एक लड़की ने पूछा - ”एक साधारण कुत्ते को चतुर चालाक बनाने के लिए क्या-क्या सिखाना जरूरी है?“

”कुछ खास नहीं, कुत्ते को स्वयं ही कड़ा अभ्यास करके चतुर चालाक बनने दो“ चीची ने जवाब दिया।

बच्चे एक से एक सवाल कर रहे थे, लेकिन चीची जवाब देने में उनसे भी आगे थी।

”चाँद रात में रोशनी देता है और सूरज दिन मंे, ऐसा क्यों?“ एक बच्चे ने पूछा।

”यह उन्होंने आपस में तय कर रखा है,“ चीची ने जवाब दिया।

”वाह-वाह!“ छात्र प्रसन्न हो गया।

चश्मा लगाये हुए एक बहुत गंभीर-से दिखने वाले लड़के ने पूछा -

”बड़ों को सब कुछ करने की स्वतंत्रता है, बच्चों को हर बात के लिए मना किया जाता है, ऐसा क्यों?

”यह प्रश्न गलत है। बड़ों को भी सब कुछ करने की स्वतंत्रता नहीं है“ - चीची ने सख्ती से उत्तर दिया।

"अभी मुझे एक सवाल और पूछना है" चश्मा लगाए हुए लड़के ने कहा।

"अभी नहीं बाद में! एक बार में केवल एक ही सवाल। बाकी लोग भी हैं", चीची बोली।

"दीदी, जब रेलगाड़ी आती है तो सड़क का फाटक बंद क्यों कर दिया जाता है?" बड़ी-बड़ी आँखों वाले गोलू ने बेहद जिज्ञासा से पूछा।

"जिससे रेलगाड़ी सड़क पर न आ जाए," चीची ने तत्परता से कहा।

तभी एक पहलवान-सा दिखने वाला लड़का आया।

"क्या तुम तरबूज को एक ही बार में दाँत से काट सकती हो ?" उसने पूछा।

"हाँ मैं काट सकती हूँ," चीची ने कहा।

"शर्त लगा लो तुम नहीं काट सकतीं!" ... लड़का बोला।

"शर्त लगाती हूँ।"

चीची पूछताछ केंद्र से बाहर निकली। पूछताछ केंद्र पर एक कागज लिखकर चिपका दिया- "पूछताछ केंद्र शर्त लगाने के लिए बंद है।"

अभ्यास

शब्दार्थ-

- *इस कहानी में जिन शब्दों के अर्थ नहीं पता है उन्हें छाँटकर अपनी कॉपी में लिखिए।*

- *अपने शिक्षक/शब्दकोश की मदद से उनका अर्थ पता कीजिए।*

1. ***बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए*** -

(*क*) ***पूछताछ केंद्र को बच्चों का पूछताछ केंद्र बनाने के लिए चीची ने क्या किया*** ?

(***ख***) ***खरगोश किस तरह चिल्लाते हैं*** ? ***इस प्रश्न का जवाब चीची ने क्या दिया*** ?

(*ग*) ***जिससे रेलगाड़ी सड़क पर न आ जाए, यह उत्तर चीची ने किस प्रश्न का दिया*** ?

(***घ***) ***चीची को पूछताछ केंद्र क्यों बंद करना पड़ा*** ?

2. ***खोजबीन*** -

(*क*) ***चीची से कुल कितने सवाल पूछे गए*** ?

(***ख***) ***कितने लोगों ने सवाल पूछा*** ?

(*ग*) ***क्या किसी ने दो सवाल भी पूछे*** ?

घ) ***तुम्हें कौन-सा सवाल सबसे अच्छा लगा*** ?

(ङ) ***कौन-सा जवाब सबसे अच्छा लगा*** ?

3. ***सोच-विचार: बताइए -***

(*क*) ***आप बताइए कि रेलगाड़ी के आने पर सड़क का फाटक क्यों बंद कर दिया जाता है*** ?

(***ख***) ***चीची के सामने अगर आप होते तो क्या पूछते*** ? ***तीन सवाल लिखिए*** -

(*ग*) ***बातचीत*** -

नीचे बातचीत के कुछ अंश दिए गए हैं। लिखिए कि यह बातचीत किस-किस के

बीच हो रही होगी -

- "*क्यों भाई! टमाटर किस भाव दिए हैं?" "तीस रुपये किलो" "पचीस रुपये किलो लगाओ" "नहीं भाई, इतने का तो मुझे भी नहीं पड़ा*" ....
- "*तुम्हें बुखार कब से आ रहा है?" "कल रात से, बहुत कँपकँपी भी आ रही है।" "कोई बात नहीं दो दिन की दवा दे रहा हूँ। परसों आकर हालचाल बताना।*" ....
- "*कल स्कूल क्यों नहीं आए थे जितेंद्र?" "कल मैं बुआ जी के घर गया था।" "अरे! पर अचानक कैसे?" "मेरी फुफेरी बहिन का जन्मदिन था।" "वाह! तब तो खूब मजा आया होगा?*" ....

(घ) *जब हम किसी से मिलते हैं तो कुछ प्रारंभिक बातचीत होती है*

जैसे -

- *अभिवादन - नमस्कार, प्रणाम ...*
- *कुछ सवाल - क्या हालचाल हैं ...*
- *कुछ जवाब - मैं अच्छा हूँ... घर से आ रहा हूँ।*
- *कुछ आसपास की बातें - आज तो बहुत तेज गर्मी है।*

सोचिए और बताइए कि ये बातें और किस-किस तरह की हो सकती हैं।

(ङ) *नीचे दिए गए उत्तरों में दो-दो बातें कही गई हैं। उदाहरण के अनुसार ऐसे सवाल बनाइए जो उन दोनों बातों के बारे में हों -*

उत्तर सवाल

- *यह मेरी बहिन है, कक्षा 3 में पढ़ती है - यह कौन है*
- *किस कक्षा में पढ़ती है?*
- *नीलम अगले महीने रजिया के घर जाएगी -*

- डेजी कल सुबह गोरखपुर से आई है -
- जग्गी के घर में काले रंग की गाय है -

4. **भाषा के रंग -**

(क) शब्द अंत्याक्षरी -

व्यवस्था- 5-5 या 10-10 बच्चों की आमने-सामने खड़ी दो टोली, टोली के नाम, स्कोरबोर्ड, निर्णायक।

तरीका - दोनों टीमों में से किसी एक बच्चे द्वारा कोई शब्द बोले जाने पर दूसरी टीम के द्वारा उस शब्द के अंतिम अक्षर से शुरू होने वाले शब्द बोलना।

नियम - शब्द बोलते समय रुक जाने अथवा गलत बोलने पर शून्य अंक।

- दोनों के लगातार सही बोलते रहने पर 1-1 अंक।

- बोले गए शब्द के अंत में 'ण', 'ड़', तथा 'ढ़' आने पर क्रमश 'न', 'ड' और 'ढ' अक्षर से बनने वाले शब्द बोलना।

(ख) 'बा' तथा 'बे' उर्दू के उपसर्ग (शब्दांश) हैं जो क्रमशः सहित और रहित (नहीं) का अर्थ देते हैं। ये शब्दांश शब्दों के पहले जुड़कर अर्थ बदल देते हैं उदाहरण के अनुसार इन्हें जोड़कर शब्द बनाइए -

'बा' 'बे'

बा + इज्जत = बाइज्जत बे +इज्जत = बेइज्जत

.... +कायदा = ...+कायदा = ...

......+ अदब = ... + अदब = ...

...... + ... = ... + घर = ...

.... + ... = ... + रहम = ...

5. अब करने की बारी -

(क) साक्षात्कार - रसोइया/सफाई कर्मी/पान विक्रेता/किसान/रिक्शा चालक/ राजमिस्त्री/फेरीवाला आदि में से किसी एक को चुनें। इनकी अपनी खुशियाँ हैं, दुख-दर्द हैं, काम-धाम हैं, घर-परिवार हैं। इनके बारे में जानने के लिए इनसे साक्षात्कार (बातचीत) करना एक सहज तरीका है।

दो-दो की टोलियों में इनके पास जाकर (इनके खाली समय में) सवालों को एक-एक कर के पूछिए। दूसरा साथी नोट करता रहे।

पूछे गए सवाल व बताए गए जवाब को समूहवार कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

(ख) आपने रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन तथा अन्य जगहों पर 'पूछताछ केंद्र' देखा होगा। इसके अंदर बैठा व्यक्ति पूछने वाले को बस/रेल से संबंधित जानकारी देता हैं। जैसे - कहाँ से कहाँ को? कितने बजे? कहाँ से मिलेगी? आदि। आप भी अपनी कक्षा में 'बच्चों का पूछताछ केंद्र' बनाइए। उसमें चीची की जगह किसी बच्चे को बैठाकर इस तरह के सवाल-जवाब कीजिए।

6. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

7. इस पाठ से-

(क) मैंने सीखा - ....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

यह भी जानिए -

कुछ महत्त्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबर-

*100 - **पुलिस हेल्पलाइन** 101 - **फायर ब्रिगेड हेल्पलाइन***

*102/108 - **एंबुलेंस हेल्पलाइन** 103 - **मेडिकल हेल्पलाइन***

*139 - **रेलवे इन्क्वायरी** 1096 - **नेचुरल डिजास्टर हेल्पलाइन (प्राकृतिक आपदा)***

*1090/1091 - **महिला हेल्पलाइन** 1098 - **बाल हेल्पलाइन***

कितना सीखा-3

1. उत्तर लिखिए -

(क) बाल कृष्ण को अपनी माता यशोदा से क्या शिकायत है?

(ख) फटे दूध से मक्खन नहीं निकलता। इस उदाहरण के माध्यम से रहीम जी क्या कहना चाहते हैं?

(ग) 'हौसला' कहानी से क्या सीख मिलती है?

(घ) ओणम त्योहार किसका प्रतीक है?

(ङ) ओणम मनाने के पीछे कौन सी कथा जुड़ी है?

2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।

(ख) काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।

सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि हलधर की जोटी।

3. नीचे लिखे गए शब्दों में 'इत' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए -

प्रकाश, प्रभाव, प्रवाह, आलोक, विवाद

4. मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

- भगीरथ प्रयास स थोथा चना बाजे घना

- *मन चंगा तो कठौती में गंगा स हाथ मलना*
- *ऊँट के मुँह में जीरा स आँखों का तारा होना*

5. *नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -*

प्रेम .... *प्रकाश* ....

खट्टा.................... *शिक्षा* ....

संभव .... *विश्वास* ....

कुसंग .... *विष* ....

6. *नीचे दो-दो शब्दों के जोड़े दिए गए हैं। यदि दोनों के अर्थ समान हों तो 'स' पर और विपरीत हों तो 'वि' पर घेरा लगाइए-*

(*क*) *कम - अधिक स वि* (घ) *शत्रु - मित्र स वि*

(*ख*) *आदर - सम्मान स वि* (ङ) *हर्ष - प्रसन्नता स वि*

(*ग*) *सुख - दुःख स वि* (च) *जन्मभूमि - मातृभूमि स वि*

7. *नीचे दिए गए शब्दों को एक साथ मिलाकर लिखिए -*

जैसे - सुप्त+ अवस्था = सुप्तावस्था

किशोर + अवस्था = ...

वृद्ध + अवस्था = ...

बाल्य +अवस्था = ...

प्रौढ़ + अवस्था = ...

जरा + *अवस्था* = ...

8. *कबीर और रहीम के दोहे सुनाइए।*

9. *पाठ संख्या* 15 *पर तीन सवाल बनाइए।*

10. *अपनी आज की दिनचर्या पर संक्षिप्त डायरी लिखिए* -

....

अपने आप-3

सत्यवादी हरिश्चंद्रभारत वर्ष में ऐसे अनेक महान व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन आदर्शों से संपूर्ण मानवता के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व थे राजा हरिश्चंद्र। वह अपनी प्रजा में सत्यवादिता, दान और परोपकार जैसे गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी पत्नी तारामती तथा पुत्र रोहित था।

भारत वर्ष में ऐसे अनेक महान व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने अपने जीवन आदर्शों से संपूर्ण मानवता के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व थे राजा हरिश्चंद्र। वह अपनी प्रजा में सत्यवादिता, दान और परोपकार जैसे गुणों के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी पत्नी तारामती तथा पुत्र रोहित था।

एक बार देवराज इंद्र की प्रेरणा से महर्षि विश्वामित्र ने राजा हरिश्चंद्र की सत्यवादिता एवं दानशीलता की परीक्षा लेनी चाही। वह राजा हरिश्चंद्र के स्वप्न में प्रकट हुए और उनसे दान में संपूर्ण राज-पाट माँग लिया। राजा हरिश्चंद्र ने स्वप्न में ही उन्हें सब कुछ दान कर दिया।

अगले दिन प्रातःकाल मुनि विश्वामित्र दरबार में उपस्थित हुए और अपनी दक्षिणा के रूप में एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएं माँगी। राजा हरिश्चंद्र अपना सब कुछ दान कर चुके थे। मुनि बिना दक्षिणा लिए चले जाएँ यह भी संभव न था। कोई उपाय न देखकर राजा हरिश्चंद्र ने दक्षिणा चुकाने के लिए स्वयं को परिवार सहित बेचने का निर्णय लिया। राजा हरिश्चंद्र को श्मशान में कर वसूल कर दाह संस्कार कराने वाले व्यक्ति ने खरीद लिया और उनकी पत्नी और पुत्र को घरेलू काम-काज के लिए एक ब्राह्मण ने।

एक दिन जंगल में रोहित को विषैले सर्प ने डस लिया। असहाय तारामती मृत पुत्र को गोद में उठाकर अंत्येष्टि के लिए श्मशान ले गईं। ऐसे संकट के समय में भी राजा हरिश्चंद्र ने सत्य और धैर्य को नहीं छोड़ा तथा तारामती से शवदाह हेतु कर

माँगा।

तारामती के पास कर देने के लिए कुछ भी नहीं था। विवश होकर वह अपनी धोती का आधा भाग फाड़कर देने के लिए तत्पर हुई ही थी कि विश्वामित्र और देवता गण प्रकट हो गए। राजा हरिश्चंद्र परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुके थे। सबने राजा के धैर्य, दानशीलता और न्याय की प्रशंसा करते हुए रोहित को जीवित कर दिया तथा राज-पाट भी वापस कर दिया।

पठन निर्देश:- उक्त कथा को ध्यान पूर्वक पढ़कर प्रश्न बनाइए।

17-टेसू राजा

टेसू राजा अड़े खड़े
माँग रहे हैं दही बड़े।

बड़े कहाँ से लाऊँ मैं,

पहले खेत खुदाऊँ मैं,

उसमें उड़द उगाऊँ मैं,

फसल काट घर लाऊँ मैं।

छान फटक रखवाऊँ मैं,

फिर पिट्ठी पिसवाऊँ मैं,

टिकिए गोल बनाऊँ मैं,

बेलन से बेलवाऊँ मैं।

चूल्हा फूँक जलाऊँ मैं,

तलवा कर सिकवाऊँ मैं,

फिर पानी में डाल उन्हें,

मैं लूँ खूब उबाल उन्हें।

फूल जाएँ वह सब के सब,

उन्हें दही में डालूँ तब,

मिर्च-नमक छिड़काऊँ मैं,

चाँदी वर्क लगाऊँ मैं।

चम्मच एक मँगाऊँ मैं,

तब वह उन्हें खिलाऊँ मैं,

टेसू राजा अड़े-खड़े,

माँग रहे हैं दही बड़े।

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

बिहार प्रांत के बेगूसराय जिले में जन्मे राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी के प्रमुख लेखक, कवि एवं निबंधकार हैं। 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'हुँकार', 'संस्कृति के चार अध्याय' आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ-

टेसू राजा = बेटे का नाम टेसू है, जिसे माँ ने प्यार से टेसू राजा कहा है।

अड़े खड़े = किसी चीज के लिए जिद करना। जिद पूरी होने तक खड़े रहना।

पिट्ठी पिसवाना = भीगी हुई उड़द या मूँग की दाल को पिसवाना।

1. *बोध प्रश्न*: *उत्तर लिखिए* -

(*क*) *टेसू राजा किस बात के लिए अड़े खड़े हैं* ?

(*ख*) *माँ की कठिनाई क्या है* ?

(*ग*) *टेसू की माँ के पास उड़द होते तो उन्हें क्या-क्या नहीं करना पड़ता* ?

(*घ*) *कविता को पढ़कर दही बड़ा बनाने की प्रक्रिया/चरणों को क्रमशः लिखिए। जैसे-*

- *उड़द को छाँट फटक कर भिगोना*
- *पिट्ठी पिसवाना*

2. *सोच विचार*: *बताइए* -

(*क*) *आपने अपनी माँ से कब और किस बात के लिए जिद की* ?

(*ख*) *माँ ने वह जिद कैसे पूरी की* ?

(*ग*) *क्या हमें जिद करनी चाहिए*, *क्यों* ?

(*घ*) *आपने अपने घर में किसी दुकान पर या किसी अन्य स्थान पर इन कामों को होते देखा होगा। बताइए कि कैसे होते हैं ये काम-*

- *आलू की टिकिया बनाना।*
- *मिट्टी से घड़ा बनाना।*
- *बेसन से पकौड़ी बनाना।*
- *आटे से रोटी बनाना।*

3. *भाषा के रंग* -

(*क*) *कविता में तुकांत शब्द खूब आए हैं। जैसे-अड़े*, *खड़े*, *बड़े/लाऊँ*, *खुदाऊँ*, *उगाऊँ। इन्हें ढूँढ़कर लिखिए-*

....

(ख) पाठ में आए हुए (ँ) अनुनासिक शब्दों को छाँटकर लिखिए-

जैसे - कहाँ ....

4. आपकी कलम से -

(क) 'दही बड़ा' की ही तरह अगर 'रोटी' बनानी हो तो कविता कैसे बनेगी? खाली स्थान में सही शब्द भरकर कविता को पूरा कीजिए -

पहले खेत खुदाऊँ मैं।

..... उगाऊँ मैं।

.... घर लाऊँ मैं।

.... रखवाऊँ मैं।

..... पिसाऊँ मैं।

.... बनाऊँ मैं।

..... बेलवाऊँ मैं।

.... सिकवाऊँ मैं।

..... खिलवाऊँ मैं।

(ख) आपके घर में खाना कौन-कौन बनाते हैं? आप इस काम में उनकी क्या मदद कर सकते हैं, नीचे बनी तालिका में लिखिए-

खाना कौन बनाता है	मैं क्या मदद करता हूँ	मैं और क्या–क्या मदद कर सकता हूँ

(ग) ***आपकी रसोई में-***

- ***क्या-क्या कड़ाही में तलकर सेंका जाता है***?
- ***क्या-क्या पानी में डालकर उबाला जाता है***?
- ***किन चीजों के बनाने में दही का प्रयोग होता है***?
- ***कौन-कौन से बरतन हैं***?
- ***किन-किन बरतनों का प्रयोग होगा***?
- ***सब्ज़ी बनाने में***
- ***दाल बनाने में***
- ***चावल बनाने में***

5. ***अब करने की बारी*** -

(क) ***देखिए, समझिए और बताइए*** -

साबूदाना वड़ा

- ***चित्र में क्या बनाने की विधि लिखी है***?
- ***सामग्री की मात्रा क्यों लिखी गई है***?

- *यह कितने व्यक्तियों के लिए पर्याप्त होगी* ?

अगर चार की जगह आठ व्यक्ति हों तो कौन-सी सामग्री की मात्रा कितनी बढ़ जाएगी-

सामग्री - मात्रा

(*ख*) *इंटरव्यूः- आपने टेलीविजन पर अखबार में अथवा रेडियो पर किसी का इंटरव्यू* (*साक्षात्कार*) *देखा, पढ़ा अथवा सुना होगा। पता है, आप भी ले सकते हो इंटरव्यू। अपने घर में खाना पकाने वाले से ये सवाल पूछिए और उत्तर लिखिए* -

- *खाना पकाना कब सीखा* ?
- *क्या-क्या बनाना आसान होता है* ?
- *किससे सीखा* ?
- *क्या-क्या बनाने में ज्यादा समय लगता है*?
- *क्या-क्या बना लेते हैं* ?
- *प्रायः लोग क्या खाना ज्यादा पसंद करते हैं*?
- *बनाते समय क्या-क्या सावधानियाँ रखते हैं* ?
- *खाना बनाते, खिलाते समय कब आपको परेशानी या दुःख होता है* ?

6. *मेरे दो प्रश्न: कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

7. *इस कविता से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(*ख*) *मैं करूँगी/करूँगा* - ....

18 - मोहम्मद साहब

हजरत मोहम्मद साहब का जन्म अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का में हुआ था। उनकी माता का नाम आमिना तथा पिता का नाम अब्दुल्लाह था। जन्म से दो माह पूर्व उनके पिता का निधन हो गया था। छह वर्ष की अवस्था में उनकी माता भी चल बसीं। उनकी माता के देहांत के बाद उनका पालन-पोषण उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने और चाचा अबूतालिब ने किया।

मोहम्मद साहब बचपन से ही बड़े नेक और शांत स्वभाव के थे। बड़े होने पर वे अपने चाचा के साथ व्यापार के लिए आस-पास के देशों में जाने लगे थे। वे बड़ी लगन से काम करते थे। उनकी मेहनत और ईमानदारी की प्रशंसा दूर-दूर तक फैल गई। इसीलिए बाहर जाते समय लोग अपने आभूषण और बहुमूल्य सामान उनके पास रख जाते थे और वापस आकर ले लिया करते थे।

उन दिनों अरब देश में बहुत-सी कुरीतियाँ प्रचलित थीं। अरब निवासी अनेक किस्म के अंधविश्वासों में जकड़े हुए थे। वे जादू-टोने में विश्वास करते थे, जुआ खेलते थे और मदिरा पीकर आपस में लड़ते-झगड़ते थे। छोटी-छोटी बातों पर अकड़ दिखाते और एक दूसरे के प्राणों के प्यासे हो जाते थे। ऊँची-ऊँची दरों पर सूद पर पैसा उधार देते थे। इन बुराइयों को देखकर मोहम्मद साहब को बहुत दुःख होता था। उनका मन अशांत हो उठता था। मक्का के पास की पहाड़ियों में 'हिरा' नाम की एक गुफा थी। वे प्रायः उस गुफा में जाकर चिंतन करते और ध्यान लीन हो जाते। वे समाज की बुराइयों को दूर करके उसे समृद्धि और सहयोग के रास्ते पर बढ़ाना चाहते थे।

उन्होंने लोगों को बताया कि सभी मनुष्य बराबर हैं, कोई ऊँचा या नीचा नहीं है।

उनका कहना था कि मनुष्य की वह रोजी सबसे पवित्र है, जो उसने अपने हाथ से मेहनत करके कमायी है। वे बदला लेने से क्षमा कर देना अच्छा समझते थे। वे कहते थे कि पड़ोसी को कष्ट देने वाला आदमी कभी जन्नत में नहीं जा सकता।

उन्होंने कहा कि आदमी को अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा गरीबों की मदद में लगाना चाहिए। दूसरों की अमानत की रक्षा करनी चाहिए। सभी धर्मों का आदर करना चाहिए। सूदखोरी नहीं करनी चाहिए। बुरी आदतों जैसे शराब पीना, जुआ खेलना आदि से दूर रहना चाहिए।

आरंभ में मक्का वालों को मोहम्मद साहब की बातें पसंद न आईं। वे उन्हें तरह-तरह से कष्ट देने लगे। वे उन्हें और उनके साथियों को बुरा-भला कहते और उन पर पत्थर बरसाते। एक वृद्ध स्त्री तो उनसे इतनी रुष्ट थी कि जब वे रास्ते से निकलते तो उन पर कूड़ा फेंकती और रास्ते में काँटे बिखेर देती लेकिन मोहम्मद साहब उस रास्ते से चुपचाप निकल जाते और उस बुढ़िया से कुछ न कहते। एक दिन वे उसी रास्ते से जा रहे थे तो न उन पर कूड़ा फेंका गया और न काँटे ही बिखेरे गए। उन्होंने पड़ोसियों से पूछा तो मालूम हुआ कि वह स्त्री बीमार है। मोहम्मद साहब उसका हाल पूछने गए। इस बात का उस स्त्री पर अच्छा प्रभाव पड़ा और उनका बहुत आदर करने लगी।

मक्का वालों के विरोध के बाद भी मोहम्मद साहब बराबर उपदेश देते रहे। मक्का वालों का विरोध बढ़ता ही गया और मोहम्मद साहब ने समझ लिया कि अब उनका यहाँ रहना कठिन है। अतः उन्होंने मदीना जाने का निश्चय किया।

उन्होंने अपने पास रखी हुई दूसरों की धरोहर को अपने चचेरे भाई हजरत अली को सौंप दिया और उनको यह समझाया, "लोगों को उनकी धरोहर लौटाकर तुम भी मदीना चले आना।"

अब मोहम्मद साहब अपने मित्र अबूबक्र के साथ मदीना की ओर चल दिए। वे पहले शहर के बाहर एक गुफा में रुके। मक्का वाले जब उनके घर में घुसे तो मोहम्मद साहब वहाँ न मिले। वे ढूँढ़ते-ढँ ूढ़ते शहर के बाहर गुफा की ओर चले। लोगों को

अपनी ओर आते देखकर अबूबक्र घबराए, मगर मोहम्मद साहब ने कहा, "अबूबक्र! घबराओ नहीं, खुदा हमारे साथ है। वह हमारी रक्षा करेगा।" कहा जाता है कि उसी समय मकड़ी ने गुफा के मुँह पर जाला बुन दिया। जब मोहम्मद साहब के विरोधी उन्हें ढूँढ़ते-ढँूढ़ते गुफा के पास पहुँचे, तब उन्होंने गुफा के द्वार पर मकड़ी का जाला तना हुआ पाया। इससे उन्होंने समझा कि गुफा में कोई नहीं है। वे आगे बढ़ गए और मोहम्मद साहब को न पा सके।

तीन दिन गुफा में रहने के बाद मोहम्मद साहब ऊँटनी पर चढ़कर मदीना की ओर चल पड़े। मक्का से मदीना की यात्रा 'हिजरत' कहलाती है और इसी से हिजरी सन् शुरू होता है।

कुछ दिन बाद मोहम्मद साहब ने एक मस्जिद बनाने की बात सोची। मस्जिद बनाने के लिए जो जमीन पसंद की गई, वह दो अनाथ बच्चों की थी। ये बच्चे जमीन मुफ्त में देना चाहते थे, किंतु मोहम्मद साहब ने मुफ्त की जमीन लेने से मना कर दिया। एक अन्सारी ने इस जमीन का मूल्य चुका दिया। इस जमीन पर मोहम्मद साहब ने एक मस्जिद बनवाई। वे मस्जिद से मिले हुए कमरे में रहने लगे, कुछ समय बाद यह मस्जिद 'मस्जिद-ए-नब्वी' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

धीरे-धीरे मोहम्मद साहब के समर्थकों की संख्या बढ़ती गई और उनका यश चारो ओर फैल गया मगर मक्का वाले उनसे झगड़ा करते ही रहे। अंत में मोहम्मद साहब ने मक्का पर विजय प्राप्त कर ली। मक्का वाले बहुत घबराए कि अब मोहम्मद साहब उनसे बदला लेंगे, किंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने घोषणा की, "मक्का वालो ! डरो नहीं। मैं किसी से बदला लेने नहीं आया हूँ। मैं उन सबको माफ करता हूँ, जिन्होंने मेरे साथियों और संबंधियों को मार डाला और मुझे मारना चाहा। मक्का वालो, नेकी के रास्ते पर चलो।"

मोहम्मद साहब के इस व्यवहार का मक्का वालों पर बहुत असर पड़ा। उन्होंने मोहम्मद साहब से क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि आप अब यहीं रहें। मोहम्मद साहब ने कहा, "आज मैं तुम लोगों से बहुत खुश हूँ परंतु जिन लोगों ने संकट में मेरा साथ दिया था, मैं उन्हें कैसे छोड़ दूँ? वैसे मैं हज करने हर साल मक्का आता रहूँगा।" यह

कहकर मोहम्मद साहब मदीना लौट गए और वहीं रहने लगे। जब उनका देहांत हुआ तो उनकी कब्र मस्जिद से सटे हुए उसी कमरे में बनाई गई, जिसमें वे रहते थे।

मोहम्मद साहब के संदेश हदीस की किताबों में संकलित हैं।

"ईश्वर एक है और वह एकता को पसंद करता है।"

-हजरत मोहम्मद

अभ्यास

शब्दार्थ-

सूदखोरी = ब्याज लेने का काम

धरोहर = अमानत में रखी वस्तु

समृद्धि = खुशहाली

हिजरत = मोहम्मद साहब की मक्का

जन्नत = स्वर्ग से मदीने की यात्रा

उपासना = पूजा

प्रलोभन = लालच

रोजी = कमाई,

जीविका कलाम = कथन

1. *बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -*

(*क*) *मोहम्मद साहब के जन्म के समय अरब में क्या-क्या बुराइयाँ फैली थीं* ?

(*ख*) *मोहम्मद साहब अपने विरोधियों से गुफा में कैसे बचे* ?

(*ग*) *हिजरत किसे कहते हैं* ?

(*घ*) *मोहम्मद साहब ने मानवता को क्या संदेश दिया* ?

2. *भाषा के रंग -*

(*क*) *नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए -*

प्रसिद्ध, अवस्था, प्रशंसा, एकांत, चिंतन, समृद्धि, हिजरत, घोषणा, क्षमा, प्रार्थना

(*ख*) *'देह' और 'अंत' मिलाकर शब्द बनता है- देह* $ *अंत = देहांत। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों को मिलाकर नया शब्द बनाइए -*

सुख+ अंत = ... *सीमा+ अंत* = ...

दुख+ अंत = ... *वेद+अंत* = ...

(*ग*) *'पालन-पोषण' में दो शब्दों का योग है। इस तरह दो शब्दों के मेल से बने शब्दो को युग्म शब्द कहते है। पाठ में आए ऐसे युग्म शब्दों को ढूँढ़ कर लिखिए।*

(*घ*) *'साधारण' शब्द का विलोम बनाने के लिए उसके पहले 'अ' जोड़ देते हैं और शब्द बन जाता है- असाधारण। इसी प्रकार इन शब्दों के पूर्व 'अ' लगाकर उनके विलोम शब्द बनाइए -*

सहयोग, निश्चय, धर्म, शांति, भूतपूर्व, विश्वस्तरीय

(*ङ*) *नीचे बने चक्र में क्रमशः दो, तीन, चार और पाँच अक्षरों वाले दो-दो शब्द*

उदाहरण के लिए दिए गए हैं इसी प्रकार पुस्तक से ढूँढ़कर पाँच-पाँच शब्द प्रत्येक चक्र में लिखिए-
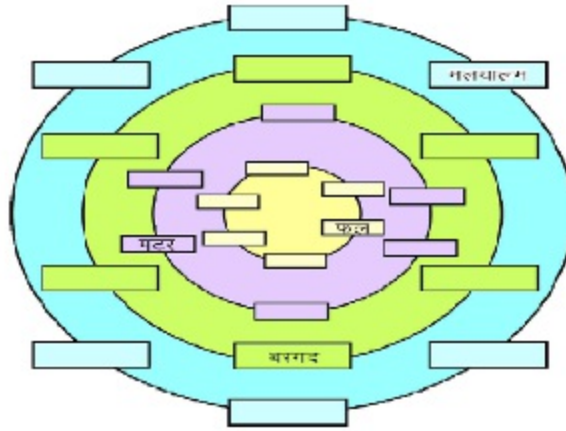
(च) कुछ मुहावरे और उनके अर्थ दिए गए हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

- अकड़ दिखाना - घमंड करना
- प्राणों का प्यासा होना - मार डालने पर उतारू होना
- बुरा भला कहना - बुराई करना
- अपनी बात पर जमे रहना - दृढ़ होना

(छ) नीचे के अंश में दो ऐसे वाक्य आ गए हैं जो बाकी वाक्यों से मेल नहीं खाते। उन्हें ढॅूढ़कर अलग कीजिए और बाकी अंश का सुलेख अपनी कापी में कीजिए -

एक खरगोश के दो बच्चे थे। एक काला और एक सफेद। दोनों बच्चे बड़े सुंदर थे। दुकानदार ने कहा- एक टोपी का मूल्य पाँच रुपये हैं। एक दिन मेरी सहेली गेंद से खेल रही थी, तो सफेद खरगोश को गेंद लग गई। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं सफेद खरगोश को अपने घर ले आई। उसको दवा लगाई। पैसे दो और टाफी लो। थोड़ी देर बाद वह दौड़ने लगा तो मैं उसको फिर बागीचे में छोड़ आई। अब वह अक्सर हमारे घर आता है।

3. *आपकी कलम से* -

पाँच बातें लिखिए जो मोहम्मद साहब ने मानवता की भलाई के लिए कहीं।

4. *अब करने की बारी* -

(*क*) *गौतम बुद्ध*, *ईसा मसीह और गुरुनानक की जीवनियाँ अपने बड़ों से सुनिए।*

(*ख*) *अपनी कॉपी में प्रथम अनुच्छेद का सुलेख कीजिए।*

5. *मेरे दो प्रश्न*: *पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

6. *इस पाठ से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(*ख*) *मैं करूँगी/करूँगा* - ....

19-श्रुति की समझदारी

श्रुति अपनी कक्षा की मेधावी छात्रा थी। वह हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती थी। उसके पिता पुलिस विभाग में अधिकारी थे। सरकारी आवास न मिल पाने के कारण, वे शहर के एक छोर पर, किराए के मकान में रहते थे। पास ही में झुग्गी-झोपड़ियाँ थीं, जहाँ गरीबी में रह रहे कुछ परिवार अपना जीवन-यापन कर रहे थे। अधिकांश परिवार मजदूरी पर ही निर्भर थे। उनके पास आय का कोई निश्चित साधन नहीं था। कोई किराए पर रिक्शा चला कर तो कोई ईंट-गारा ढोकर दो जून की रोटी जुटा रहा था।

श्रुति रोज सुबह जब स्कूल की ड्रेस में तैयार हो कर स्कूल जाती तो झुग्गी-झोपड़ी में रह रहे बच्चे, ललचाई नजरों से उसे देखा करते थे। इसी झुग्गी-झोपड़ी की एक औरत श्रुति के घर में काम करने के लिए आती थी। उसकी दस साल की बच्ची थी- अंजू। अंजू अक्सर ही अपनी माँ के साथ आ जाया करती थी। शुरु-शुरु में वह साफ-सुथरी नहीं रहती थी लेकिन श्रुति की मम्मी के बार-बार समझाने के कारण उसकी माँ उसे साफ-सुथरा रखने लगी। श्रुति जब शाम को स्कूल से वापस लौट कर आती, तो अंजू अक्सर ही आस-पास खेल रही होती। धीरे-धीरे वह श्रुति के साथ घुल-मिल गई। अब दोनों साथ ही खेला करती थीं। मम्मी सोचतीं कि चलो अच्छा है श्रुति को खेलने के लिए एक सहेली तो मिल गई। एक दिन श्रुति ने खेल-खेल में ही उससे पूछा, "अंजू! तुम स्कूल क्यों नहीं जाती ? क्या तुम्हारी इच्छा नहीं होती कि तुम भी पढ़-लिख कर खूब नाम कमाओ।" श्रुति के ऐसा पूछने पर अंजू उदास हो गई। उसने

उत्तर दिया, "हमारे पास इतने पैसे ही नहीं हैं कि माँ-बापू मुझे स्कूल भेज सकें। मैं ही क्यों ? झुग्गी-झोपड़ी का कोई भी बच्चा पढ़ने के लिए स्कूल नहीं जाता है।" "तो फिर बच्चे क्या करते हैं ?" श्रुति ने पूछा।

"काफी छोटे बच्चे तो गली-मोहल्ले में धमा-चैकड़ी करते रहते हैं और जो कुछ बड़े बच्चे हैं, उन्हें काम पर जाना पड़ता है।" उसने आगे बताया, "शहर में पटाखे बनाने का एक कारखाना है। वहीं पर अधिकतर बच्चे काम के लिए जाते हैं। कभी-कभी विस्फोट हो जाने से कुछ बच्चे बुरी तरह से घायल भी हो जाते हैं। सोफिया और राजन ऐसी ही एक दुर्घटना में अपंग हो चुके हैं।"

श्रुति को यह सब जानकर काफी दुःख हुआ। पढ़ने की इस उम्र में बच्चों को काम पर जाना पड़ता है और वह भी ऐसे जोखिम भरे काम के लिए। उसे मालूम था कि सरकार ने बाल मजदूरी पर प्रतिबंध लगा रखा है तथा बच्चों की पढ़ाई के लिए मुफ्त व्यवस्था भी कर रखी है। अतः उसने निश्चय किया कि वह इन बच्चों के लिए जरूर कुछ करेगी।

शाम को पापा के घर आने पर, वह उनके पास गई। पापा ने खूब प्यार करते हुए उससे पूछा, "क्यों श्रुति बिटिया! क्या कोई विशेष बात है ?"

"हाँ, पापा जी! आप मेरे लिए एक काम करेंगे ?"

"क्यों नहीं! मैं अपनी प्यारी बिटिया के लिए कुछ भी कर सकता हूँ", पापा ने कहा। श्रुति आगे बोली, "पापा जी! पास में वह जो झुग्गी-झोपड़ी है, इसके अधिकांश बच्चे पटाखे बनाने की फैक्ट्री में काम करते हैं। चूँकि बच्चों को मजदूरी काफी कम देनी पड़ती है, इसलिए फैक्ट्री का

मालिक केवल बच्चों को ही काम पर रखता है।" "लेकिन बच्चों से काम लेना तो अपराध है", पापा ने कहा। "हाँ पापा जी! मैं भी तो यही कहना चाहती हूँ। आप इन बच्चों के लिए कुछ करते क्यों नहीं? मेरी तरह उनकी भी तो खेलने और पढ़ने की उम्र है," श्रुति ने कहा।

पापा को अपनी बेटी की समझ पर गर्व हो आया। फैक्ट्री पर छापा मार कर, उन्होंने वहाँ काम कर रहे सभी बच्चों को मुक्त कराया तथा बालश्रम कानून के उल्लंघन में फैक्ट्री मालिक पर भी कार्यवाही कराई। इतना ही नहीं, उन्होंने समीप के सरकारी स्कूल में सभी बच्चों का दाखिला भी करा दिया। झुग्गी-झोपड़ी के सारे बच्चे खुशी-खुशी पढ़ने के लिए स्कूल जाने लगे। श्रुति की खुशी का कोई ठिकाना न था क्योंकि उसकी प्यारी सहेली अंजू स्कूल जो जाने लगी थी।

अभ्यास

शब्दार्थ-

मेधावी = बुद्धिमान ,आवास = घर

जोखिम = खतरा, प्रतिबंध = रोक

1. *बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -*

(*क*) *श्रुति के घर के आस-पास के गरीब लोग रोजी-रोटी के लिए क्या काम करते थे*?

(*ख*) *श्रुति की मम्मी ने अंजू की माँ को बार-बार क्या समझाया*?

(*ग*) *एक दिन श्रुति ने खेल-खेल में ही अंजू से क्या पूछा*?

(*घ*) *श्रुति ने शाम को पापा से किस काम के बारे में बात की*?

(ङ) *किस बात से श्रुति की खुशी का ठिकाना न रहा* ?

2. *नीचे लिखे शब्दों में से सही शब्द छाँटकर वाक्यों को पूरा कीजिए* -

(*साफ-सुथरी*, *पढ़-लिख*, *धमा-चैकड़ी*, *घुल-मिल*)

(*क*) *धीरे-धीरे वह श्रुति के साथ* .... *गई*।

(*ख*) *अंजू अब* .... *रहने लगी*।

(*ग*) *बच्चे गली-मोहल्ले में* .... *करते रहते हैं*।

(*घ*) *तुम भी* .... *कर खूब नाम कमाओ*।

3. *कथनों को कहानी के क्रम में लिखिए* -

- *धीरे-धीरे वह श्रुति के साथ घुल-मिल गई। अब दोनों साथ ही खेला करती थीं*।
- *अंजू उदास हो गई। उसने उत्तर दिया*, ''*हमारे पास इतने पैसे ही नहीं हैं कि माँ-बापू मुझे स्कूल भेज सकें*।
- *श्रुति जब स्कूल से वापस लौटकर आती*, *तो अंजू आस-पास खेल रही होती*।
- *मम्मी सोचतीं चलो अच्छा है श्रुति को खेलने के लिए एक सहेली तो मिल गई*।
- *एक दिन श्रुति ने खेल-खेल में उससे पूछा* - ''*अंजू! तुम स्कूल क्यों नहीं जाती* ?''

4. *सोच-विचार*: *बताइए* -

(*क*) *आप स्कूल क्यों जाते हैं* ?

(*ख*) *आप स्कूल जाते समय तैयार होने के लिए क्या-क्या करते हैं* ?

(*ग*) *स्कूल न जाने से क्या-क्या नुकसान हो सकते हैं* ?

(घ) *श्रुति के गाँव में अधिकांश परिवार मजदूरी पर निर्भर थे। आपके गाँव में अपना*

गुजारा करने के लिए लोग क्या-क्या करते हैं?

(ङ) श्रुति ने अपने आस-पास एक समस्या देखी और अपने बड़ों की मदद से इसका समाधान कर लिया।

- आपके आस-पास क्या समस्या है ?
- आप उसे कैसे और किसकी मदद से हल करेंगे ?

5. भाषा के रंग -

(क) नीचे लिखे शब्दों में 'खाना' व 'तम' में से सही प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाएँ -

जैसे: कार + खाना = कारखाना

अधिक + तम = अधिकतम

मुसाफिर + ... = ...

उच्च + ... = ...

मेहमान + ... = ...

तह + ... = ...

श्रेष्ठ + ... = ...

तोप + ... = ...

(ख) श्रुति अपनी कक्षा की मेधावी छात्रा थी। वह हमेशा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होती थी। उसके पिता पुलिस विभाग में अधिकारी थे।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'वह', 'उसके' शब्द का प्रयोग श्रुति के लिए किया गया है। एक ही संज्ञा के बार-बार प्रयोग के बजाय उसकी जगह कुछ खास शब्दों का प्रयोग

किया जाता है। ऐसे शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम का सही रूप प्रयोग कीजिए -

- *एक दिन श्रुति ने पूछा - अंजू! क्या ..... इच्छा नहीं होती कि पढ़-लिखकर खूब नाम कमाओ।* (*तुम*)
- *अंजू उदास हो गई ..... उत्तर दिया ......पास इतने पैसे ही नहीं हैं।* (*वह, मैं*)
- *श्रुति के पिता बोले - मैं .... प्यारी बिटिया के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।* (*वह*)
- *श्रुति की खुशी का कोई ठिकाना न था। ..... सहेली अंजू स्कूल जाने लगी।* (*वह*)

6. *अब करने की बारी -*

(*क*) *पोस्टर को देखिए और उत्तर दीजिए -*

किस बारे में जागरूक किया गया है-

- *पोस्टर एक में ....*
- *पोस्टर दो में .....*

(*ख*) *आप दूसरों को कैसे जागरूक करेंगे* ?

- *पोस्टर एक में लिखे संदेश के प्रति ......*
- *पोस्टर दो में लिखे संदेश के प्रति .....*

(ग) *अब आप भी पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाएं* -

- *वृक्षों के महत्त्व पर*
- *यातायात सुरक्षा पर*

7. *मेरे दो प्रश्न*: *पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

8. *इस पाठ से* -

(क) *मैंने सीखा* - .....

(ख) *मैं करूँगी/करूँगा* - ....

यह भी जानिए -

• ***बाल अधिकार*** - ***संविधान द्वारा बच्चों को प्रदत्त अधिकारों को बाल अधिकार कहा जाता है। इन्हें प्रमुख चार भागों में बाँटा गया है*** - 1. ***जीवन जीने का अधिकार***, 2. ***संरक्षण का अधिकार***, 3. ***सहभागिता का अधिकार***, 4. ***विकास का अधिकार***

• ***शिक्षा का अधिकार*** - ***हमारे देश में*** 6-14 ***आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षा अधिकार अधिनियम*** 2009 ***बनाया गया है। यह पूर देश में अप्रैल*** 2010 ***से लागू किया गया है।***

• ***बालश्रम उन्मूलन*** - 14 ***वर्ष से कम आयु के बच्चों को मजदूरी/काम पर रखना संज्ञेय अपराध की श्रेणी में आता है। बालश्रम अधिनियम*** (***निषेध एवं नियमन***) 1986, 14 ***साल से कम आयु के बच्चों का जीवन जोखिम में डालने वाले व्यवसायो जिन्हें कानून द्वारा निर्धारित की गई सूची में शामिल किया गया है***, ***में काम करने से रोकता है।***

20-चाचा का पत्र

तीन मूर्ति भवन नई दिल्ली

दिनांक 14.11.1960

मेरे प्यारे बच्चो!

मुझे तुम्हारे साथ रहना, तुम्हारे साथ हँसना-बोलना और तुम्हारे साथ खेलना बहुत पसंद है। मैं जब भी तुम्हें देखता हूँ, अपना बुढ़ापा भूल जाता हूँ। तुम्हें देखकर मुझे अपना बचपन याद आ जाता है।

मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी दुनिया में घुल-मिल जाऊँ।

मैं तुम्हें बर्फ से ढकी हुई ऊँची, सुंदर चोटियों के बारे में बताऊँगा। सुंदर खिले फूलों, लहलहाते हुए खेतों, फूल और फलों से लदे हुए पेड़ों, चमकते हुए सितारों, इन सब के बारे में बताऊँगा।

हमारे आस-पास कितनी प्राकृतिक सुंदरता है, पर बड़े लोगों को उसकी ओर ध्यान देने का समय ही नहीं है। तुम लोग आँख खोलकर, ध्यान देकर इन चीजों का आनंद लो। क्या किसी फूल को तुम उसके नाम से पहचान सकते हो ? क्या किसी पक्षी के गाने की आवाज से उसका नाम बता सकोगे ?

बहुत दिन हुए मैं यूरोप गया। जापानी बच्चों ने मुझसे एक हाथी माँगा। मैंने तुरंत भारतीय बच्चों की तरफ से उन्हें एक हाथी जलमार्ग से भेजा। वह हाथी मैसूर का था। वह जब टोकियो पहुँचा तो उसे देखने के लिए हजारों बच्चे पहुँचे। उनमें कई बच्चों ने इससे पहले कभी हाथी नहीं देखा था। वह प्राणी उनकी नजर में भारत का प्रतीक था।

उसके द्वारा भारतीय और जापानी बच्चों में मित्रता का भाव पनपा। वे भारत के बारे में विचार करने लगे। हमें भी अन्य देशों के बारे में सोचना चाहिए।

अपने देश में एक महान नेता हुए हैं। उनका नाम महात्मा गांधी है। हम सब प्यार से उन्हें 'बापू जी' कहते हैं। उन्हें बच्चे बहुत प्यारे लगते थे। वे कहते थे " सबके साथ दोस्ती करो, किसी से भी झगड़ो नहीं। सहयोग से काम करो।" हम देश के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। हर एक नागरिक यदि थोड़ा-सा भी काम करे तो भारत उन्नति के शिखर पर जरूर पहुँचेगा।

अच्छा, और कभी फिर लिखूँगा, जय हिंद।

तुम्हारा,

जवाहर लाल नेहरू

यह पत्र जवाहर लाल नेहरू ने अपने जन्म दिवस पर देश के बच्चों के नाम लिखा था। पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। बच्चे इन्हें प्यार से 'चाचा नेहरू' कहते थे।

अभ्यास

शब्दार्थ-

प्राकृतिक - प्रकृति द्वारा रचित, पनपना - उत्पन्न होना

यूरोप - सात महाद्वीपों में से एक महाद्वीप का नाम

प्रतीक - चिह्न ,उन्नति - तरक्की, प्रगति

जलमार्ग - नदी, समुद्र आदि में जलयानों के आने-जाने का रास्ता

शिखर - चोटी

1. ***बोध प्रश्न**: उत्तर लिखिए -*

(*क*) ***पत्र किसने और किसको लिखा है*** ?

(*ख*) ***पत्र में चाचा नेहरू बच्चों को क्या-क्या बताने की बात कर रहे हैं*** ?

(*ग*) ***चाचा नेहरू ने बच्चों को महात्मा गांधी की किन बातों के बारे में बताया है*** ?

(*घ*) ***पत्र की कौन-सी बात आपको सबसे अच्छी लगी*** ?

2. (*क*) ***आपको कौन-कौन व्यक्ति काम बताते हैं***? ***वे लोग आपको क्या-क्या काम बताते हैं***? ***नीचे दी गई तालिका में लिखिए -***

काम बताने वाले का नाम, ***क्या-क्या काम बताते हैं***?

....

(*ख*) ***नीचे बनी तालिका को भरिए-***

उन फूलों के नाम जिन्हें आप देखकर पहचानते हैं	उन पशु पक्षियों के नाम जिन्हें आप उनकी आवाज से पहचानते हैं	आस पास की वे आवाजें जिन्हें सुनकर आप पहचान लेते हैं
....	....	....
....	....	....
....	....	....

3. ***सोच-विचार**: बताइए -*

पत्र में चाचा नेहरू ने लिखा है- मैं तुम्हें बर्फ से ढकी हुई ऊँची, ***सुंदर चोटियों के बारे में बताऊँगा। सुंदर खिले फूलों***, ***लहलहाते हुए खेतों***, ***फूल और फलों से लदे हुए पेड़ों***, ***चमकते हुए सितारों***, ***इन सब के बारे में बताऊँगा। अगर आप चाचा नेहरू से मिलते तो उन्हें किन-किन चीजों के बारे में बताते*** ?

4. *अनुमान और कल्पना -*

(*क*) ***जापान के बच्चों ने नेहरू जी से हाथी की माँग की। आपको नेहरू जी से कुछ माँगना होता तो क्या माँगते और क्यों?***

(*ख*) ***जापान के बच्चों ने पहली बार हाथी देखा तो वे बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने घर पर हाथी के बारे में क्या-क्या बताया होगा?***

(*ग*) ***किसी बच्चे ने अपने किसी दोस्त को हाथी के बारे में पत्र लिखा होगा तो उसमें क्या-क्या लिखा होगा? पत्र लिखकर बताइए।***

5. ***भाषा के रंग -***

(क) नीचे की पहेली में कम से कम 15 महान विभूतियों के नाम छिपे हैं। खोजकर लिखिए -

गाँ	ग	गी	र	शि	वा	जी	गु	दी
म	हा	त्मा	गां	धी	ख	ड	रु	न
रा	भा	भ	ग	त	सिं	ह	ना	द
व	बु	रा	णा	प्र	ता	प	न	या
अ	ब्दु	ऊ	ध	म	सिं	ह	क	ल
भ्वे	सु	भा	ष	चं	द्र	बो	स	उ
द	अ	श	फा	क	उ	ल्ला	क	पा
क	स	रो	ज	नी	ना	य	डू	ध्या
र	रा	नी	दु	र्गा	व	ती	प	य
म	हा	रा	णी	ल	क्ष्मी	बा	ई	ह

इन महान विभूतियों के जीवन के बारे में अपने पुस्तकालय से जानकारी कीजिए।

(*ख*) ***नीचे दिए गए अंश को दो-तीन बार पढ़िए और इसमें आए हुए संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया शब्दों को छाँटकर लिखिए -***

मुझे तुम्हारे साथ रहना, तुम्हारे साथ हँसना-बोलना और तुम्हारे साथ खेलना बहुत पसंद है। मैं जब भी तुम्हें देखता हूँ, अपना बुढ़ापा भूल जाता हूँ। तुम्हें देखकर मुझे अपना बचपन याद आ जाता है।

- *संज्ञा शब्द*-.........................
- *सर्वनाम शब्द*- ....
- *क्रिया शब्द*- ....

6. *आपकी कलम से* -

मेले में जाने के संबंध में अपने दोस्त को एक पत्र लिखिए।

7. *अब करने की बारी* -

(*क*) *शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने शिक्षक को देने के लिए एक ग्रीटिंग कार्ड बनाइए।*

(*ख*) *पत्रों के नमूने इकट्ठा कीजिए- लिफाफा, पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र, निमंत्रण पत्र।*

(*ग*) *अपने गाँव/शहर का पिन कोड पता करके बॉक्स में लिखिए-*

(*घ*) *शिक्षक से इनके बारे में पता कीजिए और लिखिए कि ये पत्र कब लिखे/भेजे जाते हैं* -

निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, आवेदन पत्र, प्रार्थना पत्र, संवेदना पत्र।

8. *मेरे दो प्रश्न*: *पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

9. *इस पाठ से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

यह भी जानिए -

- प्राचीन समय में संदेश भेजने के लिए कबूतर, हरकारा का उपयोग किया जाता था। धीरे- धीरे इसका स्थान पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र, तार ने ले लिया। वर्तमान समय मंे तकनीकी विकास के कारण संदेश भेजना अब और सरल व सुगम हो गया है। कंप्यूटर और मोबाइल फोन के द्वारा इंटरनेट के माध्यम से शीघ्रता से संदेश भेजना संभव हुआ। इसके लिए कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन में तरह-तरह की सुविधाएँ (app) उपलब्ध हैं।

जैसेः- व्हाट्सएप, मैसेन्जर, हाइक, ट्विटर, फेसबुक आदि।

- पत्र को सही स्थान तक पहुँचाने के लिए पिनकोड नंबर का प्रयोग किया जाता है, यह छह अंकों का होता है।

21-सबसे उजला

सम्राट अकबर का दरबार लगा हुआ था। दरबार के आवश्यक कार्यों को पूर्ण करने के बाद अकबर ने दरबारियों से प्रष्न किया, ‘‘क्या आप बता सकते हैं कि दुनिया में सबसे उजला क्या है ?‘‘

दरबारी थोड़ी देर विचार करते रहे, फिर उनमें से एक ने कहा, ‘‘जहाँपनाह! दुनिया में सबसे उजली वस्तु रूई है।‘‘ एक अन्य दरबारी बोला, ‘‘दुनिया में सबसे उजली वस्तु दूध है।‘‘

फिर तो रूई और दूध दोनों में अधिक उजली वस्तु कौन सी है, इस पर जोरदार बहस होने लगी। यह देखकर बीरबल को हँसी आ गई। अकबर ने बीरबल को हँसते देखकर कहा, ‘‘बीरबल, तुम्हें हँसी क्यों आ रही है ? क्या तुम इस प्रश्न के बारे में कुछ कहना चाहते हो?

बीरबल ने कहा, ‘‘महाराज! मैं तो मानता हूँ कि दुनिया में प्रकाष सबसे अधिक उजला है।‘‘ अकबर ने कहा, ‘‘वह कैसे ? क्या तुम अपनी बात को सिद्ध कर सकते हो ?'' बीरबल ने कहा, ‘‘अवश्य, जब समय आएगा तब मैं इस बात को सिद्ध कर दूँगा।‘‘

कुछ दिनों के बाद बीरबल बादषाह से मिलने महल में गए। बादषाह सिर पकड़कर बैठे हुए थे। बीरबल ने पूछा, ‘‘क्या हुआ जहाँपनाह?‘‘ अकबर ने कहा, ‘‘मेरे सिर में बहुत दर्द है। इसलिए मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है।‘‘ बीरबल ने कहा, ‘‘कई बार अधिक प्रकाष में रहने के कारण ऐसा होता है। आप थोड़ी देर के लिए सिर पर कपड़ा बाँध कर सो जाइए। मंॅ इस कमरे के दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर देता

हूँ।“

अकबर सिर पर पड़ा बाँध कर सो गए। अकबर के सो जाने पर बीरबल ने कमरे में दरवाजे के पास रूई का ढेर लगा दिया। रूई के ढेर के पास ही एक पतीली में दूध भरकर रख दिया। खिड़की-दरवाजे बंद करने के बाद बीरबल कमरे के बाहर जाकर बैठ गए।

कमरे के सभी दरवाजे-खिड़कियाँ बंद होने के कारण कमरे में अँधेरा हो गया इसलिए अकबर को अच्छी नींद आ गई। जब वह जागे तो सिर दर्द हल्का हो गया था। वे कमरे से बाहर निकलने के लिए खड़े हुए। अँधेरे में दरवाजा खोजते-खोजते उनका पैर रूई के ढेर पर पड़ गया। वे वहाँ से कुछ हटकर जाने लगे तो दूध की पतीली से टकरा गए। जैसे-तैसे उन्होंने दरवाजा खोला। दरवाजे के पास रूई का ढेर और दूध की पतीली देखकर अकबर चैंक गए।

बाहर आकर अकबर ने बीरबल से पूछा, “*यह सब क्या तमाषा है बीरबल* ? *कमरे में रूई और दूध की पतीली क्यों रखवाई है* ?“

बीरबल ने कहा, “*जहाँपनाह! दरवाजा और खिड़कियाँ बंद करने से कमरे में अँधेरा हो गया था। आप अँधेरे में दरवाजा ठीक से देख सकें, इसलिए मैंने दो उजली वस्तुएँ आपके कमरे में रखवा दी थीं।*“

अकबर ने कहा, “*यह क्या बात हुई भला* ? *कोई वस्तु चाहे जितनी भी उजली हो पर जब तक उस पर प्रकाष नहीं पड़ता, तब तक उसे कैसे देखा जा सकता है* ?“

बीरबल ने कहा, “*जहाँपनाह! एक महीने पहले आपके प्रश्न के उत्तर में मैंने भी आपसे यही कहा था। तब आप मेरी बात नहीं मान रहे थे। अब आपको विष्वास हो गया न कि दुनिया में सबसे अधिक उजला प्रकाष ही है।*“

अभ्यास

शब्दार्थ-

दरबार = राजसभा ,विश्वास = भरोसा

जहाँपनाह = बादशाह के लिए संबोधन ,दरबारी = सभा का सदस्य

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) अकबर ने दरबारियों से क्या प्रश्न पूछा ?

(ख) उजली वस्तु के बारे में दरबारियों ने अकबर को क्या-क्या उत्तर दिए ?

(ग) दरबारियों के उत्तर सुनकर बीरबल को हँसी क्यों आ गई ?

(घ) अकबर के सिरदर्द को कम करने के लिए बीरबल ने क्या उपाय सुझाया ?

(ङ) बीरबल ने अपनी बात कैसे सिद्ध की ?

2. किसने किससे कहा ?

- "दुनिया की सबसे उजली वस्तु दूध है।"
- "महाराज! मैं तो मानता हूँ कि दुनिया में प्रकाश सबसे अधिक उजला है।"
- "कोई वस्तु चाहे जितनी उजली हो पर जब तक उस पर प्रकाश नहीं पड़ता, तब तक उसे कैसे देखा जा सकता है ?"
- कमरे में अँधेरा हो गया था। आप अँधेरे में दरवाजा ठीक से देख सकें, इसलिए मैंने दो उजली वस्तुएँ आपके कमरे में रखवा दी थीं।"

3. सोच-विचार: बताइए -

(क) अगर दो-तीन दिनों तक सूरज न दिखाई दे तो क्या-क्या कठिनाई होगी?

(ख) अँधेरा होने पर लोग उजाले के लिए क्या-क्या करते हैं ?

(ग) इस पाठ का शीर्षक है 'सबसे उजला', आप इस पाठ को क्या शीर्षक देंगे ?

4. भाषा के रंग -

(क) नीचे लिखे शब्दों को एक ही वाक्य में प्रयोग करके लिखिए -

जैसे - अँधेरा, दूध - अँधेरा होने पर मैंने दूध पिया।

- रुई, दरवाजा - ....
- पतीली, खोजते - ....
- दुनिया, काम - ....

(ख) कोष्ठक में दिए गए शब्दों के विलोम शब्द से वाक्य पूरा कीजिए -

(अविश्वास, भारी, पैर, प्रकाश)

- रात होते ही चारों ओर ....फैल जाता है।
- सिर दर्द होने पर बीरबल ने सलाह दी कि ... पर कपड़ा बाँधकर थोड़ी देर के लिए सो जाइए।
- थोड़ी देर सोने के बाद अकबर का सिर दर्द ...... हो गया।
- बीरबल की बात पर अंत में बादशाह को .... हो गया।

5. अब करने की बारी -

बीरबल की चतुराई के किस्से बहुत प्रसिद्ध हैं -

(क) आप भी एक ऐसा ही किस्सा ढूँढ़िए, जिसमें बीरबल अपने उत्तर से सबको आश्चर्य में डाल देते हैं।

(ख) बीरबल की तरह बहुत से अन्य व्यक्तियों की हाजिर-जवाबी के किस्से प्रसिद्ध

हैं? उनके नाम पता कीजिए।

(*ग*) *इस प्रसंग पर अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए।*

6. *मेरे दो प्रश्न*: *पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए* -

7. *इस कहानी से* -

(*क*) *मैंने सीखा* - ....

(*ख*) *मैं करूँगी/करूँगा* - ....

कितना सीखा-4

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(क) दहीबड़ा किस प्रकार बनाते हैं ?

(ख) मोहम्मद साहब ने लोगों को क्या शिक्षा दी ?

(ग) श्रुति को समझदार क्यों कहा गया है ?

(घ) बीरबल ने किस आधार पर प्रकाश को सबसे उजला बताया ?

(ङ) महात्मा गांधी लोगों से क्या कहते थे ?

2. कविता पंक्तियों को आगे बढ़ाइए -

डाली पर मुस्काते फूल,

कितना मन को भाते फूल।

....

3. नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -

(क) जो उचित-अनुचित का विवेक रखता हो- .....

(ख) जो पढ़ा-लिखा हो- ....

(ग) जो पढ़ा-लिखा न हो- ....

(घ) वाहनों को चलाने वाला- ....

4. दोनों शब्दों को मिलाकर लिखिए -

राजा का दरबार = ...

धन से हीन = ...

सेना का पति = ...

माखन को चुराने वाला = ...

वीरों की भूमि = ...

रस से भरा = ...

5. उपयुक्त शब्दों का चयन कर वाक्यों को पूरा कीजिए -

(मौसी, मित्र, चाचा, बहिन जी)

(क) प्रतिभा ने बूढ़े मोची से पूछा- ".......आप का घर कहाँ है?"

(ख) रीना ने रजिया से कहा- ".......आज खेलने का मन कर रहा है।"

(ग) विपिन ने अपनी माँ की बहिन को पुकारा, "..........यहाँ आइए।"

(घ) सुधा ने अपनी शिक्षिका से कहा- "......मैंने काम पूरा कर लिया है।"

6. उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

तरह तरह के चहचहाते पक्षी आसमान में उड़ते हुए अठखेलियाँ करते हैं रंग बिरंगी तितलियाँ खिले फूलों पर मँडराती दिखाई देती हैं

7. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कीजिए -

(क) मैदान में अनेकों बच्चे दौड़ रहे थे।

(ख) *एक पेंसिल का मूल्य सिर्फ दो रुपये मात्र है।*

(ग) *पेड़ों में पक्षी चहचहा रहे थे।*

(घ) *मैं ठीक समय पर पहुँच गया था; तो वह नहीं मिला।*

(ङ) *अभिषेक को अमजद ने पत्र लिखें।*

8. *अपने घर में मनाए गए किसी त्योहार के बारे में* 10 *बातें लिखिए।*

9. *कोई एक कहानी सुनाइए जो आपने अपने दादा-दादी अथवा नाना-नानी से सुनी हो।*

10. *याद की गई कोई कविता सुनाइए।*

अपने आप - 4

चित्र आधारित कथा लेखन

दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए। प्रत्येक चित्र के आधार पर एक-एक अनुच्छेद इस क्रम में लिखिए कि एक कहानी का रूप बनता जाए।

पुनरावृत्ति

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(क) प्रातः कालीन दृश्यों का वर्णन कीजिए।

(ख) 'बोलने वाली गुफा' कथा से हमें क्या सीख मिलती है ?

(ग) महात्मा गांधी पर 'श्रवण कुमार' की कथा तथा 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक का क्या प्रभाव पड़ा ?

(घ) महात्मा गांधी की 'आत्मकथा' की चार बातें लिखिए जो आपको अच्छी लगीं।

(ङ) 'हाँ में हाँ' लोक-कथा में किस बात की ओर संकेत किया गया है ?

(च) 'मलेथा की गूल' कहानी किस बात का जीता जागता उदाहरण है ?

(छ) झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों के लिए श्रुति ने क्या किया ?

(ज) अकबर के सो जाने पर बीरबल ने दरवाजे के पास रुई का ढेर और दूध से भरी पतीली को क्यों रख दिया था ?

2. सुनाइए -

(क) बाल गंगाधर तिलक और लाल बहादुर शास्त्री के प्रसिद्ध कथन।

(ख) वीर अभिमन्यु की कथा को अपने शब्दों में।

(ग) पाठ्य पुस्तक की कोई कविता हाव-भाव के साथ।

3. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) जहाँ ज्ञान तहँ धर्म है, जहाँ झूठ तहँ पाप।

जहाँ लोभ तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप।

(ख) बड़े बड़ाई न करैं, बड़े न बोलैं बोल।

रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल।

(ग) "परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर"।

(घ) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

4. निम्नांकित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए -

सपना, अमोल, बृच्छ, मोल, छिमा, हिरदै

5. (क) संज्ञा शब्दों को विशेषण (ख) विशेषण शब्दों को संज्ञा

शब्दों में बदलकर लिखिए- शब्दों में बदलकर लिखिए-

सरलता ....

अनुकरणीय ....

रोग ....

भला ....

सुख ....

कठोर ....

कल्पना ....

दयालु ....

नकल ....

स्वतंत्र ....

6. नीचे लिखे अव्यय शब्दों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए -

और, अब, वहाँ, किंतु, परंतु, यदि

7. नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

- हक्का-बक्का रह जाना। स घी के दिये जलाना।
- पानी-पानी होना। स दाँत खट्टे करना।

8. नीचे दिए गए उपसर्गों से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए -

प्र, वि, आ, अनु, सु

9. एक-एक वाक्य बनाइए जिसमें-

(क) विशेषण शब्द का प्रयोग हो।

(ख) क्रिया-विशेषण शब्द का प्रयोग हो।

(ग) सर्वनाम शब्द का प्रयोग हो।

(घ) अव्यय शब्द का प्रयोग हो।

10. ऐसे वाक्यों की रचना कीजिए जिनमें -

(क) प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग हो।

(ख) विस्मय बोधक चिह्न का प्रयोग हो।

(ग) *अल्प विराम तथा पूर्ण विराम-चिह्न का प्रयोग हो।*

(घ) *दोहरा अवतरण चिह्न का प्रयोग हो।*

11. *नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कीजिए -*

(क) *हिमालय के तलहटी में एक राजा बसता था।*

(ख) *मेरा विनती है कि आप यह विचार त्याग दें।*

(ग) *बच्चे कल शाम खेलते हैं।*

(घ) *बेर के फूल बहुत छोटा होता है।*

12. *अपने मित्र को किसी उत्सव में सम्मिलित होने के लिए पत्र लिखिए।*

13. *आठ पंक्तियों की कोई कविता लिखिए जो इस इस पाठ्य पुस्तक में न हो।*

14. *संक्षेप में वर्णन कीजिए, जब आप -*

(क) *किसी मेले में गए।*

(ख) *विघालय के किसी उत्सव में सम्मिलित हुए।*

(ग) *किसी रिश्तेदार के घर गए।*

15. *निम्नलिखित अंश में उचित विराम-चिह्न लगाइए -*

सरोज ने मामा से पूछा मामा हम कहाँ आए हैं मामा ने कहा यह सारनाथ है सरोज आश्चर्यचकित होकर बोली वाह कितनी सुंदर जगह है यहाँ का पार्क स्तूप भगवान गौतम बुद्ध की मूर्ति तथा सादगी देखने लायक है

16. *पर्यावरण की रक्षा में आज तक आपने क्या सहयोग दिया है ? संक्षेप में*

लिखिए।

17. *अपने स्कूल और आस-पड़ोस को साफ-सुथरा रखने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं*?

18. *निर्देश के अनुसार प्रश्न बनाइए* -

- *पाठ संख्या दो पर दो प्रश्न*
- *पाठ संख्या दस पर तीन प्रश्न*
- *पाठ संख्या सोलह पर चार प्रश्न*